मिश्र धातु निगम लिमिटेड
मिधानि
मिनी रत्न कंपनी

संकल्प

भारत के सुदृढ़ भविष्य की ओर

वर्ष-10 अंक – 21

अप्रैल ’18 – मार्च ’19

सागर की अतल गहराई से, आकाश तलक लहराते हैं।
हम भारत के धातुकर्मी, धातु से सोना बनाते हैं ।।

A Mini Ratna, ISO 9001:2015 & AS 9100C Company

मिशन

क्रांतिक मिश्रधातुओं , राष्ट्रीय सुरक्षा तथा सामरिक महत्व के उत्पादों के अनुसंधान, विकास, निर्माण और आपूर्ति में आत्मनिर्भरता हासिल करना है।

गुणवत्ता नीति

मिधानि सभी प्रयोज्य आवश्यकताओं को निरंतर पूरा करने वाले गुणवत्तायुक्त धातु और मिश्र धातु के उत्पाद उपलब्ध करेगा। मिधानि संगठन की कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए गुणवत्ता प्रबंधन प्रणाली की प्रभावशीलता में लगातार सुधार करके ग्राहकों की संतुष्टि को बढ़ाने के लिए प्रतिबद्ध है।

मिश्र धातु निगम लिमिटेड

भारत सरकार (रक्षा मंत्रालय) का उद्यम

राजभाषा गृह पत्रिका का वार्षिक अंक

संकल्प

वर्ष-10 अंक – 21 अप्रैल '18 – मार्च '19

प्रधान संरक्षक

डॉ दिनेश कुमार लेखी

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

संरक्षक

डॉ संजय कुमार झा

निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)

श्री संजीव सिंघल

निदेशक (वित्त)

सह संरक्षक

श्री रामकृष्ण राव

महाप्रबंधक (मानव संसाधन)

सलाहकार

श्री अरूण कुमार शर्मा

अपर महाप्रबंधक (पीपीसी)

मुख्य संपादक

डॉ बी बालाजी

उप प्रबंधक (हिंदी अनुभाग एवं निगम संचार)
तथा सदस्य-सचिव, राजभाषा कार्यान्वयन समिति

संपादन समिति

श्री एन के जैन, वरिष्ठ प्रबंधक (टाइटेनियम)
श्री अरिजीत बनर्जी, उप प्रबंधक (बोर्ड एवं कंपनी मामले)
श्री पी सुनील, सहायक प्रबंधक (पीपीडी)

अंक के चित्रकार

श्री अरिजीत बनर्जी, उप प्रबंधक (बोर्ड एवं कंपनी मामले)

संपादकीय संपर्क

डॉ बी बालाजी

सहायक प्रबंधक (राजभाषा) एवं मुख्य संपादक 'संकल्प'
मिश्र धातु निगम लिमिटेड, कंचनबाग, हैदराबाद-500 058
ई-मेलः b.balaji@midhani-india.in
फोनः 040-24184325, 4298 मोबा:8500920391

इस अंक में

शुभाशंसा 2

संपादकीयः- भाषा की सेवाःदेशी की सेवा 6

उपलब्धियाँ एवं गतिविधियाँ 7

अतिथि देवो भवः 17

आवरण कथा : मिधानि में मेरी यात्रा 19

- मिधानि की वजह से मेरा जीवन सफल व सुखी रहा
- मुझे गर्व है कि मैं आज मिधानि परिवार का हिस्सा हूँ
- मिधानि में अपने काम से बहुत प्यार करती हूँ
- प्रबंधन का सहयोग करता रहूँगा
- मिधानि प्रबंधन ने मेरी योग्यता के अनुसार काम सौंपा
- मिधानि प्रबंधन ज्ञानार्जन के लिए प्रोत्साहित करता है
- असीम संतोष का अनुभव

साक्षात्कार 27

- अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक

लेख 31

- स्वच्छ भारत अभियान
- उत्कृष्टता के नैतिक व आदर्शवादी उपाय
- सर्वसम्मति से स्वीकृत राष्ट्रभाषा है हिंदी
- हिंदी राष्ट्र की अभिव्यक्ति है
- हिंदी समस्त भारतवासियों की मातृभाषा है

काव्यांजली 16,19,20,24

- मिधानि गीत (हिंदी)
- मिधानि गीत (तेलुगु)
- प्यारी मिधानि
- मिधानि और मैं

कथांजली 37

- बान गंगा) बिहार की लोक कथा (
- बुढ़िया की सीख
- किसका मुख देखना अशुभ है ?
- माचिस की एक तिली
- हवाई सफर

शुभकामना-अक्षत 44

- आप कंपनी का ध्यान रखिएकंपनी आपका ध्यान रखेगी ,
- अनुसूचित जाति संघ के सचिव की शुभकामनाएं
- पिछड़ा वर्ग संघ के अध्यक्ष की शुभकामनाएँ

चित्र-दीर्घा : हिंदी दिवस प्रतियोगिताओं के विजेतागण 46

आवरण 1-मिधानि के उत्पदा
आवरण 2-मिधानि की मिशन व गुणता नीति
आवरण 3-मिधानि के स्वर्णिम भविष्य के निर्मातागण के चित्र
आवरण 4-मिधानि का कार्यक्षेत्र

'संकल्प' पत्रिका केवल आंतरिक वितरण एवं राजभाषा के प्रचार-प्रसार के लिए निःशुल्क है। पत्रिका में प्रकाशित विचार लेखकों के अपने हैं। यह आवश्यक नहीं कि संपादन समिति या मिधानि प्रबंधन की उनसे सहमति हो। - मुख्य संपादक

शुभाशंसा

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
कंचनबाग, हैदराबाद-500 058
फोन नं.-040-24184501
ई-मेलः cmd@midhani-india.in

प्रधान संरक्षक की कलम से....

नमस्कार मित्रो,
सर्व प्रथम, मिधानि के 45 वर्ष पूर्ण होने के शुभ अवसर पर आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएँ। आपके सामूहिक प्रयासों के कारण ही मिधानि अपने 45वें पड़ाव पर पहुंची है।

हिंदी राष्ट्र की बहुभाषिकता को एक सूत्र में पिरोने का कार्य बड़ी आसानी से कर सकती है। हिंदी की संप्रेषणीयता तेजी से बढ़ रही है। यह भारत की आम जनता की बोली है। यह भविष्य में विदेशों के साथ भी संप्रेषण का माध्यम बन सकती है। संविधान की आठवीं अनुसूची के अनुसार देश की 22 राष्ट्रीय भाषाएं हैं। हिंदी उनमें से एक है। हिंदी देश की राजभाषा भी है। इस रूप में हिंदी पर दोहरी जम्मेदारी है। देश की राजभाषा में काम करना हमारा संवैधानिक दायित्व है। मिधानि में इसके प्रचार-प्रसार के लिए अनुकूल वातावरण तैयार किया गया है। मिधानि पूरी निष्ठा के साथ राजभाषा संबंधी राष्ट्रपति के आदेशों का अनुपालन करती है। राजाभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करने के लिए मिधानि द्वारा पूरी ईमानदारी से प्रयास किया जाता है।

राष्ट्रीयता की पहचान के रूप में हिंदी सदियों से एक प्रतीक बनी हुई है। यह आम जनता के साथ जुड़ने का एक सशक्त माध्यम है। यह भावनाओं से जुड़ी भाषा है। हिंदी के लचीलेपन में जो अनोखापन है वह अन्यत्र कहीं नहीं। हमें सांस्कृतिक आदान-प्रदान में भी लचीला होने की आवश्यकता है। यह कार्य हिंदी से संभव हो सकता है। सांस्कृतिक आदान-प्रदान से भारतीय भाषाओं का साझा विकास होगा।

सरकारी कार्यालयों में राजभाषा का प्रचार-प्रसार तो हो रहा है, लेकिन इसमें तेजी लाने की आवश्यकता है जिसके लिए पारंपरिक पद्धतियों के साथ-साथ नवोन्मेषी पद्धतियों का उपयोग किया जाना चाहिए। आज भारत डिजिटल होता जा रहा है। माननीय प्रधान मंत्री ने " डिजिटल इंडिया " की योजना के तहत पूरे राष्ट्र का आह्वान किया है कि देश का हर एक काम डिजिटल रूप में करें। इससे पारदर्शिता में वृद्धि होगी। मिधानि का अधिकतर लेनदेन डिजिटल रूप में किया जाता है। इस क्षेत्र में हिंदी विभाग ने भी कदम बढ़ाए हैं। इस अंक से राजभाषा गृह पत्रिका " संकल्प" का प्रकाशन डिजिटल रूप में किया जा रहा है। इस कार्य के लिए हिंदी विभाग को हार्दिक शुभकामनाएँ!

मुझे 'संकल्प' के माध्यम से आप सबसे बात करते हुए बड़ी प्रसन्नता हो रही है। आप सबकी भविष्य की योजनाएं मूर्त रूप धारण करें, कंपनी नई ऊंचाइयों छुएं, इसी कामना के साथ।

जय हिंद ! जय हिंदी!!

डॉ दिनेश कुमार लेखी

निदेशक (उत्पादन एवं विपणन)
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
कंचनबाग, हैदराबाद-500 058
फोन नं.-040-24184242
ई-मेलः dpm@midhani-india.in

संरक्षक की कलम से....

नमस्कार साथियो,

सर्व प्रथम, मिधानि द्वारा 45 वर्ष पूरे करने के उपलक्ष्य में आप सब को बधाई। यह कहते हुए मुझे बड़ी प्रसन्नता हो रही है कि मिधानि ने अपने 45 वर्षों की यात्रा अपनी कड़ी मेहनत और समझदारी के साथ पूरी की है।

भारत की अधिकतर जनता अपने विचारों का आदान-प्रदान हिंदी में करती है। बोलचाल की भाषा के रूप में हिंदी का बड़ी तेजी से विकास हुआ है। इसका मुख्य कारण इस भाषा का लचीलापन। हिंदी देशी और विदेशी भाषाओं के शब्दों को आत्मसात करने में देरी नहीं करती। इंटरनेट पर कई ब्लॉग हिंदी में लिखे जा रहे हैं। हिंदी में बहुत-सी ई-पत्रिकाएँ भी प्रकाशित हो रही हैं। इंटरनेट पर आज अनेक विषयों पर हिंदी में सामग्री मिल जाती है।

इस तथ्य को हर्ष के साथ स्वीकार किया जाना चाहिए कि भारत में व्यापक जन समूह को संबोधित करने का एकमात्र सशक्त माध्यम हिंदी ही है। इसका डिजिटल रूप में भी स्वागत हो रहा है। माननीय प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के मार्गदर्शन में भारत " डिजिटल इंडिया " के रूप में परिवर्तित हो रहा है। मिधानि भी इस कार्य में राष्ट्र का सहयोग कर रही है। मिधानि का अधिकतर कामकाज ईआरपी के माध्यम से " डिजिटल " रूप में होता है।

राजभाषा के रूप में भी हिंदी आगे बढ़ रही है। मिधानि में इसके प्रचार-प्रसार के लिए हर संभव प्रयास किया जाता है। हिंदी के प्रचार-प्रसार को डिजिटल रूप प्रदान करने के उद्देश्य से ही मिधानि की राजभाषा गृह पत्रिका " संकल्प" का इस अंक से डिजिटल रूप में प्रकाशन किया जा रहा है। हिंदी विभाग को इस महत्वपूर्ण कार्य के लिए बहुत-बहुत बधाई!

जय हिंद ! जय हिंदी!!

डॉ संजय कुमार झा

निदेशक (वित्त)
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
कंचनबाग, हैदराबाद-500 058
फोन नं.-040-24184519
ई-मेलः df@midhani-india.in

संरक्षक की कलम से....

प्रिय साथियो,

मिधानि के 45 वर्ष के पड़ाव पर पहुंचने के हम सब साक्षी हैं बने हैं। हम सबके लिए यह बड़े ही प्रसन्नता का क्षण है। आप सभी को बहुत-बहुत शुभकामनाएं।

भारत में हुए जनगणना के आधार पर यह तथ्य सामने आए हैं कि पिछले कुछ वर्षों में हिंदी संपर्क भाषा के रूप में बहुत विकसित हुई है। भारतवासियों में हिंदी के प्रति रुचि बढ़ी है। बोलचाल की भाषा के रूप में अन्यभाषियों के मन में हिंदी ने अपनी जगह बनाने में सफलता पाई है। सरकारी कार्यालयो में भी हिंदी की जगह बनती जा रही है। किंतु इसे पूरी तरह स्थापित करने के लिए दृढ़ इच्छाशक्ति की अत्यंत आवश्यकता है।

हिंदी की लोकप्रियता बढ़ाने में मनोरंजन क्षेत्र, विशेष कर हिंदी फिल्मों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। छोटे परदे पर प्रसारित होने वाले हिंदी दैनिक धारावाहिकों से हिंदी देश-विदेश में प्रसारित हुई है। विश्वभर में हिंदी लोकप्रिय भाषा के रूप में अग्रसर हो रही है ।

मिधानि में हिंदी के प्रचार-प्रसार में हिंदी विभाग महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहा है। इस कार्य को आगे बढ़ाते हुए हिंदी विभाग ने मिधानि की राजभाषा गृह पत्रिका “ संकल्प ” को डिजिटल रूप देने का विचार किया और प्रबंधन ने भी इसे सहर्ष स्वीकार किया। इसी का प्रतिफल है मिधानि का “ डिजिटल संकल्प” । हिंदी के प्रसार के लिए उठाए गए नए कदम और “ संकल्प ” को डिजिटल रूप में प्रकाशित करने के लिए हिंदी विभाग को मेरी ओर से शुभकामनाएँ।

जय हिंद ! जय हिंदी!!

संजीव सिंघल

मुख्य सतर्कता अधिकारी
मिश्र धातु निगम लिमिटेड
कंचनबाग, हैदराबाद-500 058
फोन नं.-040-24184538
ई-मेलः cvo@midhani-india.in

मुख्य सतर्कता अधिकारी का शुभकामना संदेश

मिधानि के सभी सदस्यों को नमस्कार!

यह बड़ी खुशी की बात है कि मिधानि ने अपने उत्पादन के 45 वर्ष सफलता पूर्वक पूरे किए हैं। 45 वर्षों की अवधि छोटी नहीं होती है। किसी भी संस्था के लिए यह गर्व का क्षण होता है। इस अवसर पर मैं व्यक्तिशः मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ दिनेश कुमार लेखी, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) डॉ संजय कुमार झा, निदेशक (वित्त) श्री संजीव सिंघल तथा सभी अधिकारियों एवं कर्मचारियों को शुभकामनाएँ देता हूँ।

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हुई कि मिधानि द्वारा " संकल्प " के नाम से राजभाषा गृह पत्रिका का नियमित अवधि पर प्रकाशन किया जाता है। यह भी हर्ष विषय है कि इस अंक से मिधानि का " संकल्प " हमारे सामने डिजिटल रूप में आ रहा है।

देशभर में सरकारी काम-काज की भाषा के रूप में हिंदी की संभावनाएं बढ़ने लगी हैं। लेकिन अभी मंजिल दूर है। हिंदी को राजभाषा के रूप में क्रियान्वित करने के लिए ठोस प्रयासों की आवश्यकता है। सरकारी कामकाज में अंग्रेजी की जगह हिंदी को लाना कठिन अवश्य हो सकता है किंतु असंभव नहीं। मिधानि में हिंदी के लिए अनुकूल महौल बनाए रखने का निरंतर प्रयास किया जाता है। पिछले कुछ वर्षों से कार्यालय में हिंदी के संबंध में सकारात्मक बदलाव देखने को मिल रहा है। इसका श्रेय अवश्य मिधानि के प्रबंधन और हिंदी विभाग को दिया जाना चाहिए।

मुझे यह भी ज्ञात हुआ है कि राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार के निदेशों का अनुपालन करते हुए हिंदी के प्रचार-प्रसार में तेजी लाने के लिए मिधानि का प्रबंधन अपने कर्मचारियों के लिए निर्धारित समय पर हिंदी भाषा प्रशिक्षण एवं हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन करता रहता है। हिंदी दिवस, विश्व हिंदी दिवस आदि के अवसरों पर कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है और प्रतियोगिताओं में विजेताओं को नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया जाता है। मैं, इन सभी कार्यों के लिए विशेषकर राजभाषा गृह पत्रिका " संकल्प " के डिजिटल रूप में प्रकाशन के लिए मिधानि के प्रबंधन को बधाई देता हूँ और भावी योजनाओं के लिए शुभकामनाएं प्रेषित करता हूं।

जय हिंद ! जय हिंदी!!

मुजीब पाषा षेक, आई टी एस

MIDHANI

भाषा की सेवा : देश की सेवा

'राष्ट्रीय सुरक्षा एवं सामरिक महत्व के क्षेत्रों के लिए क्रांतिक मिश्र धातुओं एवं उत्पादों के अनुसंधान, विकास, निर्माण तथा आपूर्ति के क्षेत्र में आत्मनिर्भरता हासिल करने' के अपने मिशन के अनुरूप कार्य करते हुए मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि) ने अपनी उन्नति के 45 वर्ष पूरे किए है। भारत के सामरिक व अंतरिक्ष अनुसंधान की परियोजनाओं को साकार रूप देने में मिधानि ने अबतक अपनी भूमिका बखूबी निभाई है और आने वाले समय में इससे भी बढ़िया कार्य करने के लिए पूरे आत्मविश्वस के साथ कटिबद्ध है। मिधानि ने इन 45 वर्षों में अद्वितीय उपलब्धियाँ हासिल की हैं। इस उपक्रम का जन्म ऐसे समय में हुआ जब रक्षा अनुसंधान के लिए विशेष मिश्र धातुओं की आपूर्ति त्वरित और देशीकृत करने की अत्यधिक आवश्यकता महसूस की गई। यह उपक्रम विगत 45 वर्षों से राष्ट्र की सेवा में पूर्ण समर्पण के साथ लगा हुआ है। इस महत्वपूर्ण उपलब्धि के लिए मिधानि के प्रत्येक श्रमिक, कर्मचारी एवं अधिकारीगणों को कोटि-कोटि नमन। 'संकल्प' प्रकाशन समिति इस अवसर पर सभी मिधानियों को शुभकामनाएँ प्रेषित करती है। यह उपक्रम आपके कर कमलों की परिश्रम के अनुरूप उन्नति के शिखर पर आसीन हो......। तथास्तु!

14 सितंबर, हिंदी दिवस, हिंदी कर्मियों में नया जोश भर देता है। यह एक राष्ट्रीय पर्व है। यह तारीख, राष्ट्रहित के एक विशेष विजन एवं मिशन की याद दिलानेवाली तारीख है। इसी तारीख को कार्यालयीन हिंदी ने राजभाषा के नाम से जन्म लिया था। इसी तारीख को हिंदी की एक प्रयुक्ति विकसित होने की संभावनाएं प्रकट हुई थीं। नए रोजगार सृजित होने के रास्ते खुले थे। हिंदी दिवस के अवसर पर केंद्र सरकार के कार्यालयों में कार्यरत हिंदी कर्मियों द्वारा एक अद्भुत समारोह का आयोजन किया जाता है। सरकारी कर्मचारियों और सामान्य जन को कार्यालयीन हिंदी के प्रति आकर्षित करने के लिए हिंदी दिवस समारोह एक विशिष्ट आयोजन का दर्जा पाता है। हिंदी भाषा ने देश-विदेश में भारतीय संस्कृति का प्रसार करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस कार्य में तेजी लाने के लिए अनुकूल वातावरण का निर्माण करने में हिंदी दिवस प्रेरक तत्व का कार्य करता है। भारत की मिट्टी से खाद-पानी ग्रहण करके हिंदी ने सामासिक संस्कृति को विकसित करने का चरित्र पाया है। भारत की सामासिकता के निर्माण के लिए, उसे बनाए रखने के लिए और उसे अगली पीढ़ी को हस्तांतरित करने के लिए हिंदी के रूप में हमारे पास एक सशक्त माध्यम है।

दक्षिण अफ्रीका की एक आदिवासी जाति का एक मिथक है कि यह जाति पानी बरसाने के लिए नृत्य करती है। नृत्य तब तक चलता रहता है जब तक कि पानी न बरस जाए। उस जाति के मुखिया का कहना है कि यह कोई मिथक नहीं है बल्कि यह उनका अगाध और अटूट विश्वास है। भारत में पानी बरसाने के लिए हवन किया जाता है। सूखे के समय इस संबंध में समाचार देखने-सुनने को मिलते हैं। पानी बरसाने की ये दोनों रीतियां आज के तकनीकि और वैज्ञानिक युग में भी जारी हैं और इनसे अपेक्षित परिणाम भी प्राप्त हुए हैं। इन दोनों ही अनुष्ठानों से राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार व कार्यान्वयन के लिए हिंदी अधिकारी व हिंदी विभाग द्वारा किए जानेवोले कार्यों की तुलना की जा सकती है। कार्यालय में राजभाषा कार्यान्वयन के लिए कर्मचारियों को बार-बार याद दिलाते रहना पानी बरसाने के लिए दक्षिण अफ्रीका की आदिवासी जाति द्वारा नृत्य करने के समान है। कार्यान्वयन से जुड़े प्रशासनिक कार्य सुचारु रूप से संपन्न करना भारतीय मनीषियों द्वारा पानी बरसाने के लिए हवन करने जैसा पवित्र कार्य है। पवित्र कार्य की भावना से ही हिंदी कर्मी भाषा की सेवा में लगे हुए हैं। भाषा की सेवा देश की सेवा ही तो है। सैनिकों की भांति यह भी देश रक्षा है। अतः यदि यह कहा जाए कि हिंदी कर्मियों के आत्मविश्वास और स्वावलंबन के बल पर ही देश और कार्यालयों में राजभाषा हिंदी लोकप्रिय भाषा का दर्जा पा सकती है तो कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। इसमें राष्ट्र प्रशासन और कार्यालय प्रबंधन से सहयोग व मार्गदर्शन की अत्यंत आवश्यकता होती है।

इस वर्ष सितंबर माह में हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में मिधानि में हिंदी मासोत्सव मनाया गया। कर्मचारियों के लिए विभिन्न प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं और विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। हिंदी के प्रचार-प्रसार के लिए मिधानि प्रबंधन द्वारा किया गया यह प्रयास प्रबंधन की हिंदी के प्रति सकारात्मक सोच का परिचायक है। हिंदी माह के दौरान कर्मचारियों में हिंदी के माध्यम से 'एक ध्येय-एक विचार' की संस्कृति को विकसित करने का प्रयास किया गया।

मिधानि ने अपने अद्भुत परिश्रम से 45 वर्ष का पड़ाव पार करने का कीर्तिमान स्थापित किया है। यह सही अवसर है यह घोषित करने का कि इस अंक से 'संकल्प' राजभाषा गृह पत्रिका डिजिटल रूप में प्रकाशित होगी। मिधानि प्रबंधन द्वारा यह पत्रिका 2003 से निरंतर प्रकाशित की जा रही है। पत्रिका-समिति का अथक प्रयास है कि 'संकल्प' ने 15 वर्षों की लंबी यात्रा तय की है। इस दौरान इसने विभिन्न सोपान पार किए हैं। पत्रिका की पूर्व संपादन समिति एवं संपादकों के प्रति आभार। उन्होंने पत्रिका को सुंदर और पठनीय बनाए रखने में महत्वपूर्ण कार्य किया है। इस नवीनतम अंक में संगठन के विशिष्ट क्रिया-कलाप, उपलब्धियाँ, अधिकारियों के मिधानि के साथ जुड़े संस्मरण और कर्मचारियों द्वारा रचित रचनाओं को अंकित किया गया है। सभी सहयोगियों को धन्यवाद। आशा है, डिजिटल रूप में भी मिधानि का यह 'संकल्प' कर्मचारियों को आपस में जोड़ने और भाषा के महत्व को बढ़ाने का कार्य सफलतापूर्वक करता रहेगा।

संपादक

एस एस बी को 15 बुलेट प्रूफ वाहनों की सुपुर्दगी

30 मार्च को सीएपीएफ को पंद्रह बुलेट प्रूफ वाहनों का हस्तांतरण किया गाय। बीहड़ इलाके में गतिशीलता बैलिस्टिक परीक्षण के बाद मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ दिनेश कुमार लेखी द्वारा सशस्त्र सीमा बल (एस एस बी) के उप कमांडण्ट श्री जेके शर्मा को पंद्रह बुलेट प्रूफ वाहन सौंपे गए। इस अवसर पर अपने विचार व्यक्त करते हुए सीएपीएफ अधिकारी श्री जेके शर्मा, डिप्टी कमांडेंट ने मिधानि के योगदान की प्रशंसा की। उन्होंने सीएपीएफ के लिए विश्वसनीय और लागत प्रभावी आर्मरिंग उत्पाद उपलब्ध कराने के लिए मिधानि प्रबंधन को इस क्षेत्र में उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाएँ दी। उन्होंने बदलते सुरक्षा परिवेश और तकनीकी जरूरतों के कारण मिधानि द्वारा सभी चुनौतियों को पूरा करने और सीएपीएफ की आवश्यकताओं के अनुसार सर्वोत्तम समाधान प्रदान करने की मिधानि की क्षमता पर पूरा भरोसा जताया।

अंतर राष्ट्रीय महिला दिवस

8 मार्च को मिधानि में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस का आयोजन किया गया। अवसर पर उद्यम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ दिनेश कुमार लेखी ने महिला कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि महिलाएँ पूरी जिम्मेदारी के साथ काम करती हैं चाहे घर में हो या कार्यालय में। इसीलिए उन्हें आत्मनिर्भर और आत्मविश्वास से भरे होना चाहिए। इस अवसर पर निदेशक (उ. एवं वि.) डॉ संजय कुमार झा तथा निदेशक (वित्त) संजीव सिंघल ने भी विचार व्यक्त किए। इस अवसर पर महिला कर्मचारियों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। मिधानि में कार्यरत महिला कर्मचारियों ने मिधानि प्रबंधन द्वारा उनके लिए उपलब्ध कराई जा रही सुविधाओं के प्रति अपनी कृतज्ञता ज्ञापित की।

राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह

दि. 04 से 10 मार्च तक उद्यम में राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह का आयोजन किया गया। इस दौरान औद्योगिक दुर्घटनाओं से बचने और संरक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के प्रति कर्मचारियों में जागरूकता के उद्देश्य से

विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। समापन कार्यक्रम में उद्यम के निदेशक (उ. एवं वि.) डॉ संजय कुमार झा ने उच्च अधिकारियों एवं कर्मचारियों को संबोधित किया और संरक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण के महत्व पर अपने विचार प्रस्तुत किए। राष्ट्रीय संरक्षा सप्ताह का उद्घाटन करते हुए मानव संसाधन विभाग के महाप्रबंधक रामकृष्ण राव ने संरक्षा दिवस के महत्व पर प्रकाश डाला और कर्मचारियों से अपील की कि काम के दौरान संरक्षा उपायों का ध्यान रखें। संरक्षा, स्वास्थ्य एवं पर्यावरण संबंधी पोस्टर लगवाए गए। प्रशिक्षण के दौरान कर्मचारियों को मशीन उठाने, इलेक्ट्रिकल संरक्षा, जोखिम के समय किए जाने वाले कार्य तथा अग्नि नियंत्रण व दुर्घटनाओं से बचाव के तकनीक से अवगत कराया गया। अवसर पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया और विजयी कर्मचारियों को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

राष्ट्रीय उत्पादकता सप्ताह

दि.12 से 18 फरवरी तक उद्यम में राष्ट्रीय सप्ताह का आयोजन किया गया। इस वर्ष **"उत्पादकता और स्थिरता के लिए चक्रीय अर्थव्यवस्था"** विषय रखा गया था। राष्ट्रीय उत्पादकता परिषद, हैदराबाद के सहयोग से विषय पर केंद्रित उद्यम के कर्मचारियों के लिए निबंध एवं स्लोगन लेखन और बीपीडीएवी स्कूल के छात्रों के लिए पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गाया। कार्यपालकों के लिए उत्पादकता से संबंधित तकनीकी विषय पर पीपीटी प्रतियोगिता का और विशेष वार्ता का भी आयोजन किया गया। इसके अलावा सभी कर्मचारियों के लिए विषय से संबंधित एक दिन का प्रशिक्षण कार्याक्रम आयोजित किया गया। सप्ताह के सामापन पर प्रतियोगिताओं में विजयी कर्मचारियों व छात्रों को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

एयरो इंडिया में सहभागित

दि.20 से 24 फरवरी को मिधानि ने बैंगलूरू में संपन्न एयरो इंडिया में भाग लिया जहाँ एमएमटीसी सिंगापुर के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए गए। ज्ञापन के अनुसार मिधानि द्वारा विनिर्मित उत्पादों एवं अलॉय्स के लिए एमएमटीसी सिंगापुर विश्व बाजार का विकास करने में सहयोग करेगा।

गणतंत्र दिवस

26 जनवरी को मिधानि में 70 वें गणतंत्र दिवस का आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर उद्यम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ दिनेश कुमार लेखी ने ध्वजा रोहण किया और कर्मचारियों को संबोधित किया। उन्होंने कहा कि देश की अंखण्डता और स्वतंत्रता बनाए रखने के लिए मिधानि के प्रत्येक कर्मचारी प्रयास करें। अपने कार्यों से देश की प्रगति में योगदान दें। मिधानि के लक्ष्य राष्ट्र की प्रगति में अवश्य महत्वपूर्ण भूमिका निभाएंगे। अवसर पर उद्यम के कर्मचारियों को उत्कृष्ट कर्मचारी पुरस्कार तथा बी पी डी ए वी स्कूल के छात्रों को अकादमिक क्षेत्र में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। टीएसपीएफ के जवानों ने परेड किया व गार्ड ऑफ ऑनर दिया।

जॉय ऑफ गिविंग कार्यक्रम का आयोजन

राष्ट्र के लिए नए विकास मॉडल के संबंध में डीपीई को दिए गए आश्वासन का अनुपालन करते हुए **24** जनवरी को मिधानि द्वारा "ठाकुर हरि प्रसाद इंस्टीट्यूट ऑफ रिसर्च एंड रिहैबिलिटेशन फॉर द मेंटली हैंडीकैप्ड (टीएचपीआई)" में "जॉय ऑफ गिविंग" के तहत सीएसआर पहल के रूप में संस्थान में पढ़ रहे बौद्धिक रूप से अक्षम बच्चों के लिए शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन उद्यम के महाप्रबंधक (मानव संसाधन) ए रामकृष्ण राव ने किया। उन्होंने उपस्थित सदस्यों को संबोधित करते हुए कहा कि टीएचपीआई संस्था बौद्धिक रूप से कमजोर बच्चों के उत्थान के लिए बहुत अच्छा काम रही है। मिधानि भी इस काम में उनका साथ दे रही है। पूर्व में मिधानि द्वारा इन बच्चों के आवागमन की सुविधा के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन की गई बस प्रायोजित की गई थी और आज इन बच्चों में खुशियाँ बाँटने के उद्देश्य से "जॉय ऑफ गिविंग" कार्यक्रम का आयोजन किया जा रहा है। उन्होंने अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने वाले बच्चों और उन्हें प्रशिक्षित करने वाले शिक्षकों व कर्मचारियों के प्रयासों की सरहाना की। अवसर पर टीएचपीआई के अध्यक्ष विजय प्रसाद ठाकुर तथा महानिदेशक प्रो. टी रेवती ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम का प्राथमिक उद्देश्य संस्थान में पढ़ रहे बच्चों में खुशी फैलाना रहा। इस अवसर पर खेल-कूद, चित्रकला, फैंसी ड्रेस आदि प्रतियोगिताओं का तथा मिमिक्री शो, मैजिक शो और सांस्कृतिक नृत्य आयोजित किए गए। बच्चों ने इन सभी कार्यक्रमों में सक्रिय रूप से भाग लिया और वातारण को पूरी तरह से आनंदमय बना दिया। बच्चों की प्रतिभा को प्रोत्साहित करने के लिए उपहार दिए गए।

ट्यूबासेक्स के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर

17 जनवरी को मिधानि ने ट्यूबासेक्स के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। इस समझौते से मिधानि की विशेष धातुओं और मिश्र धातुओं के निर्माण की महारत में बढ़ोत्तरी होकर यह विश्वस्तरीय कंपनी बन सकती है। ट्यूबासेक्स उच्च स्टेनलेस स्टील के विनिर्माण की विश्व की अग्रणी कंपनियों में शुमार है। यह मिश्र धातु वाले ट्यूबलर के उत्पादों की एक बहुराष्ट्रीय समूह है। इसका मुख्यालय अलवा, स्पेन में स्थित है। धातु निर्माण की इन दोनों विशिष्ट कंपनियों के बीच विद्युत उत्पादन, तेल व गैस अनुप्रयोगों के लिए पूरक विनिर्माण की अपनी प्रौद्योगिकी के आधार पर संयुक्त रूप से भारत और अन्य क्षेत्रों के लिए संभाव्य व्यवसाय और विश्लेषण करने के उद्देश्य से एक सहयोगी व्यापार मॉडल तैयार करने समझौता ज्ञापन (एमओयू) पर हस्ताक्षर किए गए।   इस संझौते से ऊर्जा क्षेत्र के लिए उन्नत सामग्रियों का संयुक्त विकास करना, तकनीकी गठबंधनों पर विचार करना और स्थानीय विनिर्माण क्षमताओं को बढ़ावा देना संभव होगा। उक्त ज्ञापन पर डॉ देनश कुमार लेखी, अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, मिधानि तथा जिजस एस्मोरिस, सीईओ, ट्यूबासेक्स ने हस्ताक्षर किए।

विश्व हिंदी दिवस का आयोजन

10 जनवरी को उद्यम के निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) डॉ संजय कुमार झा की अध्यक्षता में " विश्व हिंदी दिवस समारोह – 2019 " के उपलक्ष्य में भव्यस्तर पर 'सांस्कृतिक कार्यक्रम' का आयोजन संपन्न हुआ। अवसर पर मिधानि के कर्मचारियों और उनके बच्चों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया। समारोह में मिधानि के कर्मचारीगण अपने परिवार के साथ शामिल होकर सांस्कृतिक कार्यक्रम का आनंद उठाया और हिंदी के प्रचार-प्रसार में अपनी सक्रिय भागीदारी का आश्वासन दिया। इस अवसर पर ए आर सी आई के वैज्ञानिक डॉ पीके जैन मुख्य अतिथि के रूप में अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। कार्यक्रम के आरंभ में उद्यम के वरिष्ठ प्रबंधक (टाइटेनियम) निशांक कुमार जैन ने उपस्थित जनसमूह का स्वागत करते हुए विश्व हिंदी दिवस के इतिहास और आयोजन के उद्देश्य पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर मिधानि के उच्च अधिकारीगण, डीएवी स्कूल के प्राध्यापकगण, डीआरडीएल व आरसीआई के हिंदी अधिकारी व कर्मी उपस्थिति रहे। सांस्कृतिक कार्यक्रम के अंतर्गत मिधानि के कर्मचारियों और बच्चों ने अपनी कला का प्रदर्शन किया जिसमें कुमारी श्राव्या, पिता ए देववीर श्रीनिवास, कनिष्ठ सहायक-ए (विपणन); कुश वारद एवं हेताली वारद, पिता प्रवीण एस वारद, उ.म.प्र. (बार एवं वायर, आऊट सोर्सिंग) ; के सुरेखा, कनिष्ठ सहायक-ए (क्यूसीएल) द्वारा नृत्यकला प्रदर्शन; श्रीनिवास कन्ना, आर्टिसन (एचआरएम), शुभदीप घोष, उ.म.प्र. (भंडार), पी मधुसुधन राव, उ.प्र.(क्यूसीएल) द्वारा गीत गायन; पी गोपी, कनिष्ठ तकनीशीयन-ए (क्यूसीएल) द्वारा मिमीक्री और रवींद्र तक्षक, उ.प्र. (आर्मर), एन वी एस पवन, उ.प्र. (वित्त), वेंकट गणेश, उ.प्र. (मशीन शॉप), संतोष, उ.प्र. (वित्त) व रमा मल्लिका, कनिष्ठ सहायक-ए (क्रय) द्वारा ' एक पारिवारिक धंधा ऐसा भी' नाटक प्रस्तुत किया गया। कलाकारों ने अपनी प्रस्तुतियों को स्वर्गीय कर्नल ओम बिहारी श्रीवास्तव, उ.म.प्र. (मानव संसाधन एवं मुख्य सुरक्षा अधिकारी) को समर्पित किया। कलाकारों के प्रतिनिधि के रूप में डॉ बी बालाजी, सहायक प्रबंधक (राजभाषा) ने कहा कि कर्नल श्रीवास्तव के मार्गदर्शन में ही इन प्रतिभाओं की खोज की गई थी। इसीलिए इन कलाकारों ने कर्नल श्रीवास्तव को अपनी भावभीनी श्रद्धांजलि स्वरूप अपना प्रदर्शन समर्पित किया। सांस्कृतिक कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन तथा सिंधु माधुरी, सहायक प्रबंधक (वित्त), पी वर्षा, कनिष्ठ सहायक (भंडार), विजयनाथ कुशवाह, क्रेन ऑपरेटर (मेल्ट) द्वारा मिधानि गीत से किया गया। समापन विपणन विभाग के उप प्रबंधक प्रतीक शर्मा द्वारा सिंथसाईजर पर मिधानि गीत से हुआ। समारोह के अंत में कलाओं की प्रस्तुति करने वाले कलाकारों को सम्मानित किया गया। समारोह के सफल आयोजन में राजभाषा कार्यकारिणी एवं सांस्कृतिक समिति के सदस्यों ने सक्रिय सहयोग प्रदान किया।

मन का मैल शरीर के मैल से अधिक खतरनाक है।

कैलेंडर व डायरी का अनावरण

29 दिसंबर को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक तथा राजभाषा कार्यान्वय समिति के अध्यक्ष डॉ दिनेश कुमार लेखी की अध्यक्षता में संपन्न राजभाषा कार्यान्वय समिति की 130 वीं बैठक में मिधानि के नववर्ष कैलेंडर और डायरी का विमोचन किया गया। मिधानि के नववर्ष कैलेंडर के लिए मिधानि के कर्मचारियों व बीपीडीएवी स्कूल मिधानि के छात्रों के लिए फोटोग्राफी व पेंटिंग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया था। अध्यक्ष महोदय ने प्रतियोगिता के विषय "लैंडस्केप परिवर्तन हमारे चारों ओर :जीवन आर्थिक और पर्यावरण /सामाजिक /सांस्कृतिक) (परिवर्तन" पर प्रकाश डाला। प्रतियोगिता के प्रथम 10 विजेताओं को 26 जनवरी 2019 को नकद पुरस्कारों से सम्मानित किया गया।

स्वच्छ भारत पखवाड़ा

1 से 15 दिसंबर 2018 तक मिधानि में स्वच्छ भारत पखवाड़े का आयोजन किया गया। इस दौरान मिधानि के विभिन्न विभागों में सफाई अभियान चलाया गया जिसमें उद्यम के उच्च अधिकारीगण, कार्यपालक व गैर कार्यपालकों ने स्वैच्छिक रूप से भाग लिया। जे ओ टी व एस ओ टी कर्मचारियों द्वारा वृक्षारोपण किया गया। इस अवसर पर महाप्रबंधन (मानव संसाधन) ए रामकृष्ण राव ने कहा कि सरकारी निर्देशों के अनुपालन में मिधानि में पिछले तीन वर्षों से अर्थात 2016, 2017 और 2018 से स्वच्छ पखवाड़ा मनाया जा रहा है। मिधानि में स्वच्छ भारत अभियान को गंभीरता से लिया जाता है। इस कार्य के लिए डोमेस्टिक व इंडस्ट्रियल हाउसकीपिंग कर्मचारियों की एक समर्पित टीम फैक्ट्री, कॉर्पोरेट ऑफिस, टाउनशिप और इसके आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ और हरा-भरा रखने के लिए काम कर रही है। मिधानि में स्वच्छता को सिर्फ 15 दिनों तक सीमित नहीं रखा जाता है बल्कि यह एक दैनिक काम माना जाता है। स्वच्छता पखवाड़ा द्वारा दी गई गति ने कर्माचरियों में भी जिम्मेदारी की भावना पैदा की है। स्वच्छता बनाए रखने के लिए नियमित रूप से कई गतिविधियां की जा रही हैं। जैसे- सफाई, धूल फांकना, सिलबट्टे को हटाना, स्क्रैप का निपटान, रास्ते की मरमत्त व रखरखाव, शौचालयों का नवीनीकरण, नालियों की सफाई, पुरानी फाइलों, उपकरणों और फर्नीचर की निराई, रंगाई आदि।

महात्मा गांधी ने कहा था कि राजनीतिक स्वतंत्रता से ज्यादा जरूरी स्वच्छता है। यदि कोई व्यक्ति स्वच्छ नहीं है तो वह स्वस्थ नहीं रह सकता है।

-: महात्मा गांधी

राजभाषा निरीक्षण

दिनांक 13 नवंबर 2018 को रक्षा उत्पादन विभाग, रक्षा मंत्रालय के संयुक्त निदेशक आनंद (राजभाषा)प्रकाश मिश्र एवं वरिष्ठ अनुवादक काले खां द्वारा मिश्र धातु निगम लिमिटेड (मिधानि), रक्षा मंत्रालय, भारत सरकार, हैदराबाद का राजभाषा निरीक्षण किया गया। संयुक्त निदेशक (राजभाषा) ने निरीक्षण के दौरान मिधानि में राजभाषा कार्यान्यिवन की विभिन्न मदों की समीक्षा की राजभाषा नीति के अनुपालन की प्रशंसा की। साथ ही, राजभाषा के प्रसार के लिए मिधानि द्वारा किए जा रहे प्रयासों की सराहना की। उन्होंने सुझाव दिया कि राजभाषा विभाग द्वारा निर्धारित समयावधि में हिंदी भाषा और टंकण प्रशिक्षण पूरा किया जाए। संसदीय राजभाषा समिति की निरीक्षण प्रक्रिया को ध्यान में रखते हुए

निरीक्षण में दस्तावेजी साक्ष्य के रूप में हिंदी विभाग सहित विभिन्न अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक, निदेशक (उत्पादन एवं विपणन), निदेशक (वित्त) सचिवालय और विभागों जैसे मानव संसाधन, वित्त, क्रय, विपणन, माध्यमिक बिक्री, आर टी आई, सतर्कता, बोर्ड एवं कंपनी के मामले, डाक अनुभाग, अतिथिगृह एवं परिवहन, क्यूसीएल, सुरक्षा, प्रशिक्षण, प्रथम उपचार केंद्र, संयंत्र कार्मिक विभाग आदि में हिंदी में किए जा रहे कामकाज संबंधी फाइलें तथा राजभाषा अधिनियम, 1963 की धारा 3(3) तथा राजभाषा नियम, 1976 के नियम 11 के अनुपालन के साक्ष्य प्रदर्शित किए गए।

सतर्कता जागरूकता सप्ताह

29 अक्तूबर से 03 नवंबर तक मिधानि में सीवीसी द्वारा निर्धारित थीम "भारत का नव निर्माण करें – भ्रष्टाचार मिटाए " पर जागरूकता सप्ताह का आयोजन किया गया। सप्ताह भर चले कार्यक्रमों में प्रख्यात व्यक्तियों द्वारा व्याख्यान व वार्ता, बैनर प्रदर्शन, पर्चे वितरण, सतर्कता गृह पत्रिका का विमोचन आदि शामिल रहे। इसके अलावा कर्मचारियों, सरकारी स्कूलों एवं कॉलेजों के छात्रों के लिए निबंध लेखन तथा वाक् प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। कर्मचारियों और हितधारकों में अखंडता प्रतिज्ञा लेने की अवधारणा को बढ़ावा देने के लिए

कंपनी के सभी मोबाइलों पर और वेबसाइट के माध्यम से आधिकारिक रिंग बैक ट्यून के द्वारा अखंडता प्रतिज्ञा लेने के संदेश का व्यापक रूप से प्रसार किया गया।

इस अवसर पर श्री पी के वी रमण प्रसाद, मुख्य विधि सलाहकार, भ्रष्टाचार निरोधक ब्यूरो, तेलंगाना राज्य द्वारा वर्तमान वर्ष की थीम "भ्रष्टाचार मिटाएँ, भारत का नव निर्माण करें" विषय पर व्याख्यान दिया गया। समापन कार्यक्रम में प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। 03.11.2018 को आयोजित सतर्कता जागरूकता सप्ताह 2018 के समापन समारोह में आंध्र प्रदेश उच्च न्यायालय के सेवानिवृत्त माननीय न्यायमूर्ति श्री वी जी सीतापति मुख्य अतिथि रहे। उन्होंने मिधानि की सतर्कता गृह पत्रिका जागृति का विमोजन किया।

हिंदी मसोत्सव

08अक्तूबर 2019 को अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ दिनेश कुमार लेखी की अध्यक्षता में मिधानि में सितंबर माह में आयोजित हिंदी मसोत्सव का समापन एवं पुरस्कार वितरण कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में एनएमडीसी के उप महाप्रबंधक रूद्रनाथ मिश्र ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई। अवसर पर मिधानि के निदेशक (वित्त) संजीव सिंघल, नाबार्ड के उ.म.प्र. (राजभाषा) अब्दुल हामिद ख़ान (से.नि.) और क्रीडा के सहायक निदेशक (रा.भा.) डॉ संतराम यादव ने अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ दीप प्रज्वलन व मिधानि गीत गायन से किया गाया।

स्वतंत्रता दिवस

15 अगस्त को मिधानि में 73वें स्वतंत्रता दिवस का आयोजन किया गया। उद्यम के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ दिनेश कुमार लेखी ने ध्वाजा रोहण किया। उन्होंने इस अवसर पर कर्मचारियों को संबोधित करते हुए कहा कि हमें स्वयं के प्रति, समाज के प्रति और राष्ट्र के प्रति जवाबदेह होना चाहिए। तभी हम सही अर्थों में स्वतंत्र कहलाएँगे। स्वतंत्रता का अर्थ अपनी इच्छा के अनुसार जीवन जीना ही नहीं बल्कि दूसरों की इच्छा का आदर करना भी है। मिधानि इच्छा है कि यह राष्ट्र और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अपनी पहचान बनाए। इसके लिए हमें अपने मूल मंत्र "समिष्टि कृषि, उमडि वृद्धि " के अनुरूप कार्य करना होगा। हम साथ मिलकर हर वह लक्ष्य हासिल कर सकते हैं जो मिधानि के हित में होगा।

नराकास की वाक् प्रतियोगिता (उ.) का आयोजन

26 जुलाई को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम) [नराकास (उ.)] के तत्वावधान में मिधानि द्वारा विभिन्न उपक्रमों में कार्यरत कार्मिकों के लिए 'वाक प्रतियोगिता' आयोजित की गयी। प्रतियोगिता में 'एक देश एक भाषा (राजभाषा के संदर्भ में) ' और 'अभिव्यक्ति की आजादी ' विषय पर 19 उपक्रमों से 25 प्रतिभागियों ने अपने विचार प्रस्तुत किए। मिधानि के अपर महाप्रबंधक (मा.संसा. एवं परि. प्र.) के आनंद कुमार ने प्रतियोगिता का उद्घाटन किया। इस अवसर पर नराकास के सदस्य सचिव और बीडीएल के उप महाप्रबंधक (राजभाषा) एवं सदस्य सचिव नराकास (उ.) होमनिधि शर्मा ने समिति की ओर से प्रतिभागियों का स्वागत किया। हिंदी मिलाप के संपादक प्रकाश जैन और प्रो. ऋषभ देव शर्मा, पूर्व प्रोफेसर एवं अध्यक्ष, द.भा.हिं. प्र. सभा, खैरताबाद, हैदराबाद केंद्र प्रतियोगिता के निर्णायक रहे।

ग्राहक सम्मेलन

दि.22 जून को मिधानि द्वारा अपने ग्राहकों से आपसी मेलजोल बढ़ाने व व्यापार संबंधी मामलों पर चर्चा करने हेतु रामोजी फिल्मसिटी में ग्राहक सम्मेलन का आयोजन किया गया। इस कार्यक्रम में मिधानि से संबंद्ध ग्राहकों के 120 प्रतिनिधियों ने भाग लिया। जैसे डीआरडीओ, इसरो, बीडीएल, ओएफबी, बीएचईएल, एचएएल, ब्रह्मोस आदि। सम्मेलन के आरंभ में मिधानि के प्रतिनिधि द्वारा ग्राहकों के समक्ष मिधानि के उत्पाद सुविधाओं से संबंधित प्रस्तुतीकरण दिया गया। तत्पश्चात, ग्राहकों की आवश्यकताओं को गहनता समझने के लिए परिचर्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया।

अंतर राष्ट्रीय योग दिवस

21 जून को उद्यम में चौथे अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का आयोजन किया गया। अवसर पर मिधानि में योग संबंधी जागरूकता व्याख्यान का आयोजन किया। आम योग प्रोटोकॉल (CYP) का पालन करके बड़े पैमाने पर योग प्रदर्शन किया गया है। योग के व्यापक प्रचार के लिए उद्यम में विभिन्न स्थानों पर योग संबंधी पोस्टर प्रदर्शित किए गए। मिधानि के कर्मचारियों ने कार्यक्रम में सक्रिय रूप से भाग लिया। श्री ए रामकृष्ण राव, जीएम, एचआर ने योग करने से होने वाले फायदे बताए।

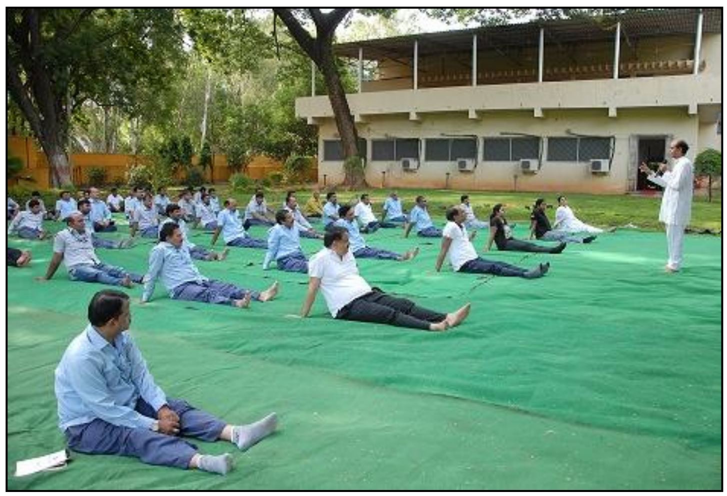

डेफेस्को-18 में सहभागित

दि.11 से 14 अप्रैल तक चेन्नई में आयोजित ‘डेफेस्को-18’ में मिधानि ने भाग लिया। जहाँ लगभग 250 व्यापार व 5000 सामान्य संदर्शकों को मिधानि के उत्पादों की जानकारी दी गई। मिधानि ने यूक्रेन के रक्षा उद्योग ‘यूक्रोबोरोनप्रोम्स्पेट्स टेक्नो एक्सपोर्ट’ के साथ समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए। यह कंपनी मिधानि द्वारा रक्षा तथा अन्य उद्योगों की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उत्पादित उत्पादों के विकास व विनिर्माण करके उनकी आपूर्ति में सहायता करेगी।

विक्रेता सम्मेलन

दि. 09 जून को मिधानि में विक्रेता सम्मेलन का सफलतापूर्वक आयोजन संपन्न हुआ। इस अवसर पर सम्मेलन के मुख्य अतिथि हेमंत कुमार, सीटीई, सीवीसी और विशिष्ट अतिथि आर मुकुंदन, आईईएम, मिधानि ने सार्वजनिक खरीद के संबंध में अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने ई-खरीद संबंधी विभिन्न सुझाव भी दिए गए। मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ दिनेश कुमार लेखी ने उपस्थित विक्रेताओं को संबोधित करते हुए मेक इन इंडिया कार्यक्रम के अंतर्गत पहचान किए गए मुख्य व्यावसायिक गतिविधियों, ऑऊट सोर्सिंग व स्वदेशीकरण की मदों की जानकारी दी। इस अवसर पर उद्यम के निदेशक (उ. एवं वि.) डॉ संजय कुमार झा, निदेशक (वित्त) संजीव सिंघल, सीवीओ मुजिब पाषा षेक ने अपने विचार व्यक्त किए। एमएसएमई उद्यमियों के लिए बढ़ाए गए लाभों की जानकारी दी गई। इस सम्मेलन में कंपनी के भागीदारों के रूप में विक्रेताओं के साथ आपसी विश्वास और रिश्ता मजबूत करने हेतु विक्रेताओं के साथ सार्थक परिचर्चा सत्र का आयोजन किया गाया। सम्मेलन में लगभग 60 विक्रेताओं ने भाग लिया। इस अवसर पर ई-खरीद, टीआरडीएस (ट्रेड रिसीवेबल्स डिस्काऊंट सिस्टम), रिवर्स ऑक्शन आदि पर विस्तृत प्रस्तुति दी गई और सार्वजनिक खरीद पर विभिन्न सरकारी नीतियों की जानकारी दी गई। एमएसएमई उद्यमियों को दिए जाने वाले विभिन्न हितलाभों का ज्ञान कराया गया। विक्रेताओं के साथ परिचर्चा कार्यक्रम भी आयोजित किया गया जिसके माध्यम से कंपनी और विक्रेताओं के बीच परस्पर विश्वास को बढ़ाने का प्रयास किया गया।

काव्यंजली

मिधानि गीत

सागर की अतल गहराई से,
आकाश तलक लहराते हैं।
हम भारत के धातुकर्मी,
धातु से सोना बनाते हैं॥
मिधानि......(4)।

जब लपटें धू धू करती हैं,
तन गर्मी से अकुलाते हैं।
तब हम पिघली धातु से,
भारत के सपने सजाते हैं॥
हम भारत के धातुकर्मी ....।
मिधानि......(4)।

अनगढ़ धातु के टुकड़ों से,
आग उगलती तोपों तक।
मंगल की हो सैर पे जाना,
भारत के पर बन जाते हैं॥
हम भारत के धातुकर्मी ....।
मिधानि......(4)।

वीरों की सुरक्षा में हम,
दुर्ग अभेद बनाते हैं।
और, सघन निर्वात में,
नवसृजन कर जाते हैं॥
हम भारत के धातुकर्मी,
धातु से सोना बनाते हैं॥
मिधानि......(4)।

रोहित निगुड़कर
वरिष्ठ प्रबंधक
वित्त एवं लेखा

अतिथि देवो भव:

वित्तीय वर्ष 2018-19 के दौरान मिधानि के पधारे अतिथिगण की चित्र दीर्घा। मिधानि ने निदेशकगण व उच्च अधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत-सत्कार किया। अतिथियों ने मिधानि के उत्पादों व उत्पादन प्रक्रिया की जानकारी ली।

30 नवंबर को तेलंगाना सरकार के मुख्य सचिव डॉ. शैलेंद्र कुमार जोशी, आई.ए.एस. ने मिधानि का दौरा किया। मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ दिनेश कुमार लेखी पुष्प गुच्छ से उनका स्वागत करते हुए।

27 नवंबर को श्री जय प्रकाश सिंह, महाप्रबंधख (आई) और श्री प्रणव कुमार रॉय, अपर महाप्रबंधक, सीएफएफपी-भेल, हरिद्वार ने मिधानि का दौरा किया।

01 नवंबर को डॉ वी नारायणन, निदेशक, एल पी एस सी और उनकी टीम ने मिधानि का दौरा किया

अतिथि देवो भव:

वित्तीय वर्ष 2018-19 के दौरान मिधानि के पधारे अतिथिगण की चित्र दीर्घा। मिधानि ने निदेशकगण व उच्च अधिकारियों ने अतिथियों का स्वागत-सत्कार किया। अतिथियों ने मिधानि के उत्पादों व उत्पादन प्रक्रिया की जानकारी ली।

30 जुलाई को श्री एस सोमनाथ, निदेशक वी एस एस सी और उनकी टीम ने मिधानि का दौरा किया

21 जुलाई को डॉ.अजय कुमार, सचिव (रक्षा उत्पादन) ने मिधानि का दौरा किया

29 अप्रैल को श्री संजय जाजू, आई ए एस, संयुक्त सचिव (डी आई पी) ने मिधानि का दौरा किया।

मिधानि की वजह से मेरा जीवन सफल व सुखी रहा

मैं जी कृष्ण साई हूं। मैंने मिधानि से पहले विभिन्न क्षेत्रों में काम किया है। मिधानि में मैंने 1983 में जॉइन किया। चूंकि मैं केवल आईटीआई फिटर ट्रेड पास था, इसलिए मुझे जेओटी/आर्टिसन-ए के रूप में चुना गया। मेरी पहली तैनाती हीट ट्रीटमेंट शॉप में हुई। इस विभाग में चार साल काम करने के बाद मेरे विभागाध्यक्ष श्री आई उदय शंकर राव जी ने मुझे एच.टी.प्लानिंग में शॉप इंजीनियर्स के सहयोग का काम दिया। उस समय मैंने अनुभव किया कि प्लानिंग का काम करने के लिए अधिक ज्ञान की आवश्यकता है। मिधानि प्रबंधन के प्रति मैं आभारी हूँ कि उसने मुझे अपनी योग्यता बढ़ाने का अवसर प्रदान किया। सन 1991 में मैंने सरकारी पॉलिटेक्निक कॉलेज से मैकेनिकल इंजीनियरिंग में डिप्लोमा की डिग्री हासिल की। इससे मेरे काम का दायरा बढ़ गया। इसके बाद मुझे अपने कामकाज के सिलसिले में अन्य विभाग के इंजीनियर्स व मेटलर्जिस्ट से चर्चाएं करनी पड़ रही थी। मुझे लगा कि प्रॉसेस शीट्स, एच टी प्रॉसेस तथा मेटलर्जी का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है ताकि मैं उत्पादन विभागों की आवश्यकताओं को समझ सकूं। मैंने पुनः अनुभव किया कि मुझे डिप्लोमा के ऊपर की पढ़ाई करनी चाहिए। मुझे मिधानि के प्रबंधन ने फिर से आगे की पढ़ाई के लिए मंजूरी दी। 1995 में मैंने भारतीय धातु संस्थान (आई आई एम) कोलकत्ता से मैंने डिग्री हासिल की। इसके बाद 2006 से 2009 तक प्रबंधन ने मुझे IED में काम करने का मौका दिया।

वर्ष 2009 में मुझे प्रबंधन ने ई-1 ग्रेड पर प्रमोशन दिया और वापस एच टी शॉप को ट्रांस्फर किया। इस समय मैं सहायक प्रबंधक हूँ। यह सब बताते हुए मुझे बहुत ही खुशी हो रही है।

हिंदी विभाग ने मुझे अपने परिश्रम के दिन याद करने का मौका दिया। मेरी पत्नी भी काम करती है। वह आरसीआई में वीआरडीई सेल में पीए-बी है। आज मैं बहुत ही खुशाल जिंदगी जी रहा हूँ। मेरे दोनों बेटों ने बीपीडीएवी मिधानि स्कूल में पढ़ाई की। मेरा बड़ा बेटा सिविल इंजीनियर है और छोटा सॉफ्टवेयर इंजीनियर है। आज वे दोनों अच्छी नौकरी कर रहे हैं। मैं यह दावे के साथ कह सकता हूं कि मिधानि की वजह से मेरा जीवन सफल व सुखी रहा। मिधानि को मेरा सलाम!!!

जी कृष्ण साई
सहायक प्रबंधक
एच टी शॉप

काव्यंजली

మిధానీ.. గీతం

మిధానీ.. మిధానీ.. మిధానీ..
సాగర గర్భములో నుండి
రోదసి దాటి మా జండా..
మేము భారత ధాతు కార్మికులం.
మిశ్రధాతు స్వర్ణం పండిస్తాం..!
||సాగర||

ఎగసే అగ్నిజ్వాలలో..
మా తనువులు ఉడికే వేళ..
ఉడుకుతున్న ధాతువులతో...
జాతి కలలు సాకారం చేస్తాం..!
||సాగర||

మూలధాతు శకలాలతో..
శతఘ్నులను తయారు చేస్తాం..!
మంగళయాన్ విహారంతో
భారత్ ఆశల రెక్కలమౌతాం.. ||
సాగర||

వీరజవానుల రక్షణతో..
సరిహద్దులబేధ్యం చేస్తాం..!
మహాశూన్యం నుండే..
నవశక్తులనే సృష్టిస్తాం..!
||సాగర||
||మిధానీ..4 ||

కె. మాధవ్ రావు
సీనియర్ ఎగ్జిక్యూటివ్
క్యూసిఎల్

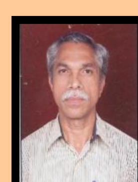

मुझे गर्व है कि मैं आज मिधानि परिवार का हिस्सा हूं

मेरा नाम सुरेश डोकुपर्ति है। मैंने मेटलर्जीकल इंजीनियरिंग में एम टेक किया है। मैंने मिधानि में 2005 में मैनेजमेंट ट्रेनी के रूप में जॉइन किया था। उस समय मैं आईआईटी बीएचयू में पढ़ रहा था मेरा केंपस प्लेसमेंट हुआ था। ऑन जॉब ट्रेनिंग के तहत मुझे शुरू में एयरोनॉटिकल मैटेरियल्स डिपार्टमेंट में काम दिया गया। ट्रेनिंग के बाद मुझे असिस्टेंट मैनेजर के रूप में हीट ट्रीटमेंट शॉप में भेजा गया। यहाँ पर मैं मिधानि प्रबंधन की विशेषता के बारे में बताना चाहूंगा। मिधानि प्रबंधन अपने अधिकारियों व कर्मचारियों को अपनी योग्यता बढ़ाने का पूरा अवसर देता है। उन्हें अपने ज्ञान में वृद्धि करने के लिए प्रेरित करता है। इसी कारण मुझे 2014 में एडवांस टेक्नो मैनेजमेंट ट्रेनिंग प्रोग्राम में भाग लेने का मौका मिला। इस प्रोग्राम के लिए मुझे 1 महीने के लिए डिपार्टमेंट ऑफ साइंस एंड टेक्नोलॉजी न्यू दिल्ली ने स्पॉन्सर किया था। यह प्रशिक्षण एडमिनिस्ट्रेटिव स्टाफ कॉलेज ऑफ़ इंडिया हैदराबाद में आयोजित किया गया था। इस कार्यक्रम की अगले कड़ी के रूप में मुझे 2015 में जर्मनी भी भेजा गया।

2016 में मुझे एचटी डी शॉप का इंचार्ज बनाया गया। 2017 में मुझे एक अच्छा अवसर मिला। रिड्यूसड़ एक्टिवेशन फेर्रेतिक – मट्टेन्सिटिक स्टील (आर ए एस एम एस) को विकसित करने वाली के लिए एक का गठन किया गया। मुझे उस प्रतिष्ठित टीम का सदस्य बनने का मौका मिला। आगे चलकर इसी कार्य के लिए मिधानि को को रक्षा मंत्री पुरस्कार से सम्मानित किया गया। मुझे बड़ी खुशी है कि देश भर में मिधानि का मान बढ़ाने की परियोजना में मैं शामिल रहा। इस समय मैं मिधानि का स्टेकहोल्डर हूं। मैंने मिधानि के आईपीओ खरीदे हैं। पिछले 12 वर्षों में मिधानि में काफी परिवर्तन हुए हैं। मैंने जब मिधानि में जॉइन किया था उस समय मिधानि का कुल टर्नओवर 150 करोड़ था जो कि अब बढ़कर 720 करोड़ हो गया है।

मिधानि का आधुनिकीकरण हुआ है। हाऊस्कीपिंग के क्षेत्र में बेहतर बदलाव देखने में आ रहा है। मुझे बहुत खुशी है कि मैं मिधानि में काम करते हुए राष्ट्रीय परियोजनाओं में शामिल रहा। देश की उन्नति में मेरा योगदान रहा।

मैं अपनी प्रोफेशनल और पर्सनल लाइफ से बहुत खुश हूँ। मुझे गर्व है कि मैं आज मिधानि परिवार का हिस्सा हूं।

डी सुरेश
प्रबंधक
एच टी शॉप

काव्यंजली

प्यारी मिधानि

सबसे प्यारी, सबसे प्यारी।
मिधानि है हमारी सबसे प्यारी।
धातु उत्पादन में है न्यारी।
मिधानि है हमारी सबसे प्यारी।

आकाश की ऊंचाई पे उड़ने वाली।
चाँद को छू कर आने वाली।
समन्दर की गहराई में तिरने वाली।
भारत के सपनों को सजाने वाली।
धातु उत्पादन में है न्यारी।
मिधानि है हमारी सबसे प्यारी।

धातुओं का सर्जन करने वाली।
धातुओं को पिघलाने वाली।
छड़ें और तार बनाने वाली।
चादर से कवच बनाने वाली।
धातु उत्पादन में है न्यारी।
मिधानि है हमारी सबसे प्यारी।

वीर-जवानों का जोश बढ़ाने वाली।
भारत का आत्मविश्वास जगाने वाली।
दुश्मनों को मुंह तोड़ जवाब देने वाली।
भारतियों की सुरक्षा करने वाली।

धातु उत्पादन में है न्यारी।
मिधानि है हमारी सबसे प्यारी।
सबसे प्यारी, सबसे प्यारी।
मिधानि है हमारी सबसे प्यारी।
धातु उत्पादन में है न्यारी।
मिधानि है हमारी सबसे प्यारी।

रतन सिंह बावरी
कनिष्ठ सहयाक
क्रय विभाग

-

मिधानि में अपने काम से बहुत प्यार करती हूँ

मैं मिधानि में अपने काम से बहुत प्यार करती हूँ मिधानि में मेरी यात्रा बस अभी कुछ महीनों पहले शुरु हुई है। मिधानि के बारे में बताने के लिए मैं बहुत उत्सुक हूं। पहले मैं मिधानि में प्रवेश करने के बारे में बताना चाहूंगी। उसके बाद मिधानि के बारे में बताऊंगी। मिधानि में प्रवेश की मेरी यात्रा 2 साल पहले शुरु हुई। मेरे दाहिने पैर में फ्रैक्चर हुआ था। उस पर पीओपी का बैंडेज लगा था। डॉक्टर ने आराम करने की सलाह दी थी। मेरे कैरियर में पहली बार रुकावट आई थी। पूरे 20 दिन की रूकावट। मैं पलंग पर पड़ी-पड़ी बोर हो रही थी। मेरे लिए मनोरंजन का कोई साधन था तो केवल समाचार पत्र। मैं समाचार पत्र के प्रथम पृष्ठ से लेकर अंतिम पृष्ठ तक पढ़ने लगी। मैंने कभी इस तरह से समाचार पत्र नहीं पढ़ा था। महत्वपूर्ण सामचार या मेरे लायक उपयोगी समाचार सामग्री नोट करना भी मैंने उन्हीं दिनो सीखा। सरकारी नौकरियों के विज्ञापन देखकर उनके प्रति मेरा आकर्षित होने लगी थी। सरकारी नौकरी के लिए तैयारी में जुट गई। मेरे ठीक होने बाद भी यह क्रम जारी रहा। काफी बिजी शेड्यूल था। काफी बिजी साइकिल था। घर को संभालना, ऑफिस में काम करना और फिर सरकारी नौकरी के लिए तैयारी करना। एक दिन मिधानि में आईटी विभाग की नियुक्ति संबंधी विज्ञापन पढ़ने में आया। सरकारी नौकरी हासिल करने की इच्छा के बावजूद मिधानि का आवेदन भरे या नहीं के कशमकश में थी। क्योंकि मेरा कैरियर कॉर्पोरेट सेक्टर से जुड़ा हुआ था। मिधानि एक पब्लिक सेक्टर कंपनी है। मैं सोचने लगी कि मेरी रूचि तकनीकी, सोशल मिडिया आदि में है और मिधानि तो एक मैन्युफैक्चरिंग कंपनी है। मुझे लगा कि यहां पर मुझ जैसे टेक्नोलॉजी का काम करने वालों को ज्यादा स्कोप नहीं रहेगा। काफी विचार-मंथन के बाद मैंने मिधानि में अप्लाई किया। मुझे करना ही था और अब मैं यहां हूं। आज मुझे मिधानि में जॉइन किए 3 महीने 89 दिन 2136 घंटे हुए हैं अर्थात मेरी मिधानि में मेरी यात्रा अभी अभी शुरू हुई है। अभी तो पार्टी शुरू हुई है।

मैं समझती थी 'मिश्र' किसी व्यक्ति का नाम है। उन्हीं के नाम पर यह कंपनी है। लेकिन एक मीटिंग में सी एम डी सर ने 'मिश्र' का अर्थ समझाया। तब मुझे पता चला कि मिश्र का अर्थात अलॉय्स है। विभिन्न धातुओं का मिश्रण।

मेरे लिए मिधानि में सब कुछ नया था। क्योंकि मैं एक कारपोरेट संगठन से यहां आई थी। वहां के वर्क कल्चर में और यहां के वर्क कल्चर में, लोगों में, काम की प्रक्रिया में, कार्य के माहौल में और सबसे बड़ी बात नो वीकेंड। मुझे कुछ समय लगा यहां पर एडजस्ट होने में और यहां के काम के माहौल को समझने में। अब मैं धीरे-धीरे मिधानि परिवार का हिस्सा बनने लगी हूं। लेकिन एक बात अवश्य कहनी चाहूंगी कि पहले दिन से ही मुझे लग रहा था कि मैं मिधानि का हिस्सा हूं और यही बात मुझे बार-बार मिधानि में काम करने के लिए प्रेरित कर रही थी। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस के दिन सीएमडी सर की स्पीच ने मुझे बहुत प्रेरित किया। उन्होंने कहा था महिलाओं में आत्मविश्वास होना चाहिए और काम के प्रति समर्पण होना चाहिए, चाहे फिर वह घर पर हो या कार्यालय में। वह जो कुछ भी करें उसे जिम्मेदारी से करें। उनके भाषण के बाद मुझे लगा कि मिधानि महिला कर्मचारियों को बहुत महत्व देती है।

यहां पर काम करने का तरीका, टीम भावना व सहयोग, एक दूसरे के प्रति आदर, मुश्किल समय में भी मुस्कुराते रहना और समय-समय पर बड़े अधिकारियों द्वारा प्रेरक वचन और काम के प्रति समर्पण इन्हीं सब बातों ने मुझे यहां काम करने के लिए प्रेरित किया है। अंत में मैं स्टीव जॉब्स के शब्दों में यही कहना चाहूंगी आपका काम आपके जीवन का बहुत बड़ा हिस्सा भर देता है और सही मायनों में संतोष आपको तभी मिलता है जब आप अपने काम में विश्वास करते हैं और उसे बड़ा काम सोचते हैं। बड़े काम को करने का एक ही तरीका है कि आप उसे प्यार करें। मैं मिधानि में अपने काम से बहुत प्यार करती हूँ। धन्यवाद।

के. लक्ष्मी प्रसन्ना
सहायक प्रबंधक
आई टी

प्रबंधन का सहयोग करता रहूंगा

मैं एम कृष्णम राजू, आंध्र प्रदेश के पश्चिम गोदावरी जिले से हूं। सन 1980 में मैंने अपरेंटिस ट्रेनी के रूप में मिधानि में ज्वाइन किया था। मेरी नियुक्ति यूटिलिटी डिपार्टमेंट में एक बॉयलर के रूप में हुई थी। वह 2 वर्षों का कोर्स था। मैंने अपरेंटिस ट्रेनी का कोर्स अच्छे अंकों के साथ सफलतापूर्वक पूरा किया। 1983 में मुझे मिधानि में ही जूनियर ऑपरेटिव ट्रेनी के रूप में ज्वाइन करने का मौका मिला। 1984 में मुझे आर्टिसन-ए के रूप में यूटिलिटिस विभाग में स्थायी किया गया।

मुझे याद है कि 1984 से 2008 तक मैं इसी विभाग में काम करता रहा। मेरा काम विभाग के बाईलर्स का परिचालन देखने और उनके रखरखाव तक ही सीमित था। 2008 में एके घोष साहब इस विभाग के अध्यक्ष बने। उन्होंने मेरी कार्य कुशलता को देखते हुए मेरे कार्यक्षेत्र का विस्तार किया। उन्होंने मुझे जो भी कार्य दिया उसे मैंने सफलतापूर्वक पूरा किया। वर्ष दर वर्ष मेरा कार्यक्षेत्र बढ़ता गया। मेरा आत्मविश्वास भी बढ़ता गया।

2008 में एके घोष साहब ने मुझे नए 8 टी पी एच बॉइलर की स्थापना और उसे आरंभ करने के कार्य सौंपा। एक वर्ष के भीतर ही अपने निरीक्षण में यह कार्य पूरा करवाया। वर्ष 2011 में घोष साहब ने मुझे सीएसआर परियोजने के तहत एक और जिम्मेदारी सौंपी। वह जिम्मेदारी थी एजिटेशन व सैंड बेड फिल्टरेशन प्रणाली युक्त लघु ईटीपी संयंत्र की स्थापना और आरंभ करवाना। मैंने यह कार्य भी अपनी देखरेख में दिए गए समय में ही सफलतापूर्वक पूरा किया।

2012 मेरे लिए चुनौतीपूर्ण और उपलब्धियों से भरा रहा। एके घोष सर ने मुझे मेल्ट शॉप में डीटीएच बॉयलर बेल्ट शॉप को स्थापित करने के अध्ययन का कार्य सौंपा। मैंने उस बॉयलर में कुछ परिवर्तन करने के सुझाव के साथ रिपोर्ट जमा की। मेरे सुझावों को स्वीकार किया गया और जिसकी वजह से मुझे वर्ष 2013 में 15,000/- का नगद पुरस्कार भी प्राप्त हुआ। वह बॉयलर आज भी मेल्ट शॉप-4 वीडी / वीओडी में बिना किसी समस्या के सफलतापूर्वक चल रहा है।

मुझे इसी तरह के कई अन्य परियोजनाओं में भी शामिल होने का मौका मिला। 2015 में मेरे विभाग ने निर्णय लिया कि पंप हाऊस-1 से एच आर एम तक के कूलिंग वाटर और फर्नेस वाटर पाईप लाइन में बदलाव किया जाए। अंडर ग्राउंड पाइप लाइन की जगह जमीन के ऊपर पाईप लाइन करने का प्रस्ताव रखा। इसे प्रबंधन ने स्वीकृति दी। मैंने इस कार्य में बी वी गणेश, सहायक प्रबंधक (यूटिलिटिस) के साथ मिलकर आरंभ से सामापन तक सक्रिय रूप से भाग लिया।

उसी तरह 2016 में मेरे विभाग के प्रबंधक एन के स्वामी ने प्रस्ताव रखा कि पंप हाउस में मोटराइज्ड बटरफ्लाई वॉल्व लगाया जाए जिससे पंप के परिचालन पर अच्छा नियंत्रण रखा जा सके। मैंने उसकी स्थापना और आरंभ में भी सहयोग दिया। इस कार्य से मुझे काफी संतोष मिला।

इसी तरह से प्रबंधन ने 2016 में डाउनस्ट्रीम एरिया के अंडरग्राउंड वाटर पाइप लाइन बदलने का प्रस्ताव रखा जिसका जमीन के ऊपर से पाइपलाइन किया जाना था। मैंने उसकी डिजाइनिंग, स्थापना और उसके आरंभ में सहयोग दिया। डाउनस्ट्रीम के अंतर्गत हॉट रोलिंग मिल्स, कोल्ड रोलिंग मिल्स, ट्यूब शॉप, बार एंड वायर ड्राइंग, पॉऊडर मेटलर्जी और वाटर इलेक्ट्रॉलिसिस प्लांट आते हैं। पिंकलिंग शॉप को कोटिंग के लिए उस समय उपलब्ध 8 टी पी एच बॉइलर से भाप भेजी जाती थी जिस के लिए काफी बड़ी मात्रा में परिचालन लागत लगती थी। इसलिए वर्ष 2017 में मैंने ईंधन की लागत को कम करने के लिए एक सुझाव दिया। उसमें मैंने बताया कि पिकलिंग शॉप की भाप की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु दो नॉन-आईबीआर बॉइलर्स रखे जा सकते हैं। इसे सफलतापूर्वक क्रियान्वित किया गया है। वे दो नॉन-आईबीआर बॉइलर्स आज भी बिना किसी रुकावट के चल रहा है। यह मेरे लिए गर्व की बात है। मैं इसी तरह भविष्य में भी प्रबंधन का सहयोग करता रहूंगा और प्रबंधन मुझे मौका देगा इसी आशा के साथ धन्यवाद।

एम. कृष्णम राजू
जूनियर इंजीनियर
उपयोगिता विभाग

मिधानि प्रबंधन ने मेरी योग्यता के अनुसार काम सौंपा

"मिधानि" में शामिल होने से पहले:

हम लोग खम्मम जिले के निवासी हैं। पिताजी श्री कोरुप्रोलू वेंकटेश्वर राव शिक्षक के रूप में वहाँ के एक स्कूल में काम करते थे और होम्योपैथिक चिकित्सा की सेवा भी प्रदान करते थे। माताजी श्रीमती रंगनायकम्मा एक आम गृहिणी थीं। लेकिन उनकी एक विशेषता बताना चाहूंगा। उन्होंने अपने जीवनकाल में लगभग एक लाख किताबें पढ़ीं हैं। मेरे नानाजी श्री उट्कुरू सत्यनारायण राव जी नाटक तथा सिनेमा लेखक थे।

हम लोग नौ (5 लडकियाँ + 4 लड़के) भाई-बहन थे। मैं लड़कों में सबसे बड़ा था। 1978 में इंटर की परीक्षा पास करके मैं हैदराबाद चला आया। पत्थर गट्टी में स्थित "अग्रवाल इवनिंग साइंस कॉलेज" से मैंने बी.एससी. किया। उस समय मैं राजेंद्रनगर में रहा करता था। "अखिल भारतीय कॉर्डिनेटेड राइस इंप्रूवमेंट प्रोजेक्ट" (एआईसीआरआईपी) (वर्तमान में डीआरआरआई) में एक अनियत पर्यवेक्षक के रूप में काम किया करता था। मेरा वेतन रु. 180 /- प्रतिमाह था। मेरे अधिकारी ने मेरे उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए सदाचार प्रमाण पत्र भी दिया था। वह आज भी मेरे पास है। मेरे मामाजी श्री मोन्नारू कृष्णा राव जी के क्वार्टर के पते आधार पर मैंने रोजगार कार्यालय में अपना नाम पंजीकृत करवाया। उस समय मैं उषा श्रीराम में रु. 500/- के वेतन पर काम कर रहा था।

ठीक एक वर्ष के बाद मिधानि से आर्टिसन-ए के रूप में नियुक्ति पत्र प्राप्त हुआ। उषा श्रीराम के मेरे बॉस मुझे छोड़ना नहीं चाहते थे। लेकिन सरकारी नौकरी होने के कारण मुझे कार्यमुक्त करने के लिए मान गए।

सरकारी नौकरी मिलने का मुझे बहुत रोमांच था। किंतु उन्हीं दिनों मेरे परिवार में दुखद घटना घटी थी। मैंने अपने पिता को खो दिया था। उनके स्वर्ग सिधारे मात्र नौ महीने ही हुए थे। सभी दुखी थे। मेरे इस समाचार से माँ और परिवार के अन्य सदस्यों को खुशी हुई।

"मिधानि" में शामिल होने के बाद:

मिधानि में मेरी लंबी यात्रा रही है। 5 जुलाई 2018 को मिधानि में मेरे 35 वर्ष पूरे होंगे। तीन वर्षों के बाद अर्थात 2021 में मैं सेवानिवृत्त हो जाऊंगा। यहाँ मैं मेरे कार्ययात्रा के कुछ प्रमुख अंशों को याद करना चाहूंगा।

मिधानि में मुझे गुणवत्ता नियंत्रण विभाग में अंतिम निरीक्षण कार्य सौंपा गया। मेरे साथियों को मेरे कार्य करने की पद्धति से ऐतराज रहा करता था, वह आज भी है। कारण कि मैं अपना काम पूरा करने के लिए कार्यसमय की सीमित अवधि का ध्यान नहीं रखता। काम पूरा करने के लिए यदि मुझे कार्यालय के समय से अधिक रुकना पड़े तो बिना किसी खीज के काम पूरा होने तक कार्यालय में रुकना मेरी कार्य संस्कृति है।

मैं एच आर एम, सी आर एम, बार एंड वायर शॉपों में गुणवत्ता निरीक्षण का काम करने लगा। मैं यदि अपने काम करने की पद्धति के बारे में बताऊं तो कृपया उसे अतिशयोक्ति न समझें। मैंने नियमित रूप से निरीक्षण काम कर दिए गए समयावधि में कार्य पूरा करने का एक रिकार्ड बनाया है। आपने काम को एक चुनौती के रूप में लेता हूँ, जिसे पूरा करने के लिए हमेशा तत्पर रहता हूँ। यह काम मैंने रिकॉर्ड स्तर किया है। पता है। चुनौतीपूर्ण कार्य करने के लिए हमेशा उत्साहित रहना मेरा स्वाभाविक स्वभाव है। चाहे मेरे साथी या अन्य कोई व्यक्ति इसे कुछ भी समझे। कार्यालय में मेरा व्यवहार सीधी बात नो बकवास ही रहता है। इस प्रकार के व्यवहार के कारण व्यक्तिगत स्तर पर मुझे कभी-कभी नुकसान भी उठाना पड़ता है।

मैंने बॉडी आर्मर प्लेटों का हज़ारों की संख्या में अकेले ही निरीक्षण किया है जिसके कारण उन प्लेटों का केएपीपी शॉप से डिस्पैच किया जा सका। उस समय के सी एम डी महोदय के के सिन्हा जी ने मेरी पीठ थपथपाते हुए कहा था - " तम्हारी आँखें 'डाई पेनेट्रेशन' से भी अधिक तेज हैं।" उस घटना ने मुझे बहुत रोमांचित कर दिया था। वह क्षण मेरे स्मृतिकोष में आज भी संग्रहित है। उन्हीं दिनों मुझे उत्कृष्ट कर्मचारी का पुरस्कार भी प्राप्त हुआ।

रेडियोग्राफी में काम करने के लिए मेरे कोई साथी तैयार नहीं थे। उस स्थिति में मैंने वह काम करने के लिए स्वीकृति दी और डेढ़ वर्ष तक मैंने अकेले ही वह कार्य संभाला। मिधानि में यह एक रिकार्ड है। यूटी, आरटी आईएसएनटी लेवल-2, ईटी लेवल-2 एएसएनटी बिना किसी रुकावट के पास हो गए। मैं प्रबंधन के लिए हर समय उपलब्ध रहते हुए दिया गया हर काम मैंने पूरा किया। फिर चाहे वह काम कंपनी में हो, शहर में या फिर बाहर हो। विशेषकर यूटी विटनेस एमडीएन250, वीएसएससी रिंग्स का 2016-17 व 2017-18 में निरीक्षण कार्य रहा। उस समय हुए कुल बाह्य निरीक्षण कार्यों में 70 प्रतिशत निरीक्षण कार्य मेरे द्वारा किए गए। मैग्नेटिक लैब्स में परीक्षण के कार्य के लिए जब उपयुक्त विशेषज्ञ नहीं मिल पा रहा था, तो मैंने स्वयं को इस काम के लिए प्रस्तुत किया। प्रबंधन ने भी मुझ पर विश्वास किया। यह काम मैं आज भी कर रहा हूँ। मुझे यह बताते हुए प्रसन्नता के साथ-साथ गर्व का भी अनुभव हो रहा है कि इस क्षेत्र में मेरा योगदान महत्वपूर्ण रहा है।

क्यूसीएल एनडीटी, सीपीआर, एमआर से संबंधित सारे काम मैं कर रहा हूँ। प्लेट रोलिंग टाइम का निरीक्षण आवश्यक्ता के अनुसार

ऑनलाइन मुबंई, अंगोल, भिलाय, राऊरकेला जाकर किया जा रहा है। 2016-17 यू 2 कॉस्टिंग्स का निरीक्षण काम किया गया। आरआरसीएटी-इंदोर के लिए रु. 32 लाख के सॉफ्ट मैगनेटिक सामग्री भेजी गई। कंपनी के इंस्ट्रूमेंटेशन विभाग द्वारा दो सर्फेस रफनेस टेस्टर्स खराब होने की घोषणा की गई। जिनकी कीमत लगभग 4.5 लाख रुपए थी। मैंने इनकी मरमत्त के लिए उपयुक्त मरमत्त करने वाले की काफी खोजबीन की। मुझे कुकटपल्ली में स्थित एसवी प्रिस्सेस्शन की मदद मिली। इनकी सहायता से वे दोनों टेस्टर्स ठीक हो पाए। मुझे डीएमडीई कॉस्टिंग्स के निरीक्षण के काम भी शामिल होने का मौका मिला। इन सब तकनीकी कामों के साथ-साथ मैंने प्रशिक्षण एवं विकास के निमंत्रण पर अपने कर्मचारियों के लिए पिरामिड ध्यान की कक्षाएं भी चलाई। तेलुगु में मैंने मिधानि गीत भी लिखा है। हिंदी विभाग, मानव संसाधन विभाग व कंपनी के गायकों के सहयोग से उसे रिकार्ड भी करवाया गया।

मेरा जीवन ईश्वर व मिधानि प्रबंधन की कृपा से सुखमय बीत रहा है। मेरे दो बच्चे हैं। बेटा साई दिवीजेंद्र बीटेक सिविल है। वह इस समय अमेरिका में एमएस आईटी की पढ़ाई कर रहा है। बेटी काव्यश्री बीटेक मेकानिकल की पढ़ाई कर रही है। मिधानि प्रबंधन ने मुझे मेरी योग्यता के अनुसार काम सौंपा, मान-सम्मान दिया। मैं इस अवसर पर मिधानि प्रबंधन के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करता हूँ।

के माधव राव
वरिष्ठ कार्यपालक
क्यूसीएल

काव्यंजली

मिधानि और मैं

जब हम पुरानी यादों पर से धूल पोंछते हैं
तो वे नई ताजा हो जाती हैं।
मिधानि से जुड़ी हुई सब, हर पल-स्थित ताज़ा हो जाती हैं।
खेली हूँ तेरी गोदी में, हुई पलकर बड़ी तेरे साये में
पढ़ना-लिखना भी सिखाया तूने ही ,
ज़िंदगी के ऊसूल समझाए तूने ही।
पापा जब संग थे तेरे, तेरे सपनों को समझा था उन्होंने
तेरे हर उम्मीदों पर, खरा उतरना ही था उन्हें।
इसी मकसद को ध्यान में रखकर,
देने लगे एक नया इम्तेहान हर साल
ना परिवार, ना बच्चे
सिर्फ एक ही था हरवक्त ख़याल।
खुद मेहनत करना है उन्हें, तुझे आगे बढ़ाना है
तेरे हर सपनों को बस, अब उन्हें पूरा करना है।
कैसा ये रिश्ता था उनका, कैसी ये उम्मीदें थीं
खुद से भी ज्यादा तुझ पर, उनसब की कैसी तुझसे श्रद्धा थी
तुम भी कुछ कम नहीं , हमेशा उनके साथ रही
दुख में, सुख में, हर वक़्त, हर सहर, उनके संग तुम खड़ी रही।
तोड़ दी सारी सरहदें उन्होंने, तोडं दिये सारे उलझने
सब मिल-जुलकर, एक नया इतिहास लगे रचने।
नहीं सोचा कभी तुझ संग यू मिलूंगी,
दूर से ही देखा था तुझे पर अब तेरी हमसफर बनूँगी।
खुश तो थी मैं पर सहमी-सेहमी भी थी कहीं,
इतनी बड़ी ज़िम्मेदारी को निभाना आसान नहीं।
जब पहला कदम मैंने था बढ़ाया,
कुछ अजीब सा महसूस हुआ।
मानो मेरा माइका छोड़के, ससुराल में मेरा प्रवेश हुआ
बहुत सारे प्रश्न थे मन में मेरे, बहुत सारी उलझने थी
सबको दर किनार कर एक ही बात ठानी मैंने थी।
मैं तेरी जिम्मेदारी थी कभी, अब तू मेरी जिम्मेदारी है
तेरे हर सपनों को अब, पूरा करने की मेरी बारी है।
तू भी क्या कुछ कम है, तुम्हारा अपना भी एक पारा है
निखारने आई थी मैं तुम्हें, पर तूने ही मुझको संवारा है।
हर मौका बढ़ने का दिया है तूने मुझको
एक नए साँचे में ढाला है तूने मुझको।
पता है मुझको कि जो भी तेरे दर पर आया,
कभी नहीं वह खाली हाथ गया है।
अब मैं तेरा विश्वास बनूँगी, तेरी हर कदम को थामुंगी
चाहे जो भी हो परिस्थितियाँ, तेरा साथ कभी ना छोड़ूँगी।

पी वर्षा
सहायक
वित्त एवं लेखा

मिधानि प्रबंधन ज्ञानार्जन के लिए प्रोत्साहित करता है

मैं **के पी एस मोहन कृष्णा** हूँ। मैं इस समय पी-3 में एजीएम हूं। मिधानि के साथ मेरा जुड़ाव उसके आरंभिक दिनों से ही है। 1974 की बात है। हम लोग उस समय से ही संतोष नगर कॉलोनी में निवास कर रहे हैं। आज जिस जगह पर मिधानि खड़ी है, वह मेरी चिर-परिचित है। यह बंजूर भूमि थी। मैं यहाँ अपने दोस्तों के साथ साईकल पर आया-जाया करता था। यह उस समय एक सुनसान इलाका हुआ करता था। आज तो बहुत आबादी बढ़ गई है। उन दिनों मैं स्कूल में पढ़ता था। एक दिन मैंने देखा कि यहाँ पर बुलडोजर चल रहे हैं। जमीन खोदने की बड़ी-बड़ी मशीनें चल रही हैं। जमीन को समतल बनाया जा रहा है। उस समय मुझे केवल एक ही ढांचा समझ में आया था और वह है मिधानि में खड़ा यह वॉटर टैंक।

सन् 80 का दशक, हैदराबाद दूरदर्शन के आरंभिक दिन थे। उन दिनों दूरदर्शन पर साप्ताहिक समाचार प्रसारित हुआ करते थे। उन्हीं दिनों आए दिन मिधानि के बारे में भी समाचार प्रसारित हुआ करते थे। समाचारों में मिधानि के उत्पादों के बारे में जानकारी दी जाती थी। मॉनिबडेनम और टाइटेनियम के नाम मैंने उन्हीं समाचारों में पहली बार सुना था। उस समय मिधानि को सुपर अलॉय्स प्लांट कहा जाता था। बाद में इसे मिश्र धातु निगम लिमिटेड कहा जाने लगा। जब मैं कॉलेज का विद्यार्थी बना तब पिताजी ने मुझे घड़ी खरीद कर दी थी। मैंने उसका समय मिधानि के सायरन के साथ मिला लिया था। सायरन सुबह के 8:45 बजे बसता था। सायरन के बचते ही मैं कॉलजे के लिए घर से निकलता था। बस स्टॉप पहुंचता था।

1987 में मैं जब इंजीनियरिंग के अंतिम वर्ष में था, उन्हीं दिनों मैंने बीईएमएल में नौकरी के लिए आवेदन जमा किया था। ऑल इंडिया रिटन टेस्ट में मैं पास हो गया। मुझे इंटरव्यू के लिए बुलाया गया। वह इंटरव्यू अगस्त 1987 में बेंगलुरु में हुआ था।

इंटरव्यू के पहले हमें बताया गया कि मिधानि में ग्रैजुएट इंजीनियर ट्रेनी के लिए भी चुनाव किया जा रहा है और यह इंटरव्यू बीएमएल और मिधानि दोनों के लिए संयुक्त रूप से किया जा रहा है।

इंटरव्यू के बाद मेडिकल हुआ। मुझे मिधानि से अपॉइंटमेंट लेटर। मैं बहुत खुश भी था और थोड़ा चकित भी। मैंने तो आवेदन बीईएमएल के लिए दिया था मगर चुना गया मिधानि के लिए। यह सब भाग्य का खेल है। खैर, मैंने 1 दिसंबर 1987 को मिधानि में ज्वाइन किया। मिधानि में ज्वाइन करने के बाद मैंने पाया कि मिधानि की कार्यशैली में सकारात्मकता और नकारात्मकता का विरोधाभास है। वैसे, वास्तव में किसी भी संगठन में ऐसा होता है। अब मैं अपने अनुभव के आधार पर कह सकता हूं कि हर जगर ऐसा होता है।

कोई पूरी तरह पर्फेक्ट नहीं हो सकता चाहे वह कोई व्यक्ति हो या कोई संस्था। मिधानि एक छोटी कंपनी थी। अपने सीमित संसाधनों द्वारा वह जो करती सकती थी वह कर रही थी। कर्मचारियों के बीच काम को लेकर अक्सर चर्चा होती है। चाहे वह अधिकारी हों या गैर-अधिकारी। लेकिन काम पूरा करने के लिए, व्यक्तिगत तालमेल सामान्य प्रक्रिया की तुलना में अधिक प्रमुख भूमिका निभाता है। मिधानि की यह सकारात्मकता है कि यहाँ सब तालमेल से काम करते हैं।

कंपनी के ज्वाइन करने के बाद इंडक्शन के समय हमें दिया गया प्रशिक्षण भी पूरी तरह से व्यवस्थित नहीं था। हमारे मूल काम से बिलकुल भी जुड़ा हुआ नहीं था। वह विशेष रूप से यांत्रिक और विद्युत रखरखाव का ज्ञान कराने योग्य था। उम्मीदवारों को प्रशिक्षण के बाद कर्मशालाओं पर तैनात किया गया। प्रशिक्षण में जो सिखाया गया था वह सब हाथ के मैंल की तरह धुल गया। इसलिए मुझे बाहरी स्रोतों से ज्ञान अर्जित करना पड़ा। मैंने अपने आपको काम से जोड़े रखने के लिए पी.जी डिप्लोमा इन मेंटेनेन्स और प्लांट इंजीनियरिंग में एम.टेक. किया।

मिधानि प्रबंधन अपने कर्मचारियों को ज्ञानार्जन के लिए कोई प्रोत्साहित करता है। यह मिधानि की विशेषता है । यदि आप स्वयं कुछ सीखना चाहते हैं, तो कोई सीमा नहीं है। कोई उपकरण संचालन सीख सकते है, उपकरण चित्र का अध्ययन कर सकते है, अपने कामकाज में सुधार के लिए मामूली संशोधन कर सकते है। मैंने इस सुविधा का लाभ उठाया।

अपने अर्जित ज्ञान के आधार पर मैंने पिकलिंग शॉप के डिस्केलिंग सॉल्ट बाथ को रि-डिज़ाइन कर एक नए उपकरण का निर्माण किया। यह सॉल्ट बाथ फर्नेस 09.09.1998 को आरंभ हुआ। तब से अब तक बिना किसी प्रमुख खराबी के निरंतर 24x7 घंटे चल रहा है। इसके आपूर्तकर्ता, मेसर्स कोलीन कॉर्पोरेशन ने इसका जीवनकाल 15 वर्ष बताया था। किंतु मेरे बताए संशोधन की वजह से इस मशीन का जीवनकाल बढ़ गया। इस साल यह दो दशक के सफल ऑपरेशन को पूरा करेगा।

मिधानि अपने कर्मचारियों का बहुत ध्यान रखती है। कर्मचारियों के बच्चों और आसपास के बच्चों के लिए मिधानि प्रबंधन ने कंपनी के आवस परिसर में बीपीडीएवी स्कूल चलाता है। शिक्षा के प्रसार

शेष पृष्ठ 30 पर

असीम संतोष का अनुभव

कहते हैं कि सब्र का फल मीठा होता है। मार्च 2011 में एमबीए करने के बाद 3 महीनों तक मैं घर पर पड़ा रहा। थोड़ा बेचैन हो रहा था। मेरी अभिलाषा प्रगतिशील संस्थानों में काम करने की थी। मैं समझता हूँ कि किसी प्रगतिशील कंपनी को अपने मेहनत से बड़ा करने में अधिक संतोष मिलता है। ऐसी ही एक कंपनी मिधानि में मैंने नामांकन दिया था। पता नहीं क्यूँ पर मुझे अंदर से यकीन था कि यह जगह मेरे लिए उपयुक्त होगी। करीब 1 महीने बाद मुझे साक्षात्कार के किए बुलाया गया। यूं तो यह मेरा पहला अवसर था, पर मैंने काफी अच्छा प्रदर्शन किया। 12 अगस्त 2011 को मैंने मिधानि में अपने कैरियर की शुरुआत की।

हम 12 प्रबंधन प्रशिक्षु मिधानि छात्रावास में ही रहते थे। कॉलेज छात्र से एक अधिकारी बनने में इस एक साल ने एक सेतु का काम किया। दिन-ब-दिन हम सब अपने विविधताओं को भूल कर मिधानि के रंग में रंगते जा रहे थे। मुझे अभी भी याद है हिंदी दिवस पर हमने जो नाटिका प्रस्तुत की थी। हम सभी साथ में एक लक्ष्य की ओर अग्रसर थे। हमारे छोटे-छोटे मतभेद कहीं लुप्त ही हो गए। इसके बाद हर अवसर पर हम सब हर परिस्थिति के सामने एक जुट हो कर खड़े रहे। चाहे प्रशिक्षण में होने वाली परीक्षाएँ हों या देश भ्रमण हो या फिर व्यक्तिगत समस्याएँ। हम सहकर्मी के स्तर के काफी ऊपर उठ कर करीबी दोस्त बन चुके थे। इस बात का गर्व हमें तब हुआ जब हमारे गुरु - प्रशिक्षण प्रभारी ने हमारे अगले प्रबंधन प्रशिक्षु दल के सामने हमारे दल की तारीफ़ें की और हमारे किस्से उन्हें सुनाए।

प्रशिक्षण के बाद जब मैंने सहायक प्रबंधक का कार्यभार सँभाला तो मिधानि एक बहुत बड़े परिवर्तन के दौर से गुज़र रही था। मिधानि ने ई.आर.पी में सारे कार्य करना शुरू किया था। क्योंकि ई.आर.पी पर काम करना पुराने तौर तरीकों से काफी अलग था, हर जगह काफी मुश्किलों का सामना करना पड़ रहा था। मुझे अभी भी याद है, वित्त वर्ष 2012-13 के खातों को बनाने के लिए वित्त विभाग के हम सभी कर्मचारियों को 24 घण्टों तक कार्यालय में ही रुकना पड़ा था !! 2013-14 में वित्त विभाग और खास कर के लागत अनुभाग ने अपनी जरूरतों को समझा और एक के बाद एक आई.टी विभाग की मदद से ई.आर.पी में असीम बदलाव और नए विकास किए। मेरा सौभाग्य था कि मुझे इस विकास कार्य में शामिल होने का मौका मिला। एक समय ऐसा था जब मैं लागत अनुभाग से ज्यादा आई.टी विभाग में पाया जाता था !!

उसके बाद से आज तक लागत अनुभाग ने हर साल अपने और अन्य संबंधित विभागों के लिए ई.आर.पी में नए विकास किए हैं जिससे मिधानि को अभिलेखन में काफी मदद मिली है।

प्रशिक्षण के दिनों से जो नाटिका लिखने और प्रस्तुत करने का दौर चला, वो सौभाग्य से आज भी जारी है। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस और हिंदी दिवस पर मानव संसाधन विभाग और हिन्दी विभाग कि मदद से आज तक मेरी लिखी हुई 7 नाटिकाएँ प्रस्तुत हो चुकी हैं। इन सभी को दर्शकों से काफी सराहना मिली है। इन सभी नाटिकाओं में सबसे यादगार रहेगी "ताजमहल का टेंडर"। ये नाटिका मिधानि द्वारा आयोजित टॉलिक (उ) के वार्षिक कार्यक्रम में हैदराबाद-सिकंदराबाद के उपक्रमों के निदेशकों के सामने प्रस्तुत हुई और काफी चर्चित हुई। निजी तौर पर मुझे इसी बहाने से अनेक लोगों के साथ काम करने का मौका मिला जिनसे आधिकारिक रूप से काम करने का मौका शायद कभी नहीं मिलता।

मेरे निजी जीवन पर भी मिधानि का बड़ा प्रभाव पड़ा है। मिधानि टाऊनशिप में मैंने पाँच साल गुजारे। वहाँ मैंने बहुत करीबी मित्र बनाए। मेरे सारे दोस्तों के जन्मदिन मेरे घर पर ही मनाए जाते थे। मिधानि टाऊनशिप की ढेर सारी यादें आज भी मेरी और मेरी पत्नी के जहन में है। 2015 में मुझे जीवन में पहली बार विदेश जाने का मौका मिला। इसके लिए मैं मिधानि प्रबंधन का शुक्रगुज़ार रहूँगा। वह अनुभव मेरे दिल में आज भी तरोताजा है।

कई लोगों ने मुझे कई बार पूछा कि मिधानि ही क्यों? तुम तो इससे से भी अच्छी जीविका चुन सकते थे। मैंने उन्हें एक ही जवाब दिया– मुझे इन सात सालों में आज तक यह महसूस नहीं हुआ कि मैंने मिधानि में आ कर कोई गलती की है। इसके विपरीत, मैंने इन सात सालों के सफर में कई अवसरों पर असीम संतोष का अनुभव किया है। मुझे गर्व है कि मैं देश की प्रगति में अपना पूरा योगदान दे रहा हूँ। मेरी भगवान से यही प्रार्थना है कि जब तक मैं मिधानि में हूँ, अपने कठिन परिश्रम से मिधानि को प्रगति की राह में अग्रसर रखूँ।

धन्यवाद।

एन वी एस पवन कुमार
उप-प्रबन्धक
वित्त विभाग

प्रमुख राष्ट्रीय कार्यक्रमों में सामरिक पदार्थों का सहभाग

धातुकर्म क्षेत्र के विशिष्ट हस्ताक्षर मिधानि के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक डॉ. दिनेश कुमार लेखी द्वारा सामरिक क्षेत्र में कंपनी की उपस्थिति और अन्य विस्तृत परिचालनों के संबंध में शुभयात्रा से की गई बातचीत का अंश

शु.या. : रक्षा, अंतरिक्ष और ऊर्जा के क्षेत्रों में मिधानि, एक कंपनी के रूप में दशकों से कार्य कर रही है। कृपया मिधानि द्वारा संचालित प्रमुख क्षेत्रों के संबंध में विस्तार से बताएं-

डॉ.लेखी: मिधानि की स्थापना 20 नवंबर, 1973 को सार्वजनिक क्षेत्र के उद्यम (पी एस ई) के रूप में किया गया थी। इसके उत्पादन संयंत्र की स्थापना हैदराबाद में की गई। हमारा मिशन: " राष्ट्रीय सुरक्षा और सामरिक महत्व के उत्पादों और महत्वपूर्ण मिश्र धातुओं के अनुसंधान, विकास, विनिर्माण एवं उनकी आपूर्ति में आत्म-निर्भर बनना है। " मिधानि मुख्य रूप से रक्षा, अंतरिक्ष, ऊर्जा और वाणिज्यिक क्षेत्र से संबंद्ध कंपनी है। भारत सरकार (भारत सरकार) द्वारा "रक्षा के लिए तैयारी" हेतु अधिक महत्व दिए जाने के कारण, मिधानि ने रक्षा क्षेत्र पर अधिक ध्यान केंद्रित किया है। वर्तमान में मिधानि के अधिकांश उत्पाद वायु, नौसेना और थल बलों आदि सामरिक क्षेत्रों और उनके अनुप्रयोगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करते हैं।

इसके अलावा, मिधानि द्वारा निजी वाणिज्यिक क्षेत्र को भी विशेष मिश्र धातुओं की आपूर्ति की जाती है जिसका अंततः हमारे देश के रक्षा और परमाणु ऊर्जा क्षेत्रों में ही उपयोग किया जाता है। परंपरागत रूप से रक्षा एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में अंतरिक्ष और ऊर्जा क्षेत्र का मिधानि की वृद्धि में महत्वपूर्ण योगदान रहा है।

हमारा उत्पाद पोर्टफोलियो तीन प्रमुख क्षेत्रों से संबंधित हैं:

- सुपर अलॉय्स: लोह, कोबाल्ट, निकल बेस
- विशेष अलॉय्स (मिश्र धातु) : फेर्रिटिक, ऑस्टेनिटिक, मार्टेन्सिटिक, मैरेजिंग एंड प्रेसिपिटेशन हार्डेन्ड
- टाइटेनियम अलॉय्स: व्यावसायिक रूप से शुद्ध टाइटेनियम और टाइटेनियम अलॉय्स

उत्पाद पोर्टफोलियो

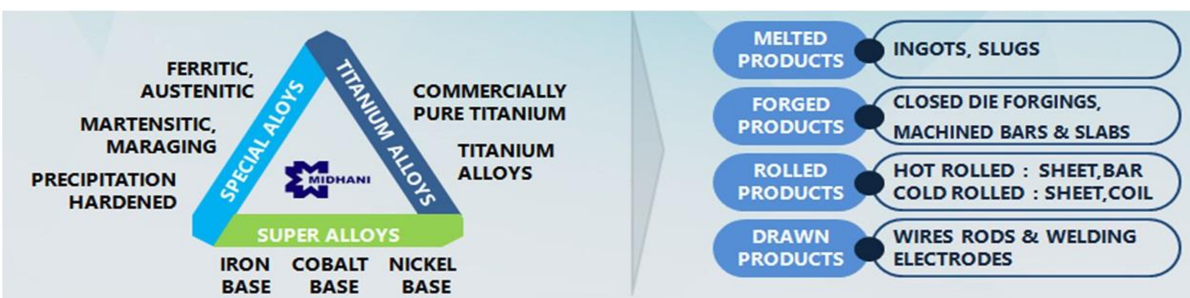

शु.या. : गत वर्ष मिधानि का आईपीओ जारी हुआ है। कृपया आईपीओ और लिस्टिंग के संबंध में अपना अनुभव साझा करें। मिधानि ऐसे सार्वजनिक उपक्रमों में से एक है जिन्होंने बाजार पूंजीकरण में वृद्धि की है, जो कि संख्या में कम हैं। इसलिए यह भी बताएँ कि आपकी कंपनी की सफलता का राज क्या है?

डॉ.लेखी: हम आईपीओ की पूरी प्रक्रिया पर मार्गदर्शन के लिए निवेश विभाग और सार्वजनिक संपत्ति प्रबंधन विभाग (डीआईपीएएम) तथा रक्षा मंत्रालय के अधिकारियों के आभारी हैं। वित्तीय वर्ष 17-18 में भारत सरकार द्वारा 26% अपनी भागीदारी के आहरण के बाद मिधानि एक सार्वजनिक लिमिटेड कंपनी बन गई। हमारे शेयर 04 अप्रैल, 2018 को बीएसई और एनएसई दोनों में सूचीबद्ध हुए। मिधानि सबसे अच्छा प्रदर्शन करने वाले आईपीओ में से एक है । जब हम अपने साथी कंपनियों के साथ तुलना कर देखते हैं, तो पाते हैं कि हमारे शेयरों ने लगातार अच्छा कारोबार किया है। इश्यू कीमत (रु. 90) की तुलना में अधिक है जो कंपनी के प्रबंधन और अच्छे व्यापार प्रदर्शन में निवेशकों के विश्वास को दर्शाता है। लिस्टिंग के समय बाजार पूंजीकरण रु. 1686.06 करोड़ था जिसे 20 अप्रैल, 2018 को रु. 3326.22 करोड़ (वृद्धि ~ 100%) की बढ़ोत्तरी किए साथ रिकोर्ड किया गया। हम वित्त वर्ष 18-19 में भारत में सर्वश्रेष्ठ बाजार मूल्य निर्माण (मूल्य में लगातार 50 +% वृद्धि) करने वाली कंपनियों में से एक हैं।

आपकी कंपनी के लिए अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी) कितना महत्वपूर्ण है?

मिधानि जैसी कंपनी के लिए अनुसंधान एवं विकास (आर एंड डी) स्थिरता और विकास के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। आर एंड डी के लिए हमारे ध्यान केंद्रित क्षेत्र हैं: उत्पाद विकास, प्रक्रिया डिजाइन और नए अलॉय्स का विकास। प्रति वार्षिक लगभग ~ 3% राजस्व का निवेश अनुसंधान संबंधी गतिविधियों में किया जाता है। हमारे पास आंतरिक अनुसंधान एवं विकास की टीम है जो विशेष धातुओं और मिश्र धातुओं के डिजाइन और विकास में विशेषज्ञता रखती है। यह टीम स्वीकार्य लागत पर अपेक्षित मांगों को पूरा करने के लिए टीम लगातार उत्पाद की गुणवत्ता में सुधार और प्रक्रिया नवाचार की दिशा में काम करती है।

इसके अलावा, हमारे पास "प्रौद्योगिकी सलाहकार बोर्ड" है जिसमें धातु और सामग्री के क्षेत्र में प्रतिष्ठित व्यक्ति सदस्य हैं। ये सदस्य हमें नए उत्पादों के विकास के लिए आवश्यक प्रौद्योगिकियों पर मार्गदर्शन प्रदान करते हैं।

मिधानि द्वारा विकसित अलॉय्स के विवरण पर प्रकाश डालें।

हमने राष्ट्रीय महत्व के कार्यक्रमों के लिए उच्च प्रदर्शन मिश्र धातुओं के 250 से अधिक ग्रेडों का डिजाइन, विकास और आपूर्ति की है।

क्षेत्र	अलॉय्स विकसित	अनुप्रयोग क्षेत्र
रक्षा	• उच्च शक्ति न्यून अलॉय्स स्टील्स • वायु सख्त कवच स्टील • उच्च संतृप्ति चुंबकीय मिश्र धातु निकल आधार मिश्र • पी एच स्टेनलेस स्टील • निकेल-कॉपर अलॉय्स	• हॉवित्जर और अर्जुन टैंक के गन बैरल • आर्मर • मिसाइल नियंत्रण प्रणाली • निर्भय मिसाइल के लिए घटक • ब्रह्मोस हार्डवेयर • समुद्री अनुप्रयोग
अंतरिक्ष	• निकल आधार सुपर अलॉय्स • कोबाल्ट बेस सुपर अलॉय्स	• अर्ध क्रायो-इंजन भागों में • उच्च शक्ति फास्टनरों में
वैमानिकी	• उच्च शक्ति बीटा टाइटेनियम अलॉय्स • कार्बोराईजिंग स्टील	• एयर फ्रेम संरचना, लैंडिंग गियर और कंप्रेसर डिस्क • हेलीकाप्टर संचरण असेंबली
ऊर्जा	• सुपर अलॉय्स • ऊष्म अपक्षरण प्रतिरोध अलॉय्स	• एयूएससी शक्ति अनुप्रयोग, और रिएक्टिविटी नियंत्रण तंत्र • थर्मल पावर अनुप्रयोग
वाणिज्यिक	• फेरो टाइटेनियम • कोल्ड रोल्ड ग्रेन ओरिएंटेड (CRGO) स्टील	• डी-ऑक्सीकरण और मिश्र धातु बनाना • ट्रांसफार्मर कोर

क्या मिधानि ने अपने नवाचारों को पेटेंट करवाकर सुरक्षित कर लिया है ? यह भी बताएँ कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के संबंध में मिधानि का क्या विचार है?

बहुत प्रासंगिक सवाल आपने पूछा है। धन्यवाद। आज के परिदृश्य में अपने नवाचारों को पेटेंट करवाना बहुत ही महत्वपूर्ण हो गया है। हम बौद्धिक संपदा अधिकार (आईपीआर) में बड़े पैमाने पर निवेश कर रहे हैं। वित्त वर्ष 18-19 में, हमारे अधिकारियों को आईपीआर की जटिलताओं पर प्रशिक्षित किया गया था। वर्ष के दौरान लगभग 50 ट्रेडमार्क / कॉपी राइट जमा किए गए। हमें अगले 2-3 वर्षों में कुछ सकारात्मक परिणाम देखने की उम्मीद है।

कृत्रिम बुद्धिमत्ता (एआई) के संबंध में हमने उद्योग विशेषज्ञों एवं शिक्षाविदों को बुलवाकर एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन किया था। इस क्षेत्र में काम करने के लिए मिधानि में एक टास्कफोर्स का गठन किया गया है। आने वाले दिनों में हम नए अलॉय्स और विशेष स्टील के कुछ ग्रेडों के पूर्वानुमानित मॉडल विकसित करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का लाभ उठाएंगे।

मिधानि द्वारा देशीकरण के प्रयासों का विवरण भी बताइए।

मिधानि ने इन-हाउस डिज़ाइन क्षमता और स्थानीय विक्रेताओं (MSE) के सहयोग से स्वदेशी रूप से उपकरणों का विकसित किया है। ये उपकरण मिश्र धातुओं की विस्तृत श्रृंखला के विनिर्माण के लिए डिज़ाइन किए गए हैं।

मेक इन इंडिया कार्यक्रम

उपकरण	उपयोगी क्षेत्र
वैक्यूम आर्क री-मेल्टिंग (10 टन)	विशेष अलॉय्स की मेल्टिंग
इलेक्ट्रो स्लैग री-मेल्टिंग (20 टन)	विशेष अलॉय्स की मेल्टिंग
एलपीजी फर्नेस (25 टन)	विभिन्न अलॉय्स का ऊष्म उपचार
ऑटो बिलेट ग्राइंडिंग मशीन	सुपर अलॉय्स के ऊष्म प्रसंस्करण के दौरान मध्यवर्ती ग्रैंडिंग

कृपया हमें बताएँ कि क्या मिधानि में ऐसे कुछ छोटे-छोटे पहल किए गए जो बड़े परिणाम प्राप्त करने में सहायक सिद्ध हुए ?

आपको बताना चाहूंगा कि कड़ी वैश्विक प्रतिस्पर्धा के बावजूद, पिछले कुछ वर्षों से मिधानि लाभ कमाने वाली कंपनी बनी हुई है। परिचालन के कुशल रहने के लिए हमने जो उपाय किए हैं, उनमें से एक छोटा मगर बहुत बढ़िया उपाय रहा विभिन्न ऊर्जा संरक्षण उपायों पर ध्यान केंद्रित करना। इससे हम विशिष्ट ऊर्जा खपत को कम करने में सफल रहे। उत्पादन प्रक्रिया की ऊर्जा दक्षता में क्रमिक वृद्धि हुई और प्रति यूनिट बिक्री उत्पादन में खपत ऊर्जा में कमी आई। इसके अलावा हमने स्क्रैप का पुनर्चक्रण, प्रक्रिया के मापदंडों को ठीक करके उत्पाद की पैदावार में सुधार, सूक्ष्म-स्तरीय उत्पादन समय-निर्धारण पर ध्यान केंद्रित करना, आउटसोर्सिंग द्वारा कुछ कम महत्वपूर्ण परिचालनों का संचालन आदि पहल किए जनसे परिचालन लाभ में वृद्धि हुई।

मिधानि, मिनी-रत्न, श्रेणी- I सार्वजनिक क्षेत्र की एक कंपनी है तो अवश्य ही नैगमिक सामाजिक दायित्व के अंतर्गत विभिन्न सामाजिक कार्य किए जाते होंगे। उन कार्यों की भी जानकारी दीजिए।

जी हाँ। आपने सही कहा। मिधानि द्वारा नैगमिक सामाजिक दायित्व, सी एस आर, के अंतर्गत कई कार्य किए जाते हैं। इन्हें हम सामाज के प्रति अपने दायित्व के रूप में देखते हैं। इससे अर्जित धन का बेहतर वितरण किया जा सकता है। नैतिक प्रणाली और सतत प्रबंधन प्रथाओं के कार्यान्वयन और एकीकरण के माध्यम से मिधानि हितधारकों को विभिन्न क्षेत्रों में सुविधाएँ उपलब्ध की जाती हैं। जैसे:-

- कौशल विकास और शिक्षा
- स्वास्थ्य और स्वच्छता
- पर्यावरण और स्थिरता
- स्त्री सशक्तीकरण
- अनुसंधान व सर्वोत्तम प्रथाओं को साझा करने के लिए एक मंच प्रदान करने और विशेष सामग्रियों पर प्रशिक्षण प्रदान करने के उद्देश्य से हमने एक अत्याधुनिक कौशल विकास केंद्र की भी स्थापना की है : “मिधानि उत्कृष्टता केंद्र - विशेष सामग्री "।

मिधानि के लिए आपकी भविष्य की रणनीति क्या है?

वित्तीय वर्ष 19-20 बहुत आशाजनक लगता है। हमारे हाथ में रु. 1800+ करोड़ हैं। इससे हमारे ऑर्डर बुक स्थिति काफी मजबूत हो गई है। इसके अलावा, हमने बहुराष्ट्रीय और भारतीय कंपनियों के साथ कई साझेदारियां करने जा रहे हैं जिससे नए क्षेत्रों में प्रवेश करने के हमारे मौके बढ़ जाएंगे। जैसे कि बिजली उत्पादन, तेल और गैस अनुप्रयोग; हमने ट्यूबासेक्स (Tubacex) के साथ योगात्मक विनिर्माण के लिए पाउडर का विकास करने और पाउडर धातुकर्म एवं नए पदार्थों के लिए अंतर्राष्ट्रीय उन्नत अनुसंधान केंद्र के साथ साझेदारी के लिए संविदा करार किया है। पिछले दो वर्षों के दौरान हमने विभिन्न क्षेत्रों निवेश किया है जिससे आगामी वर्ष में हमें लाभ मिलना शुरू हो जाएगा। जैसेः

- रोहतक में आर्मर संयंत्र: मिधानि के रोहतक संयंत्र में वाहन एवं कार्मिक आर्मर उत्पादों का वाणिज्यिक उत्पादन आरंभ होगा जिससे मिधानि बहु-स्थानीय कंपनी बन जाएगी।
- स्प्रिंग संयंत्र: हैदराबाद में वर्तमान में स्थित संयंत्र में केवल हेलिकल कंप्रेशन स्प्रिंग के विनिर्माण के लिए सुविधा की स्थापना से भारतीय रेलवे, मेट्रो कोच तथा अर्थ मूविंग उपकरणों आदि की विभिन्न आवश्यकताओं की पूर्ति की जा सकेगी।
- संयुक्त उद्यम: एल्युमिनियम अलॉय संयंत्र मिधानि और एन ए एल सी ओ का संयुक्त)उद्यम (को सरकार से अनुमोदन प्राप्त किया जा चुका है।

पृष्ठ.25 से जारी

मिधानि प्रबंधन कर्मचारियों को.........

के लिए मिधानि की यह एक बड़ी सेवा है। इस स्कूल ने मिधानि के कर्मचारियो के बच्चों को भारत के शिक्षित नागरिक बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। इस कार्य के कर्मचारीगण मिधानि प्रबंधन के हमेशा ऋणी रहेंगे। इस स्कूल में पढ़ने वाले कर्मचारियों के कई बच्चों ने अपने क्षेत्रों में उत्कृष्ट प्रदर्शन किया है। अंततः मैं यह गर्व के साथ कहना चाहता हूं कि अपने सेवानिवृत्त के समय मिधानि का और मेरा साथ 50 वर्षों का हो जाएगा। शायद ही किसी कर्मचारी की ऐसी उपलब्धी होगी।

के पी एस मोहना कृष्ण
अ.म.प्र.
पी-3

हिंदी मासोत्सव-2018 का उद्घाटन करते हुए उद्यम के निदेशक (वित्त) श्री संजीव सिंघल। साथ में हैं गायन प्रतियोगिता की निर्णायक श्रीमती शुभ्रा मोहंतो, संगीत प्राध्यापिका, संगीत साधना, हैदराबाद

स्वच्छ भारत अभियान

स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत सरकार द्वारा देश को स्वच्छता के प्रतीक के रुप में पेश करना है। स्वच्छ भारत का सपना महात्मा गाँधी के द्वारा देखा गया था जिसके संदर्भ में गाँधीजी ने कहा कि, ”स्वच्छता स्वतंत्रता से ज्यादा जरुरी है” जैसा कि उन्होंने स्वच्छ भारत का सपना देखा था, उन्होंने कहा कि निर्मलता और स्वच्छता दोनों ही स्वस्थ और शांतिपूर्ण जीवन का अनिवार्य भाग है। लेकिन दुर्भाग्य से भारत आजादी के 71 साल बाद भी इन दोनों लक्ष्यों से काफी पीछे है, इसीलिये भारत सरकार पूरी गंभीरता से बापू की इस सोच को हकीकत का रुप देने के लिये देश के सभी लोगों को इस मिशन से जोड़ने का प्रयास कर रही है जिससे विश्व भर में ये सफल हो सके।इस मिशन को अपने प्रारंभ की तिथि से बापू की 150वीं पूण्यतिथि (2 अक्दूबर 2019) तक पूरा करने का लक्ष्य है।

स्वच्छ भारत अभियान क्या है ?

स्वच्छ भारत अभियान एक राष्ट्रीय स्वच्छता मुहिम है जो भारत सरकार द्वारा स्थापित किया गया है, ये एक बड़ा आंदोलन है जिसके तहत भारत को 2019 तक पूर्णत: स्वच्छ बनाना है। इसमें स्वस्थ और सुखी जीवन के लिये महात्मा गाँधी के स्वच्छ भारत के सपने को आगे बढ़ाया गया है। इस मिशन को 2 अक्टूबर 2014(145वीं जन्म दिवस) को बापू के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर आरंभ किया गया है और 2 अक्टूबर 2019 (बापू के 150वीं जन्म दिवस) तक पूरा करने का लक्ष्य रखा गया है । भारत के शहरी विकास तथा पेयजल और स्वच्छता मंत्रालय के तहत इस अभियान को ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में लागू किया गया है।

स्वच्छ भारत अभियान की जरुरत

अपने उद्देश्य की प्राप्ति तक भारत में इस मिशन की कार्यवाही निरंतर चलती रहनी चाहिये। भौतिक, मानसिक, सामाजिक और बौद्धिक कल्याण के लिये भारत के लोगों में इसका एहसास होना बेहद आवश्यक है। ये सही मायनों में भारत की सामाजिक स्थिति को बढ़ावा देने के लिये है जो हर तरफ स्वच्छता लाने से शुरु किया जा सकता है। यहाँ नीचे कुछ बिंदु उल्लिखित किए जा रहे है जो स्वच्छ भारत अभियान की आवश्यकता को दिखाते है।

- ये बेहद जरुरी है कि भारत के हर घर में शौचालय हो साथ ही खुले में शौच की प्रवृति को भी खत्म करने की आवश्यकता है।
- हाथ के द्वारा की जाने वाली साफ-सफाई की व्यवस्था का जड़ से खात्मा जरुरी है।
- नगर निगम के कचरे का पुनर्चक्रण और दुबारा इस्तेमाल, सुरक्षित समापन, वैज्ञानिक तरीके से मल प्रबंधन को लागू करना।
- खुद के स्वास्थ्य के प्रति भारत के लोगों की सोच और स्वाभाव में परिवर्तन लाना और स्वास्थ्यकर साफ-सफाई की प्रक्रियों का पालन करना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले लोगों में वैश्विक जागरुकता का निर्माण करने के लिये और सामान्य लोगों को स्वास्थ्य से जोड़ने के लिये।
- पूरे भारत में साफ-सफाई की सुविधा को विकसित करने के लिये निजी क्षेत्रों की हिस्सेदारी बढ़ाना।
- भारत को स्वच्छ और हरियाली युक्त बनाना।
- ग्रामीण क्षेत्रों में जीवन की गुणवत्ता में सुधार लाना।
- स्वास्थ्य शिक्षा कार्यक्रमों के माध्यम से साफ-सफाई के प्रति जागरुक करना।

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत अभियान

शहरी क्षेत्रों में स्वच्छ भारत मिशन का लक्ष्य हर नगर में ठोस कचरा प्रबंधन सहित लगभग सभी 1.04 करोड़ घरों को 2.6 लाख सार्वजनिक शौचालय, 2.5 लाख सामुदायिक शौचालय उपलब्ध कराना है। सामुदायिक शौचालय के निर्माण की योजना रिहायशी इलाकों में की गई है जहाँ पर व्यक्तिगत घरेलू शौचालय की उपलब्धता मुश्किल है इसी तरह सार्वजनिक शौचालय की प्राधिकृत स्थानों पर जैसे बस अड्डों, रेलवे स्टेशन, बाजार आदि जगहों पर। शहरी क्षेत्रों में स्वच्छता कार्यक्रम को पाँच वर्षों के अंदर 2019 तक पूरा करने की योजना है।

ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन

ग्रामीण स्वच्छ भारत मिशन एक ऐसा अभियान है जिसमें ग्रामीण भारत में स्वच्छता कार्यक्रम को अमल में लाना है। इसका मुख्य उद्देश्य ग्रामीणों को खुले में शौच करने की मजबूरी से रोकना है, इसके लिये सरकार ने 11 करोड़ 11 लाख शौचालयों के निर्माण के लिये एक लाख चौतिस हजार करोड़ की राशि खर्च करने की योजना बनाई है। ध्यान देने योग्य है कि सरकार ने कचरे को जैविक खाद् और इस्तेमाल करने लायक ऊर्जा में परिवर्तित करने की भी है। इसमें ग्राम पंचायत, जिला परिषद, और पंचायत समिती की

अच्छी भागीदारी है। निम्नलिखित स्वच्छ भारत मिशन(ग्रामीण) का लक्ष्य है:

- ग्रामीण क्षेत्रों मे रह रहे लोगों के जीवन स्तर में सुधार लाना।
- 2019 तक स्वच्छ भारत के लक्ष्य को पूरा करने के लिये ग्रामीण क्षेत्रों में साफ-सफाई के लिये लोगों को प्रेरित करना।
- जरुरी साफ-सफाई की सुविधाओं को निरंतर उपलब्ध कराने के लिये पंचायती राज संस्थान, समुदाय आदि को प्रेरित करते रहना चाहिये।
- ग्रामीण क्षेत्रों में ठोस और द्रव कचरा प्रबंधन पर खासतौर से ध्यान देना तथा उन्नत पर्यावरणीय साफ-सफाई व्यवस्था का विकास करना जो समुदायों द्वारा प्रबंधनीय हो।
- ग्रामीण क्षेत्रों में निरंतर साफ-सफाई और पारिस्थितिक सुरक्षा को प्रोत्साहित करना।

निष्कर्ष

इस तरह हम कह सकते है कि 2019 तक भारत को स्वच्छ और हरा-भरा बनाने के लिये स्वच्छ भारत अभियान एक स्वागत योग्य कदम है। जैसा कि हम सभी ने कहावत में सुना है 'स्वच्छता भगवान की ओर अगला कदम है'। हम विश्वास के साथ कह सकते है कि अगर भारत की जनता द्वारा प्रभावी रुप से इसका अनुसरण किया गया तो आने वाले चंद वर्षों में स्वच्छ भारत अभियान से पूरा देश भगवान का निवास स्थल सा बन जाएगा। चूँकि स्वच्छता से ईश्वर का गर्मजोशी से स्वागत शुरु हो चुका है तो हमें भी अपने जीवन में स्वच्छता को जारी रख उनको बनाये रखने की आवश्यकता है, एक स्वस्थ्य देश और स्वस्थ्य समाज को जरुरत है कि उसके नागरिक स्वस्थ्य रहें तथा हर व्यवसाय में स्वच्छ हो।

अब्दुल सादिक अलि
उप महाप्रबंधक
विपणन

मिधानि राजभाषा कार्यान्यव को गति प्रदान करें, कैसे ? विषय पर चर्चा कार्यक्रम

दि.14 सितंबर को हिंदी दिवस के उपलक्ष्य में " मिधानि राजभाषा कार्यान्यव को गति प्रदान करें, कैसे?" विषय पर चार्चा कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता उद्यम के निदेशक (उत्पादन एवं विपणन) डॉ संजय कुमार झा ने की। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि के रूप में हिंदी शिक्षण योजना के सेवा निवृत्त सहायक निदेशक श्री देवीदास जी ने मिधानि के कर्मचारियों को राजभाषा कार्यन्वयन के लिए मार्ग दर्शन प्रदान किया और उनकी जिज्ञासाओं का समाधान किया। कार्यक्रम में मिधानि के कर्मचारियों ने राजभाषा कार्यान्वयन के संबंध में अपने सुझाव व्यक्त किए। कार्यक्रम का शुभारंभ मिधानि गीत से किया गया। अवसर पर निदेशक वित्त संजीव सिंघल ने भी अपने विचार व्यक्त किए। कार्यक्रम के सफल आयोजन में राजभाषा कार्यकारिणी समिति के सदस्यों ने सक्रिय रूप से भाग लिया।

उत्कृष्टता के नैतिक व आदर्शवादी उपाय

दर्शनशास्त्र के अनुसार ' एथिक ' शब्द की उत्पत्ति लैटिन-शब्द 'एथोस' से हुई है, जिसका अर्थ है-चरित्र । अत: एथिक शब्द का अर्थ हुआ मनुष्यों के चरित्र, क्रियाकलाप की आदतें अथवा व्यवहार । ' मॉरल ' शब्द की उत्पत्ति लैटिन के मोर्स से हुई है अर्थात् परंपराएं अथवा पद्धतियां । इसलिए हम कह सकते हैं कि, एथिक का वास्तविक अर्थ है- परंपरा अथवा पद्धति-विज्ञान । इसे नैतिक-दर्शन के रूप में भी जाना जाता है ।

नैतिकता क्या है ?

- अन्य लोगों के साथ हमारे संबंधों की व्याख्या ।
- अन्य व्यक्तियों और हमारे बीच के संबंधों की समझ ।
- हमारे भीतर से सर्वश्रेष्ठ पाने की कला ।

हममें से हरेक को, 'शून्य' एथिक्स से शुरुआत करनी पड़ी । एक थोले-थाले शिशु के रूप में जन्मे, हमारे (इंसान) के पास कुछ वर्षों का ग्रेस (राहत) समय था । उस समय तक, किसी आदर्श अथवा नैतिक-आचरण के सामाजिक-मानकों से हम मुक्त होते हैं । परंतु कुछ समय बाद, हमारी अपने व्यवहार के प्रति जवाबदारी बन जाती है । जिम्मेदार आचरण के लिए, हम सराहे जाते हैं, जबकि गैरजिम्मेदारी के लिए दंडित भी होते हैं । हम अपने खुद के आचरण के लिए दूसरों को दोषी नहीं ठहरा सकते, क्योंकि नैतिकता एक व्यक्तिगत अनुशासन का पर्याय होती है ।

उत्कृष्टता !

- यह एक प्रक्रिया होती है न कि, कोई परिणाम । उत्कृष्टता चरित्र, निष्ठा, निष्पक्षता, ईमानदारी और हमेशा सही करने की प्रतिबद्धता का सम्मिश्रण होती है ।

किसी को, मात्र अपनी प्रतिभा अथवा, तकनीकी सुधारों के बलबूते, उत्कृष्टता हासिल नहीं होती, चाहे हमारे पास जितना भी पैसा हो, हम उत्कृष्टता या एक्सेलेंस पाने के तरीके को कभी खरीद नहीं सकते । हमें अंत:करण को मजबूत करने वाली नैविक-शक्ति की आवश्यकता होगी । इसे नियमित अभ्यास से हासिल करना होता है, जैसे ही हम उच्चतर नैतिक मूल्यों को हासिल करने हेतु प्रयास करना छोड़ देते हैं वैसे ही हमारे मानकों में गिरावट आने लगती है ।

एक संगठनात्मक संरचना के अंतर्गत जब हम नैतिक-मूल्यों की बात करते हैं तो, हमें यह समझना होगा कि, संगठन, निर्धारित लक्ष्यों को हासिल करने हेतु एकत्रित व्यक्तियों का समूह होता है, इसलिए हमारे संगठन के संघटकों तो उत्कृष्टता के मूल्यों को हासिल करने हेतु प्रयास करना होगा ।

उपर्युक्त संदर्भ में, एक प्रश्न अनुत्तरित रह जाता है कि नैतिकता व आदर्शों पर कैसे ध्यान केंद्रित किया जाए और उन्हें बनाए रखने हेतु निरंतर संवेदनात्मक शुद्धता को विकसित करने हेतु क्या किया जाए । इस संबंध में, वी.एस.सी. हैदराबाद के पुरोगामी प्रयास हमारी सहायता कर सकते हैं । एक बार सौभाग्यवश मुझे हमारे सतर्कता विभाग द्वारा वी.एस.सी. हैराबाद में, सचिव के रूप में भेजा गया । उस दौरान वहां के वरिष्ठ बुद्धिजीवियों से बातचीत करने का अवसर मिला । वहां मैंने, नैतिक आचरण के संबंध में सर्वप्रथम चर्चा की ।

भ्रष्टाचार आर्थिक कारणों वाली तकनीकीसमस्या मात्र नहीं है । भ्रष्टाचार वास्तव में एक नैतिक मुद्दा है जिसे संयुक्त राष्ट्र के भ्रष्टाचार विरोधी कन्वेंशन ने भी रेखांकित किया है । इसलिए, सरकारी सेवकों के बीच आदर्शवादी एवं नैतिक सिद्धांतों के पोषण पर अधिक बल दिया जाना चाहिए । अनुच्छेद 8 के तहत राज्यों के लिए यह अनिवार्यता रखी गई है कि वे अपने कर्मचारियों / अधिकारियों के भीतर निष्ठा, ईमानदारी और जिम्मेदारी की भावना को विकसित करें । राज्यों द्वारा सरकारी सेवकों के लिए, आचरण-संहिता का निर्धारण तथा अन्य नवप्रर्वतक उपाय जैसे-सरकारी सेवकों द्वारा भ्रष्टाचार के मामलों के बारे में उपयुक्त प्राधिकरणों को शिकायत, अपनी संपत्तियों, प्राप्त किए गए उपहारों, निवेशों तथा अन्य साधनों की घोषणा करने के भी अनुदेश दिये गए है ।

एस. नर्सिंग राव
अपर महाप्रबंधक
सुरक्षा एवं प्रशासन

सर्वसम्मति से स्वीकृत राष्ट्रभाषा है हिन्दी

भाषा ध्वनि संकेतों को कहते हैं, जिसके द्वारा मनुष्य अपने विचारों का आदान प्रदान करता हैं। यह वह समन्वय सूत्र है जिसके द्वारा व्यक्ति समाज का सार्थक सदस्य बनता है। जब कोई भाषा विकसित होकर संपूर्ण राष्ट्र की संपर्क भाषा बन जाती है, तो वह राष्ट्रभाषा का रूप ले लेती है। बिना राष्ट्रभाषा के कोई राष्ट्र विकसित नहीं हो सकता। राष्ट्रभाषा जनता की भाषा होती है। हमारा देश एक विशाल देश है। यहां अनेक प्रान्त है और अलग-अलग प्रान्तों में अपनी अलग स्थानीय भाषाएं है। इनमें हिंदी और उसकी बोलियां एक विस्तृत भाग में बोली जाती है और इसे हमारी राष्ट्र भाषा के रूप में सर्वसम्मति से स्वीकृत और स्थापित किया गया है।

भाषाओं के उद्यान में हिंदी ऐसा पुष्प है जो माधुर्य, सौन्दर्य और सुगंध से परिपूर्ण है। हिंदी में जैसा बोला जाता है वैसा ही लिखा जाता है। बोले जाने वाले शब्दों में और लिखे जाने वाले अक्षरों में कोई अंतर नहीं होता है। उनसे एकरुपता होती है, विविधता नहीं। उदाहरणार्थ, हम 'कोण' बोलेंगे तो हिन्दी में लिखेंगे भी 'कोण' ही, 'ण' को हम 'ण' ही लिखेंगे, 'न' नहीं। परन्तु उर्दु, अरबी, फ्रेंच और अंग्रेजी भाषा में 'ण' को 'न' ही लिखा जायेगा।

'हिंद' शब्द की उत्पत्ति – वास्तव में 'हिंदी' शब्द 'सिन्धु' से उद्यत हुआ है। यह सिन्ध नदी के आस-पास की भूमि का नाम है। ईरानी में 'स' का उच्चारण 'ह' होता है, इसलिए 'सिंधु' का रूप 'हिन्दु' हो गया तथा 'हिंद' पूरे भारत के लिए प्रयुक्त होने लगा और प्रकारान्तर में हिंदी शब्द अस्तित्व में आया।

आज हिंदी विश्व में सर्वाधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है। यह राष्ट्रभाषा, राजभाषा, सम्पर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पार कर विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। भाषा विकास के क्षेत्र से जुडे वैज्ञानिकों की भविष्यवाणियां हिंदी प्रमियों के लिए बहुत उत्साहजनक है जिनके अनुसार आने वाले समय में विश्वस्तर पर अन्तर्राष्ट्रीय महत्व की जो चन्द भाषाएं होंगी। उनमें हिंदी भी प्रमुख होगी।

हिंदी भाषा की विशेषताएं एवं शक्ति

- संसार की उन्नत भाषाओं में हिंदी सबसे अधिक व्यवस्थित भाषा है।
- यह बहुत ही सहज और सरल भाषा है।
- यह सबसे अधिक लचीली भाषा है।
- हिंदी विश्व की सर्वाधिक तीव्रता से प्रसारित हो रही भाषाओं में से एक है।
- हिंदी का शब्दकोश बहुत विशाल है और इसमें एक एक भाव को व्यक्त करने के लिए सैंकडों शब्द है।
- हिंदी को लिखने के लिए प्रयुक्त देवनागरी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक है।
- हिंदी बोलने एवं समझने वाली जनसंख्या आज साठ करोड़ से भी अधिक है।
- हिंदी विश्व की तीन सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषाओं में से एक है।
- हिंदी साहित्य सभी दृष्टियों से बहुत समृध्द है।
- हिंदी आम जनता से जुड़ी भाषा है तथा आम जनता हिंदी से जुड़ी हुई है।
- हिंदी भारत के स्वतंत्रतासंग्राम की वाहिका और वर्तमान - में देशप्रेम का अभूर्त वाहन है।

भारत एक विविधताओं से परिपूर्ण राष्ट्र होते हुए भी अपनी एक-सांस्कृतिक चेतना के लिए विश्वविख्यात है। हमारी संस्कृति किसी धर्म या जाति की नहीं अपितु हमारे भारतीय होने का द्योतक है। हम गर्व से स्वीकारते हैं कि हम हिंदी भाषी राष्ट्र है। भारत में 'अनेकता में एकता' का स्वर हिंदी के माध्यम से ही गूंजता है। एक भाषा ही तहजीब का विकास करती है, सभी देशों की अपनी एक मूल भाषा होती है, जिसका सम्मान करना देशवासियों का कर्तव्य है। भारतेन्दु हरिचन्द्र ने कहा है –'निज भाषा उन्नति अहै, सब भाषा को भूल। बिन निज भाषा ज्ञान के मिटै, न हिय को शूल'

शुभादीप घोष
उप महा प्रबंधक
क्रय विभाग

हिंदी राष्ट्र की अभिव्यक्ति है

प्रस्तावना: हिंदी विश्व में बोली जाने वाली प्रमुख भाषाओं में से एक है। विश्व की प्राचीन, समृद्ध और सरल भाषा होने के साथ-साथ हिंदी हमारी 'राष्ट्रभाषा' भी है। हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा और भारत की सबसे अधिक बोली और समझी जाने वाली भाषा है। हिंदी दुनियाभर में हमें सम्मान भी दिलाती है। यह भाषा है हमारे सम्मान, स्वाभिमान और गर्व की। हिंदी ने हमें विश्व में एक नई पहचान दिलाई है:-

'हिंदी का सम्मान है देश का सम्मान '

इतिहास: हिंदी भाषा का इतिहास लगभग एक हजार वर्ष पुराना है। वैदिक संस्कृत, प्राकृत, पाली, अपभ्रंश आदि पड़ावों से गुजरकर हिंदी भारतवासियों के दिल की धडकन बनी। हालांकि सभी सम्मानित भाषाएं संस्कृत भाषा की देनदार हैं। जिस देश की अपनी कोई भाषा नहीं है वह देश गूंगा व बहरा है। एक समय था जब देश में संवाद की भाषा देववाणी अर्थात संस्कृत थी। यदि भारत की भाषाओं का इतिहास उठाकर देखें तो पता चलता है कि हिंदी किसी न किसी रूप में अपनी सहोदर भाषाओं को अपना सहयोग प्रदान करती रही है। भारत में अनेक राज्य हैं। उन राज्यों की अपनी अलग-अलग भाषाएं है। इस प्रकार भारत एक बहुभाषी राष्ट्र है। लेकिन स्वतंत्रता के बाद भारतसरकार को एक राजभाषा की आवश्यकता हुई तो भारत के नेताओं को हिंदी ने ही सहारा दिया। 14 सितंबर 1949 को संविधान सभा वे एकमत से यह निर्णय लिया कि हिंदी की खडी बोली भारत की राजभाषा होगी। हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया।

'हमारी स्वतंत्रता कहां है,
राष्ट्रभाषा जहां है'

लिपि: हिंदी को देवनागरी लिपि में लिखा जाता है। इसे नागरी नाम से भी पुकारा जाता है। देवनागरी में 11 स्वर और 33 व्यंजन होते हैं और इसे बाए से दायें लिखा जाता है।

हिंदी भाषा का स्थिति: आज देश को स्वतंत्र हुए 70 वर्ष से अधिक हो गये है लेकिन हम अपने विचारों को व्यक्त करने के लिए आज भी अंग्रेजी के मोहताज है। यह सब हमारा मानसिक दासता का प्रमाण है।

महानगरों में अंग्रेजी सीखने –सिखाने की दुकानें दिन-प्रति-दिन खुलती जा रही है। हिंदी के लिए सर्वत्र उपेक्षा का वातावरण बनता जा रहा है। हमें हमारा चिंतन बदलकर हिंदी को परम अनिवार्य घोषित करना होगा। समस्त व्यावहारिक काम हिंदी में किए जाने होंगे।

'हम सबका अभिमान है हिंदी
भारत देश की शान है हिंदी।'

विश्व स्तर पर जब अटल बिहारी वाजपेयी ने संयुक्त राष्ट्र संघ में अपना भाषण हिंदी में दिया था तो विश्व स्तंब्ध रह गया था। उस समय संपूर्ण विश्व ने प्रशंसा की थी। भले ही हमारे यहां लोग हिंदी छोड़ अंग्रेजी की ओर भाग रहे है लेकिन संसार के विश्वविद्यालयों में हिंदी पढ़ने वालों की संख्या बढ़ रही है। अनेक विदेशी छात्र भारत में रहकर हिंदी भाषा पढ़ने के साथ –साथ हिंदी पर शोध भी करते हैं।

वैसे यदि पिछले कुछ वर्षों का आकलन करें तो आज हिंदी की बेहतर स्थिति नजर आती है। सुखद पहलू यह है कि यह आम बोलचाल की भाषा बन गयी है। उत्तर भारत को छोड़ दें तो आज बहुत राज्यों में हिंदी बोलने और समझने वालों कि संख्या बराबर है। देश के अधिकांश राज्यों में हिंदी भाषा को प्राथमिक शिक्षा तक अनिवार्य कर दिया गया है। पिछले पचास वर्षों में आम बोलचाल की भाषा में हिंदी का प्रचार बढ़ा है लेकिन सत्ता और शासन के कार्यों में अंग्रेजी का दबदबा आज भी कायम है।

भारतेन्दु हरिशचन्द्र ने स्पष्ट कहा है -

'निज भाषा उन्नित अहे, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा-ज्ञान के, मिटत न हिय को'।

देश का उन्नित हमारा राष्ट्रभाषा की उन्नित में है। हिंदी की उन्नित के लिए हम हमारा शिक्षा पद्धति और व्यवस्था दोनों को बदलना पडेगा। पहले से लेकर आठवीं कक्षा तक की शिक्षा में हिंदी का प्रयोग अनिवार्य है। विज्ञान, भूगौल जैसे विषयों की पढ़ाई हिंदी में ही करने का प्रावधान करना होगा। प्राथमिक शिक्षा के बाद ही अंग्रेजी को एक अतिरिक्त भाषा के रूप में पढ़ाया जाना चाहिए। ऐसा करने से जब बच्चा अपनी प्राथमिक शिक्षा अपनी भाषा में प्राप्त करेगा तो उस भाषा के प्रति उसका मोह और सम्मान आजीवन बना रहेगा। कार्यालयों में और शासन व्यवस्था में भी हिंदी का उपयोग को बढ़ाना पडेगा।

'हिंदी अपनाओ, देश का मान बढ़ाओ'

शेष पृष्ठ 36 पर

हिंदी समस्त भारतवासियों की मातृभाषा है

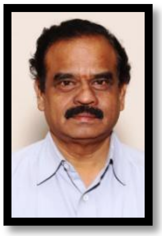

उत्तर भारत के अधिकतर लोग हिंदी बोलते हैं, दक्षिण में विभिन्न भाषाएं बोली जाती हैं। वर्तमान भारत में देखा जाए तो हिंदी के अतिरिक्त अन्य कोई भाषा नहीं है जिसे देश के सभी नागरिक बोलते और समझते हों। हमारे राजनीतिज्ञों ने स्वतंत्रता संग्राम के समय ही हिंदी भाषा की आवश्यकता को महसूस कर लिया था और इसी कारण उन्होंने हिंदी को स्वतंत्रता संग्राम सेनानियों के लिए संपर्क भाषा के तौर पर प्रोत्साहित किया।

अंग्रेजी एक विदेशी भाषा है। इस भाषा का साहित्य विदेशी परिस्थितियों को ध्यान में रखकर लिखा गया है। जबकि हिंदी भारत के बहुसंख्यक लोगों की मातृभाषा है। यह अहिंदी भाषी भारतीयों के लिए भी उतनी अपरिचित भाषा नहीं है जितनी अंग्रेजी और सभी भारतीयों के लिए इसे राष्ट्रभाषा के रूप में स्वीकार करना बहुत आसान है। एक प्रकार से यह समस्त भारतवासियों की मातृभाषा है। जिस व्यक्ति को अपनी मातृभाषा में शिक्षा ग्रहण करने और अपने विचार व्यक्त करने का अवसर मिलता है वही अपनी प्रतिभा के साथ न्याय कर पाता है। यदि शिक्षा का माध्यम हिंदी हो तो अवश्य ही भारतीय छात्रों की प्रतिभा निखर कर सामने आएगी। हम नौकरी देने वाले तभी बन सकते है जब हिंदी को शिक्षा का माध्यम बनाएं। जिन देशों ने अपनी भाषा को सम्मान दिया उन्होंने विश्व को अनगिनत आविष्कारों के उपहार दिए। उदाहरण के लिए जापान और जर्मनी देशों में उनकी भाषा में ही सब कामकाज, पढ़ाई आदि होती है इसलिए वह अग्र राष्ट्रों के साथ खडे हुए हैं।

हिंदी संवैधानिक रूप से भारत की प्रथम राजभाषा है 14 सितंबर 1949 को हिंदी को भारत की राजभाषा घोषित किया गया। 26 जनवरी 1950 को भारत का अपना संविधान बना। हिंदी को राजभाषा का दर्जा दिया गया। यह मानकर कि धीरे-धीरे हिंदी अंग्रेजी का स्थान ले लेगी। किंतु राजनैतिक कारणों से ऐसा नहीं हो सका। कब होगा, इससे जानके के लिए पूरा देश इंतजार कर रहा है।

भारत और विदेशों में 60 करोड़ से अधिक लोग हिंदी बोलते, पढ़ते और लिखते हैं। फिजी, मारिशस, गयाना, सूरिनाम के अधिकतर और नेपाल के कुछ लोग हिंदी बोलते हैं। हिंदी राष्ट्रभाषा, संपर्क भाषा, जनभाषा के सोपानों को पारकर विश्व भाषा बनने की ओर अग्रसर है। हिंदी भाषा का अध्ययन विश्व के कई विश्वविद्यालयों में किया जा रहा है।

भारत वर्ष को प्रगति के मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए, सभी भारतवासियों को हिंदी सीखनी चाहिए, तभी भारत देश कश्मीर से लेकर कन्याकुमारी तक एक ही भाषा के सूत्र से जुड़ जाएगा।

हिंदी देश की राष्ट्रभाषा का अधिकारिक दर्जा पाने की एक मात्र दावेदार है और यह सम्मान उसको मिलना ही चाहिए क्योंकि हिंदी में वह सामर्थ्य हैं। 'हिंदी' भारत के सभी लोगों को जोड़ने वाली एक मात्र भाषा है। हिंदी ही भारत को एक सूत्र में बांधकर रख सकती है।

जय हिंदी – जय जय हिंदी -जय हिंदी

आर. मारुति राव
वरि. अभियंता ग्रेड-2
क्यूसीएल

पृष्ठ 35 से जारी

निष्कर्ष: हिंदी भाषा राष्ट्र की एकता, अखंडता तथा विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। हिंदी भाषा से धार्मिक तथा सांस्कृतिक एकता बढती है। यह स्वतंत्र और समृद्ध राष्ट्र के लिए आवश्यक है। प्रमुख कवि श्री सुमित्रा नंदन पंत ने कहा' हिंदी हमारे राष्ट्र की अभिव्यक्ति का सरलतम स्त्रोत है'। हिंदी हमारी मातृभाषा है, मात्र एक भाषा नहीं। इसलिए हिंदी का उपयोग हर रोज करें और सभी कार्यालय का काम भी हिंदी में करें और हिंदी की उन्नति को और बढ़ाएं।

के उदय चन्द्रिका
उप प्रबंधक, एचआरएम

बान गंगा

बिहार की लोक कथा

बहुत पुराने समय में बिहार में एक गरीब आदमी था वह अपनी बेटी के साथ रहता था। उसकी बेटी न केवल सुंदर थी, बल्कि बहुत ही चतुर थी। उसका नाम मैनासुन्दरी था।एक बार पूर्णिमा की रात जब वह योग कर रही थी उसने एक युवक को जल्दबाजी में जाते हुए देखा। यह देखकरमैनासुन्दरी को बहुत ही आश्चर्य हुआ और उसने युवक को रोका और पूछा कि वह इतनी जल्दी में क्यों है। युवक ने कहा कि उसके पास बर्बाद करने का समय नहीं है, क्योंकि उसे गंगा नदी तक पहुंचना है और पूर्ण चंद्रमा के शुभ समय में गंगा नदी में स्नान करना है। मैनासुन्दरी ने कहा, वह समय पर नदी तक नहीं पहुंच सकता, क्योंकि नदी बहुत दूर है। युवक निराश हो गया, लेकिन उसने कहा कि वह कोशिश करना चाहता है। मैनासुन्दरी ने उससे कहा, 'अगर गंगा में स्नान करना आपके लिए इतना मायने रखता है तो आप मुझ पर भरोसा कीजिए'।मैनासुन्दरी ने कहा की सामने सूअर रहते हैं और पास के गड्ढे में पानी है। आप वहाँ स्नान कीजिए। अगर आपको विश्वास है तो गंगा मैया आपकी इच्छा जरूर पूरी करेंगी। उस युवक ने कहा की उसका नाम श्रीपाल है और ऐसा कह कर वो उस गड्ढे के पास गया। उसने देखा की वो गड्ढा कीचड़ से भरा हुआ था।लेकिन श्रीपाल पूर्ण विश्वास के साथ गड्ढे में कूदा और जब वह ऊपर आया, तो उसके पूरे शरीर पर सोने के आभूषण थे। मैनासुन्दरी ने उसे फिर से डुबकी लगाने के लिए कहा, जब श्रीपाल ने फिर से डुबकी लगाई तो इस बार उसका पूरा शरीर कीचड़ से लथपथ था। मैनासुन्दरी ने श्रीपाल से कहा की अगर आपका विश्वास अडिग है तो हर समय शुभ होता है। मैनासुन्दरी की चतुराई देख कर श्रीपाल को उस से प्रेम हो गया।

श्रीपाल के बार बार आग्रह करने पर मैनासुन्दरी के पिताजी श्रीपाल के साथ मैनासुन्दरी का विवाह करने के लिए तैयार हो गए। मैनासुन्दरी ने चुपके से श्रीपाल से कहा कि, अगर उसके पिता कोई दहेज की बात करते हैं तो उसे कुछ भी स्वीकार नहीं करना है, लेकिन एक विशेष गाय, एक विशेष सुअर और एक विशेष तोते की मांग करनी है। यद्यपि श्रीपाल यह सुनकर चकित था, लेकिनउसने ऐसा ही किया। मैनासुन्दरी ने श्रीपाल को बताया की गाय एक साधारण गाय नहीं है, हम जो कुछ भी मांगते हैं वह दे देती है।सुअर भी कोई आम सूअर नहीं है और यह बड़ी आसानी से कोई भी मेहनत का काम कर सकता है। तोता भी एक सामान्य तोता नहीं है, यह इंद्र की सभा में जासूसी करता है और मैनासुन्दरी को समय पर चेतावनी दे देता है।

यह दंपति विवाह के बाद खुशी से रहने लगे। एक दिन तोता रोते हुए आया और उसने मैनासुन्दरी को बताया की भगवान इंद्र ने उस वर्ष केवल बंजर भूमि पर बारिश भेजने की योजना बनाई है। मैनासुन्दरी ने सुअर का आदेश दिया कि उसके वह साथियों की सहायता से बंजर भूमि पर जुताई करे। सुअर ने ऐसा ही किया। फिर मैनासुन्दरी ने गाय को खेत में बीज बोने के लिए कहा। उस वर्ष भगवान इंद्र ने केवल बंजर भूमि पर बारिश की। लेकिन मैनासुन्दरी की बुद्धिमत्ता के कारणउस वर्ष भी बहुत उपज हुई। मैनासुन्दरी और श्रीपाल ने मिलकर उन सभी की मदद की जो आकाल के कारण पीड़ित थे।

इस से नाराज़ होकर देवराज इंद्र ने चूहों की फ़ौज को आदेश दिया की वो जाकर सारीफसल नस्ट कर दे। परन्तु तोते ने फिर से इस बात की अग्रिम सूचना मैनासुन्दरी को दे दी। मैनासुन्दरी और श्रीपाल ने मिलकर बिल्लियों की फ़ौज तैयार की जिसे देख कर चूहे भाग गए।इंद्र ने क्रोधित होकर किसी तरह भी अनाज को नष्ट करने का संकल्प किया। उन्होंने अनाज को खराब करने के लिए गंभीर तूफान भेजने की योजना बनाई।

जब मैनासुन्दरी को इस बात का पता चला तो सूअर को आदेश दिया की वो अपने साथियों के साथ मिल कर एक गुफा बनाये और श्रीपाल से कहा की वोह सारा अनाज इस गुफा में रख दे। तो नतीजा यह हुआ की तूफान तो आया लेकिन अनाज गुफा में पूरी तरह सुरक्षित था। भगवान इंद्र ने मैनासुन्दरी की चतुरता के आगे हार मान ली।

वह गड्ढा जिसका नाम बान गंगा है,गुफा और दीवार अभी भी बिहार के राजगीर में है और हमें इस बात की याद दिलाते हैं की हमें अपने ऊपर विश्वास है तो किसी भीमहान शक्ति से लड़ सकते हैं और जीत भी जीत सकते हैं।

एकता जैन
धर्मपत्नी निशांक कुमार जैन
वरिष्ठ प्रबंधक
टाइटेनियम

बुढ़िया की सीख

शिवाजी महाराज अक्सर अपनी प्रजा का हाल जानने के लिए रात्रि के प्रथम प्रहर में वेश बदल कर अपने राज्य में घुमा करते थे और आम जनो से बातें करते थे।

एक बार यूँ ही घूमते घूमते उनका गला सूखने लगा। आस पास पानी की खोज में नजर घुमाई तो एक झोपडी से रौशनी आती दिखी। शिवाजी महाराज उस झोपडी की तरफ चल पड़े। शिवाजी महाराज ने दस्तक दे कर कहा "कोई है।"

"अन्दर आ जाओ, दरवाजा खुला है।" अन्दर से आवाज आई।

झोपड़ी में एक बूढी माँ खाना बना रही थी।

"प्यास लगी है, क्या थोड़ा पानी मिलेगा।" शिवाजी ने आदर से पूछा।

"हाँ।।हाँ। खिचड़ी बनाई है थोड़ी खा कर सुस्ता भी लो।" बूढी माँ ने बड़े प्यार से आग्रह किया।

शिवाजी उसका प्यार भरा आग्रह ठुकरा न पाए और खिचड़ी खाने बैठ गए।

उसने थाली में गर्म-गर्म खिचड़ी परोस कर शिवाजी के सामने रख दी। शिवाजी ने खिचड़ी के बीच में हाथ डाला और गरम लगने से हाथ खीच लिया।

यह देख कर बुडिया हंस कर बोली " तुने भी वही गलती की जो मेरा शिवबा करता है।"

यह सुन कर शिवाजी चौक गए। " मैं कुछ समझा नहीं माँ। " उन्होंने पूछा।

"एक बात याद रखना" बुढिया ने समझाने के अंदाज में कहा "खिचड़ी पहले किनारे से ठंडी होती है, इसलिए उसे किनारे से थोड़ा थोड़ा खाना चाहिए।" फिर साँस ले कर आगे बोली "वेसे ही बीच के किलों कि सुरक्षा ज्यादा मजबूत होती है इसलिए पहले बाहर के छोटे छोटे किलों को जीतना चाहिए फिर अन्दर के किले खुद ही नियंत्रण में आ जाते है।"

बुढिया के मुहं से युद्ध निति की बाते सुनकर शिवाजी ने आदर से उनके पैर छुए और अपने असली रूप में आ गए।

बुढिया से मिली सीख उन्होंने गांठ बांध ली और उसका अनुसरण कर कई अजेय किले जेसे रायगड, सिंघ गड आदि पर विजय प्राप्त की और अन्ततः अपना साम्राज्य स्थापित किया।

दीपाली निगुड़कर
धर्मपत्नी रोहित निगुड़कर
वरिष्ठ प्रबंधक
वित्त एवं लेखा

मिधानि राजभाषा गरिमा पुरस्कार

दि. 08 अक्तूबर को हिंदी मसोत्सव-2018 के पुरस्कार वितरण एवं समापन कार्यक्रम में मसोत्सव के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में उत्कृष्ट प्रदर्शन कर पर मेल्ट शॉप को " मिधानि राजभाषा गरिमा पुरस्कार" से सम्मानित किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि रुद्रनाथ मिश्र, सहायक महाप्रबंधक, राजभाषा, एन एम डी सी, नाबार्ड के उप महाप्रबंधक, राजभाषा (से.नि.) अब्दुल हामिद खान, विशिष्ट अतिथि और उद्यम के निदेशक वित्त संजीव सिंघल के कर कमलों से विजेता टीम को रोलिंग ट्रॉफी प्रदान की गई। मासोत्सव के दौरान मिधानि के कर्मचारियों के लिए गायन, निबंध लेखन, वाक्, पीपीटी प्रस्तुति, शब्दावली व टिप्पणी लेखन, नाटक प्रस्तति, प्रश्नमंच तथा अंत्याक्षरी प्रतियोगिताएं आयोजित की गई थी।

किसका मुख देखना अशुभ है ?

अगर कोई काम ठीक से नहीं होता है या किसी का दिन ठीक नहीं जा रहा हो तो आम तौर पर हम में से कई लोगों को एक प्रकार की भावना होती है कि " सुबह-सुबह मैंने न जाने किसका मुँह देख लिया?" कुछ ऐसी ही एक घटना घटी, एक सास और बहू के बीच में।

एक गाँव में एक परिवार रहता था । सास अपनी बहू से हमेशा चिढ़ती थी और सुबह-सुबह उसके चेहरे को देखना मनहूस मानती थी। बहू पर हमेशा तानों की बौछार किया करती थी। किसी भी कारण से, कोई भी काम बिगड़ जाता तो सारा दोष बिचारी बहू मथे डाल देती थी। लेकिन बेचारी बहू हमेशा चुपचाप परिवार की सेवा में लगी रहती थी और सासु माँ के ताने सुनती रहती थी।

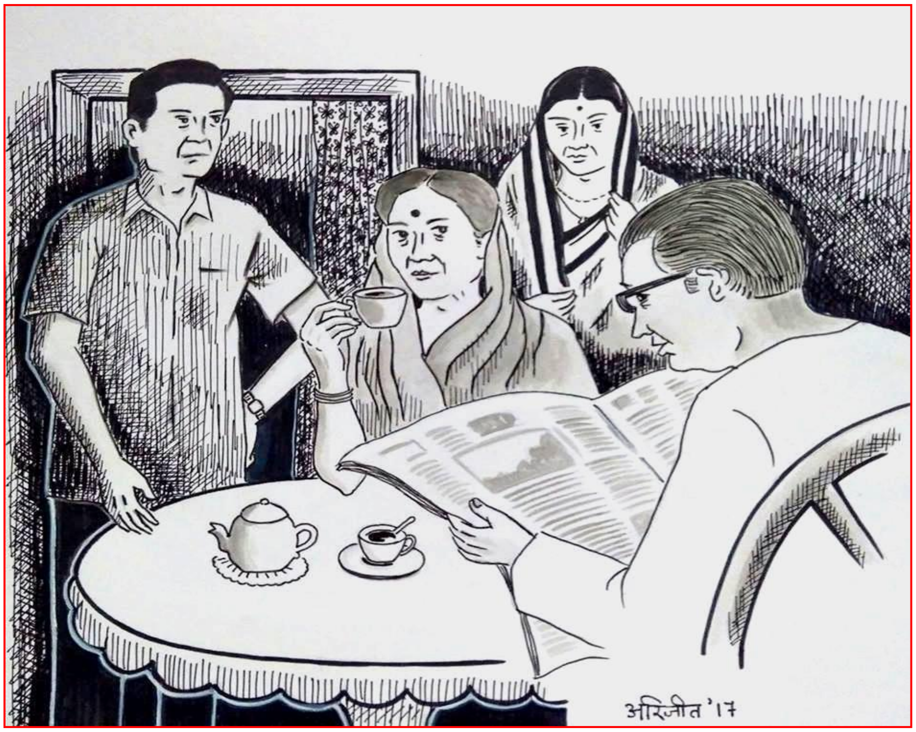

एक दिन सास और ससुर दोनों चार-धाम यात्रा पर जाने के लिए सोच रहे थे। सारी तैयारी करके एक दिन यात्रा के लिए रवाना होने के लिए बस! घर से निकलने ही वाले थे कि इतने में बहू हड़बडाते हुए, हाफते हुए आई और अपने सास-ससुर को रोकते हुए बोली - " सासु माँ आप अपना दवाइयों का बॉक्स भूल गए थे, वही देने आई थी ।" बहू के टोकने से सासु माँ के गुस्से का कोई ठिकाना नहीं था।।।। बहू की तरफ गुस्से से देखते कुछ बोलने ही वाली थी कि।।। इतने में ससुर जी अपनी पत्नी से कह उठे - "अरे भागवान अब जाने भी दो छोड़ दो गुस्सा, ट्रेन का समय हो रहा है जल्दी से चलो कहीं ट्रेन छूट न जाए।"

रेल्वे स्टेशन पहुंचने पर पता चल की ट्रेन पाँच मिनट पहले ही छूट गई है। इसी बात पर दोनों बूढ़ा-बूढ़ी परेशान होकर दंग रह गए। इतने में सासु माँ को बहू के टोकने की बात याद आई। घर वापस आने पर सास ने बहू को इतना खरा-खोटी सुनाया कि बेचारी बहू का रो-रो के बुरा हाल हो गया।

अगले दिन सुबह अख़बार में खबर छपी मिली कि जिस ट्रेन से सास- ससुर चार- धाम यात्रा के लिए रवाना होने वाले थे उस ट्रेन का भयंकर एक्सिडेंट हो गया है और कई लोगों की मौत भी हो गई है। ये खबर पढ़ने के बाद सास और ससुर तो एक दम से सदमें की हालत में पहुंच गए। सदमें से बाहर आ कर ससुर जी ने कहा - " देखा भागवान, उस दिन बहू के टोक ने की वजह से ही हमें देरी हुई थी और ट्रेन छूट गयी थी। आज हम बच गए हैं। अपने परिवार के साथ हैं। तुम हो के उसको देखना और उसके टोकने को मनहूस मानती रहती हो। दरअसल वो मनहूस नहीं है, हमें और इस घर को संभालने वाली लक्ष्मी है। यह बात सुनते ही सासु को अपनी गलती का एहसास हुआ और आंखो से आँसू बहने लगे। थोड़ी देर बाद अपनी बहू को बुलाकर अपने गले से लगाया और अपनी गलती के लिए माफी मांगी। और, उसके बाद कभी भी सास ने न तो अपनी बहू के चेहरे को मनहूस माना और ना ही उसे कभी ताने मारे। तब से सारे घर वाले सुख शांति से जीने लगे।

बी.रमा मल्लिका
कनिष्ठ सहायक-बी
क्रय विभाग

माचिस की एक तिली

बुजुर्ग व्यक्ति के पैर छूकर पापा ने आशीर्वाद लिया और कहा - 'चलता हूँ मास्टरजी, फिर आऊंगा। आप जल्दी ठीक हो जाइए।'
बुजुर्ग व्यक्ति ने मेरी ओर देखकर मुस्कुराते हुए कहा – 'फिर से आना। आना जरूर!'
हम लोगों को अलविदा कहने मास्टरजी की बेटी घर के दरवाजे तक आई। हमें विदाई देते समय वह भी मुस्कुरा रही थी।
बाहर आने के बाद मैंने पापा से पूछा – 'क्या यह बुजुर्ग व्यक्ति वही है जिनकी चर्चा आप हमेशा करते हैं? आपने बताया था कि आपके लेखक होने में आपके मास्टरजी का बहुत बड़ा योगदान है। क्या यही वो मास्टरजी हैं?
पापा के चहरे पर बालकों-सी मुस्कान थी, उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा – 'बड़ी मजेदार कहानी है, शायद तुम समझ पाओ!
मैं उछल पड़ा। मैंने कहा - 'मजेदार कहानी ! सुनाइए न पापा। मैं समझने की कोशिश करूंगा। '
पापा की कहानियां बड़ी मजेदार होती हैं। पापा सुनाते भी बड़े मजे से। मुझे बड़ों की बाते कुछ-कुछ समझमें आने लगी थीं। मैं उतना बड़ा हो चुका था।
पापा ने कहा - ' मैं उस समय तुम्हारे रमेश भैया जितना बड़ा था।'
रमेश भैया हमारे पड़ोस में रहते थे। कॉलेज में पढ़ते थे।
'मुझे बात-बात पर गुस्सा आता था। 'यह सुनते ही मैं आश्चर्यचकित हो गया क्योंकि मैंने कभी पापा को गुस्से में नहीं देखा।

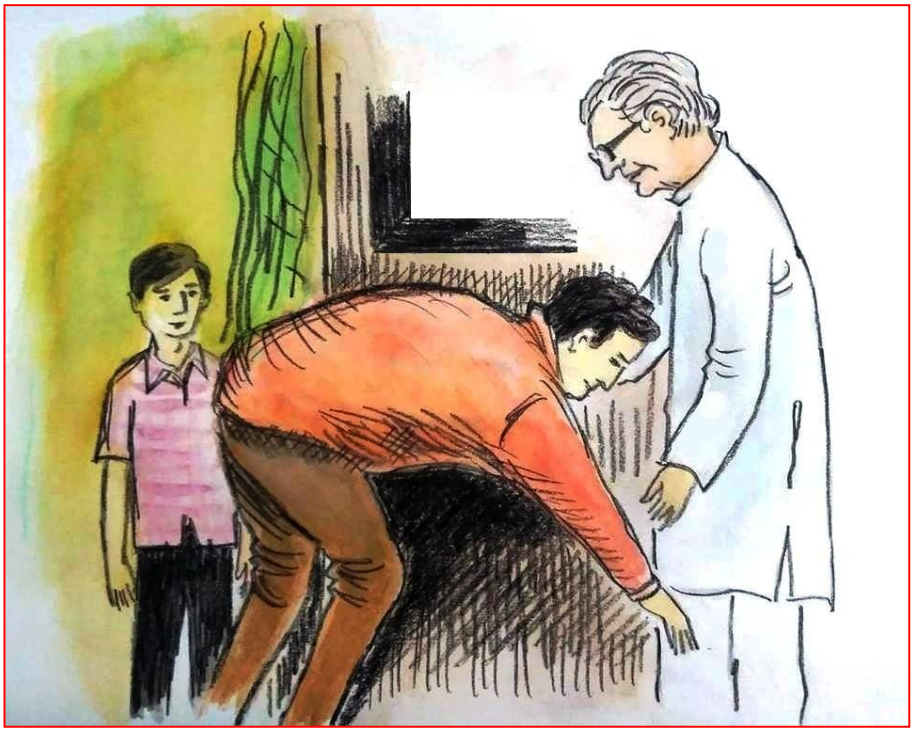

' मगर मेरा गुस्सा बिना किसी कारण के नहीं होता था। कभी-कभी मैं गुस्से में अपना आपा खो जाता था। उस समय मैं कॉलेज में पढ़ता था। एक बार हमारे कॉलेज में स्टुडेंट्स के बीच हाथा-पाई हुई। हाथा-पाई समझते हो न। '
मैंने कहा –' मेरे और दीदी के बीच होती है, वही न? ' ।
पापा हल्के से मुस्कुराए। कहा – हाँ-हाँ, कुछ उसी तरह। मैं सीधे-सीधे उसमें शामिल नहीं था। लेकिन उसके होने के पीछे मेरा हाथ जरूर था।' पाप कहते जा रहे थे। हम दोनों चलते-चलते एक पेड़ के नीचे एक बड़े पत्थर पर बैठ गए।
पापा मुझे समझाते हुए कहने लगे - ' गुस्से से मेरा ही नुकसान हो रहा था। कभी-कभी, मुझे गुस्सा इस कदर आता था, मानो नदी में बाढ़ आई हो और उस बाढ़ को संभालने की शक्ति, उस समय मुझमें नहीं थी।
पापा कुछ देर चुप हो गए। शायद पांच सेकेंड के लिए। फिर वे कहने लगे -
'कॉलेज में हुई हाथा-पाई के दूसरे दिन प्रिंसिपल ने मुझे अपने ऑफिस में बुलाया। मैं डर गया। मुझे लगा, प्रिंसिपल सर मुझे कॉलेज से रेस्टिकेट करेंगे। सर, कफी गंभीर व्यक्ति थे। मैं उनके ऑफिस में गया। डर के कारण मेरे पैर काँप रहे थे। वे उस समय कुछ काम कर रहे थे। हाथ के इशारे से मुझे बैठने के लिए कहा। मैंने उनके टेबल के सामने वाली कुर्सी धीरे-से खींची और बैठ गया। अपना काम खत्म करके सर थोड़ी देर चुप बैठे रहे। शायद पांच से दस सेकेंड तक। उन्होंने मेरी ओर सीधे देखा। उनकी नज़र कफी तेज थी। उनकी नज़रें मेरी आंखों में चभीं। उनकी ओर मैं अपनी आंखें नहीं उठा पाया। '

प्रिंसिपल सर मेरी ओर गौर से देखते हुए कहा, पिछले वर्ष भाषण प्रतियोगिता में तुमने ही दूसरा स्थान हासिल किया था? '

मैंने हकलाते हुए जवाब दिया – हां सर।' मैं इस सवाल के लिए बिलकुल तैयार नहीं था।

सर ने फिर कहा, बहुत गुस्सा भरा है तुममें। मैंने देखा है। उस दिन जब तुम लोगों ने मुझे घेर लिया था। मैंने देखा था, तुम्हारी आंखों में, आग उगलता हुआ गुस्सा।'

मैंने पापा रोकते हुए कहा - 'पापा, आपने प्रिंसिपल को घेर लिया था।' मेरे पापा ऐसा कर ही नहीं सकते। मुझे तो विश्वास ही नहीं हो रहा था।

पाप हंसने लगे।

पापा आगे बताने लगे – प्रिंसिपल सर ने माचिस की एक तिलिया जलाई। वह तिली कुछ देर में बुझ गई। सर ने कहा, अपना गुस्सा भी इस तिली जैसा होता है। यदि इसका उपयोग सही दिशा में नहीं होगा तो वह हमें जलाकर राख कर सकता है। यह कहते हुए उन्होंने

ऑफिस से बाहर आने पर मेरे जान में जान आई।

उस दिन के बाद मेरी ज़िंदगी बदल गई। मुझे जब भी गुस्सा आता था, मैं सर की दी हुई डायरी में लिखने लगा। मुझे गुस्सा आने पर बहती धारा की तरह विचार मन में आते थे। लेकिन मैं शुरु में कुछ लिख नहीं पाता था। एक शब्द भी नहीं। मगर दिलचस्प बात यह थी कि मेरा गुस्सा कम जाया करता था। धीरे-धीरे मेरा गुस्सा कम होने लगा, सिर ठंडा होने लगा और मेरी कलम से शब्द निकलने लगे। शुरु में मैं कुछ भी उल्टा-सीधा लगा। लेकिन लिखना बंद नहीं किया। धीरे-धीरे मेरा वही उल्टा-सीधा लेखन एक अर्थवान रूप लेने लगा। चरित्र गढ़ने लगे। जब भी मुझे गुस्सा आता था, मैं लिखने लगा और लिखता चला गया। यह सिलसिला अभी तक जारी है। मेरा लेखन रुका नहीं है।

एक और तिली जलाई। उससे उन्होंने उनके टेबल पर रखी मोम जलाई।

सर ने कहा, गुस्सा रहना कोई बुरी बात नहीं है। उसका सही उपयोग करने आना चाहिए। मैं चौक गया। मुझे तब तक उस तरह से किसी ने नहीं समझाया था। और, आजतक भी किसी ने नहीं समझाया। समझाने की जरुरत ही नहीं पड़ी। '

सर ने फिर से कहा – अब से एक काम करो, यह लो, इसे अपने पास रखो कहते हुए उन्होंने मेरी ओर एक डायरी बढ़ाई और कहा – जब भी तुम्हें गुस्सा आए, उसका कारण इसमें लिखते जाओ।'

'क्या लिखूं' मैंने भोले मन से पूछा।'

सर ने कहा - 'वह सब जो तुम्हारे मन में उमड़ता है। गुस्से में होने पर मन में आने वाले विचार। वे सब लिख डालो। समझे ? '

एक और तिली जलाई। उससे उन्होंने उनके टेबल पर रखी मोम जलाई।

सर ने कहा, गुस्सा रहना कोई बुरी बात नहीं है। उसका सही उपयोग करने आना चाहिए। मैं चौक गया। मुझे तब तक उस तरह से किसी ने नहीं समझाया था। और, आजतक भी किसी ने नहीं समझाया। समझाने की जरुरत ही नहीं पड़ी। '

सर ने फिर से कहा – अब से एक काम करो, यह लो, इसे अपने पास रखो कहते हुए उन्होंने मेरी ओर एक डायरी बढ़ाई और कहा – जब भी तुम्हें गुस्सा आए, उसका कारण इसमें लिखते जाओ।'

'क्या लिखूं' मैंने भोले मन से पूछा।'

सर ने कहा - 'वह सब जो तुम्हारे मन में उमड़ता है। गुस्से में होने पर मन में आने वाले विचार। वे सब लिख डालो। समझे ? '

मैंने सर हिलाया।

'अब तुम जाओ। और, जो मैंने तुम्हें अभी बताया है, वह करना जरुर। आगे से मुझे तुम्हारे बारे में कोई शिकायत नहीं चाहिए।'

' जी सर।' कहकर मैं वहां से चला आया। प्रिंसिपल सर के

मैंने सर हिलाया।

'अब तुम जाओ। और, जो मैंने तुम्हें अभी बताया है, वह करना जरुर। आगे से मुझे तुम्हारे बारे में कोई शिकायत नहीं चाहिए।'

' जी सर।' कहकर मैं वहां से चला आया। प्रिंसिपल सर के

पापा बोलता जा रहे थे। मैं मंत्र मुग्ध होकर सुनता रहा था।

मैंने पूछा – मतलब आप लिखते-लिखते लेखक बन गए?

हाँ-हाँ, ऐसे ही हुआ। कभी-कभी यह बात सोचकर मुझे अपने-आप पर आश्चर्य होता है।

यह कहानी सुनकर मुझे भी आश्चर्य हुआ। मैंने सोचते-सोचते पापा से पूछा – अच्छा, इसका मतलब है, आपके वो प्रिंसिपल सर ही हैं जिसे आप मास्टरजी कहते हैं।

'अब समझे, बुद्धु!'

अरिजित बनर्जी
उप प्रबंधक
बोर्ड एवं कपनी मामले

हवाई सफ़र

"आज फिर लेट हो गया।" बुदबुदाता हुआ अमोल कार्यालय में दाखिल हुआ।

सीढ़ियाँ चढ़ कर हॉल मे दाखिल होते ही साहब के चपरासी ने आवाज लगा दी।

"अमोल सर! साहब बुला रहें हैं।"

"अमोल तुम्हें कल एक सेमिनार के लिए दिल्ली जाना है।" साहब ने कहना जारी रखा "सेमिनार हमारे एक महत्वपूर्ण ग्राहक द्वारा आयोजित किया गया है, कोई और नहीं जा सकता, इसलिए तुम्हें ही कल सुबह की फ्लाइट से दिल्ली जाना होगा।"

"जी सर।" अमोल ने हामी भर दी। उसका मन हिलोरें लेने लगा। यह उसका पहला हवाई सफ़र होगा। हवाई सुंदरियाँ, भुने हुए काजू-बादाम बहुत कुछ सुना था अमोल ने हवाई सफ़र के बारे में।

"आज मौका मिला है।" सोचते हुए अमोल खुश हो रहा था।

जो लोग हवाई सफर करते रहते हैं उनसे अमोल ने जरूरी जानकारी एकत्र की। दूसरे दिन सुबह तीन बजे अलार्म से अमोल की आंखे खुली।

"धत्त ! सुबह सात बजे जाने के लिए चार बजे पहुँचो, यह भी कोई बात हुई।" अमोल गुस्से मे बड़बड़ाया। ठीक समय पर अमोल हवाई अड्डे पर था। वहाँ की जगमग देख कर उसकी आंखे चौंधिया गई। "कहाँ रेल्वे स्टेशन और कहाँ हवाई अड्डा कोई मेल ही नहीं है।" अमोल ने मन मे सोचा।

सुरक्षा सबंधी जांच चल रही थी। कई सारी फ्लाइट होने से सभी जांच अधिकारी व्यस्त थे। बहुत देर के बाद अमोल का नंबर आया।

"आपका बोर्डिंग पास दीजिये।" अधिकारी ने हाथ आगे बढ़ा कर कहा ।

अमोल घबरा गया, चकाचौंध को देखते देखते बोर्डिंग पास लेना तो भूल ही गया।

"मै अभी लेकर आता हूँ।" अमोल बदहवास सा बोर्डिंग पास लेने भागा।

इस अफरा तफरी में काफी समय निकल गया। इस दौरान अमोल का नाम दो बार पुकारा जा चुका था।गिरता पड़ता बड़ी मुश्किल से अमोल टर्मिनल पर पहुँच पाया

"गुड मोर्निंग सर!"

"हं ???" अन्दर जाते जाते वह ठिठक कर रुक गया ।उसने वहां खड़ी लड़की को प्रश्नसूचक नजरो से देखा।

"गुड मोर्निंग सर!" उसने फिर मुस्कुरा कर दोहराया।

"गुड मोर्निंग" एक फीकी हंसी हँसता हुआ अमोल अपनी सीट की तरफ बढ़ गया।

अमोल के साथ की सीट पर कोई नकचड़ा अमीरजादा बैठा था। उसके हावभाव से अमोल जान गया की अमोल के कारण उड़ान लेट हो गई है।

कुछ ही देर में विमान ने उडान भर ली, अमोल का जी मचलाने लगा मगर वह किसी तरह खुद को संभाले हुए था।

कुछ ही देर में अल्पाहार की ट्राली आ गई,लोग बोर्डिंग पास देकर चीजे ले रहे थे।

अमोल ने भी अपना पास आगे बढाया ।

"सॉरी सर! आपके टिकेट में फ़ूड शामिल नहीं है।" कह कर लड़की ने पास लौटा दिया।

"यह कितने का है?" अमोल ने सैंडविच के टिन की तरफ इशारा करके पूछा।

“350 रु ” लड़की ने जवाब दिया।
“और यह?” अमोल ने काजू के टिन की तरफ इशारा किया।
“200 रु ” लड़की ने जवाब दिया।
“और।।।।।चाय?”
“150 रु, do you want anything? ” लड़की ने मूह बिचका कर पूछा। अंग्रेजी अमोल की कमजोर कड़ी थी वह और नर्वस हो गया और लगभग हकलाते हुए बोला
“t…t..tea me give ” इतनी तेज तर्रार लड़की से चाय लेने में अमोल के हाथ कापने लगे और थोड़ी चाय पास बैठे अमीरज़ादे के ऊपर गिर गई।
अमोल ने घबरा कर आगे की सीट पकड़ कर उठने कि कोशिश की मगर जल्दी में सीट बेल्ट खोलना रह गया और आगे वाले यात्री की चाय भी हिलने से छलक कर गिर गई।
दोनों उसपर बरस पड़े मैनरलेस, जाहिल, illiterate और भी बहुत कुछ। अमोल की आंखे भर गई वह चुप चाप हाथ जोड़ कर सॉरी बोल कर बैठ गया।
हवाई सफ़र का मजा अब तक हवा में उड़ चुका था, वह अब समझ चूका था कि यह आम लोगो के लिए नहीं है।
पूरे सेमिनार में वह उदास ही रहा, बार बार उसको जहाज की घटनाएं याद आती और वह मन ही मन शर्मिंदा महसूस करने लगता।
सेमिनार ख़त्म होते ही सभी बहार आ गए अमोल ने जेब में रखा रिटर्न टिकट निकाला और गुस्से से अपने बेग में डाल कर रेल्वे स्टेशन की तरफ चल दिया।

स्टेशन पर काफी चहल पहल थी अमोल को महसूस हो रहा था जैसे वह अपनी दुनिया में वापस आ गया हो। अमोल बेंच पर बैठ कर ट्रेन का इंतजार करने लगा।
बेंच के पास ही 10-12 लोगो की टोली बैठी थी। उनका एक नन्हा बच्चा खड़े होने की कोशिश कर रहा था। वह बार बार खड़े होने की कोशिश करता और धम्म से नीचे गिर जाता। उसके गिरते ही सब लोग हंसने लगते , बच्चा भी किलकता और फिर अपने काम में लग जाता। उसे लोगो के हँसने या मजाक उड़ाने की परवाह नहीं थी वह तो बस अपनी ही धुन में मगन था।
आखिरकार डुग डुग करता वह खड़ा हो गया, सब लोग ताली बजाने लगे, वह बच्चा गर्व और ख़ुशी के भाव से सब की और देख रहा था। मानो कह रहा हो, देखो मैंने कर दिखाया।
बच्चे की नजर अमोल की नजर से टकराई, अमोल को उसकी आँखों में विजय की चमक साफ़ दिख रही थी।
कुछ सोचते हुए अमोल ने ट्रेन का टिकट निकाला, और मुस्कुराते हुए उसके तुकडे तुकडे कर दिये। फिर बच्चे के सर पर हाथ फिर कर वह स्टेशन से बाहर आ गया।
बाहर खड़े ऑटो में बैठते हुए अमोल बोला “भाई, हवाई अड्डे चलोगे?”
और अमोल निकल पड़ा खुद को एक और मौका देने के लिए।

रोहित निगुड़कर
वरिष्ठ प्रबंधक
वित्त एवं लेखा

रक्तदान व नेत्र जांच शिविर का आयोजन

हिंदी मासोत्सव-2018 के दौरान उद्यम में लायन्स्स क्लब, बुद्ध पुर्णिमा के सहयोग से रक्तदान व नेत्र जांच शिविर का आयोजन किया गया। शिविर का उद्घाटन उद्यम के अपर महाप्रबंधक (क्रय) के आनंद कुमार ने किया। शिविर के सफल आयोजन में प्रथम उपचार केंद्र के डॉ वीर राजू, वरिष्ठ चिकित्सा अधिकारी तथा डॉ प्रवीण ज्योति, चिकित्सा अधिकारी का सक्रिय सहयोग रहा। शिविर में कर्मचारियों ने उत्साह से भाग लिया। शिविर का प्रचार-प्रसार हिंदी तथा अंग्रेजी में के पोस्टर लगवाकर किया गया।

आप कंपनी का ध्यान रखिए, कंपनी आपका ध्यान रखेगी

मिधानि के 45 वर्ष होने के शुभावसर पर हमें इससे संबंधित कई मधुर स्मृतियाँ स्मरण करनी चाहिए। इस अवसर पर राष्ट्रीय वैज्ञानिक डॉ होमी भाभा और डॉ आर वी तमनकर को भी याद करने की आवश्यकता है। यह राष्ट्रीय महत्व की कंपनी उन्हीं की मानस पुत्री है। उन्होंने राष्ट्रीय सामरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के उद्देश्य से राष्ट्र में ही सामरिक सामग्री का उत्पादन करने और विदेशों पर निर्भरता कम करने के लिए इस कंपनी को खड़ा करने में अथक परिश्रम किया। मुझे याद है कि भारत के पूर्व राष्ट्रपति महामहिम ज्ञानी ज़ैल सिंह, पूर्व प्रधान मंत्री श्री पीवी नरसिंहा राव, पूर्व रक्षा मंत्री - श्री बाबू जगजीवन राम, श्री शिवराज पाटिल, श्री मनोहर परिकर, श्री अरूण जेटली जैसे राष्ट्रीय नेताओं ने मिधानि में विभिन्न कार्यशालाओं और सुविधाओं का शुभारंभ किया है। मिधानि में सन् 1979 के अप्रैल माह में पूर्व रक्षा मंत्री श्री बाबू जगजीवन राम के कर कमलों द्वारा पीएम शॉप के उत्पादन का शुभारंभ किया गया। उसी क्रम में एक बाद एक कर्मशालाओं की स्थापित होती चली गईं। आरंभ से ही मिधानि का स्वभाव रहा है कि मांग को ध्यान में रखते हुए नए-नए प्रयोग करें। नए-नए मिश्र धातु बनाए। इसी स्वभाव का सुफल है - बायो मेडिकल, प्रत्योरोपण, केएएपी, फास्टनर्स, ट्यूब शॉप, कास्टिंग्स, रिंग, फोर्रेजिंग आदि।

मिधानि ने जब पहली बार 100 करोड़ का करोबार किया था मुझे याद है कि कर्मचारियों ने कंपनी में उत्सव मनाया था। वैश्विक बाजार पर अपने-आप को स्थापित करते हुए 100 करोड़ के कारोबार से मिधानि अब 800 करोड़ की कंपनी बन गई है। मिधानि में नियमित अवधि पर उत्पादन सुविधाओं का अद्यतन किया जा रहा है। सन् 2010 से लगातार कंपनी का उन्नयन हो रहा है। विनिर्माण की सुविधाओं का आधुनिकीकरण किया जा रहा है। मिधानि ने आयात पर राष्ट्र की निर्भरता कम करते हुए कट्टिंग मशीन और फर्नेसेस का स्वयं निर्माण किया है। मिधानि का विस्तार भी हो रहा है। मिधानि में ही वाइड प्लेट मिल की स्थापना, रोहतक में आर्मर प्लांट और नेल्लूर में लगभग 3500 करोड़ की लागत से नालको के साथ अल्युमीनियम प्लांट के संयुक्त उद्यम से मिधानि नई उंचाइयाँ छूने की तैयारी कर रही है। इसके अलावा मिधानि बीएचईएल तथा हिंदुस्तान शिप यार्ड (एचएसएल) के साथ मिलकर सबमेरिन निर्माण करने जा रही है। भारत सरकार के निर्देशों के अनुसार मिधानि निर्यात पर ध्यान केंद्रित करने उद्देश्य से दक्षिण एशिया में इकाई की स्थापना करने की योजना बना रही है। यूनियन के साथ संबद्ध होने के कारण मुझे वर्ष 1983, 1987, 1992, 2007 तथा 2017 के लिए किए गए वेज रिविजन का कार्य बड़े कौशल और सूझबूझ से किया गया। इस अवसर पर मुझे यह बताते हुए अत्यंत हर्ष हो रहा है कि कर्मचारियों की विभिन्न समस्याओं को सुलझाने के अलावा हमारे कार्यकाल में कंपनी की बेहतरीन प्रोत्साहन योजनाएं आरंभ की गई। वर्कर एड्यूकेशन कार्यक्रम के अंतर्गत प्रति वर्ष 50-100 कर्मचारियों को कौशल प्रशिक्षण दिया जाता है। जिससे हमारे कर्मचारी अपने ज्ञान का अद्यतन करते रहते हैं। इस अवसर पर मैं बीपीडीएवी स्कूल के प्रबंधन को भी याद करना चाहूंगा। मिधानि के इस स्कूल में पढ़नेवाले हमारे बालक आज विश्व की नामी कंपनियों और संस्थाओं में अपनी नाम बना रहे हैं। अपनी आजीविका कमा रहे हैं। मिधानि का प्रबंधन स्कूल के सभी क्रियाकलापों के सहयोग प्रदान करता है जिसकी वजह से आज हमारे बच्चे रक्षा, चिकित्सा, विज्ञान, प्रबंधन आदि क्षेत्रों को कार्यरत हैं। मैं इस स्कूल की प्रथम प्रधानाध्यापक श्रीमती सीता किरण जी को याद करना चाहूंगा जिनके मार्गदर्शन में स्कूल की शिक्षा पद्धति में भारी परिवर्तन हुए और हमारे बच्चों को इसका लाभ मिला। अतः मैं कहना चाहूंता हूँ कि मिधानि न केवल वैश्विक स्तर की सामग्री का उत्पदान करती है बल्कि उत्तम नागरिकों को तैयार करने का महत्वपूर्ण कार्य करती है।

भले ही कंपनी अब 45 वर्ष की हो रही है, लेकिन कंपनी में अब युवा रक्त प्रवाहित हो रहा है। युवा शक्ति के बल पर अपनी दूसरी पीढ़ी के सहयोग से मिधानि अपनी प्रगति राह पर तेजी से अग्रसर होगी। मैं पूरी तरह से आश्वस्त हूँ कि कंपनी आने वाले समय में श्रेणी ए की कंपनी बनेगी और नवरत्न कंपनी का दर्जा हासिल करेगी। इसी आशा के साथ मैं कहना चाहूंगा कि आप कंपनी का ध्यान रखिए, कंपनी आपका ध्यान रखेगी। सभी मिधानियों को हार्दिक शुभकामनाएँ।

" सिंगल यूज़ प्लास्टिक दूर कीजिए, पर्यावरण को बचाइए "

जय मिधानि, जय हिंद।

बी श्रीहरि
अध्यक्ष
पहचान प्राप्त कर्मचारी संघ
(एम डब्ल्यू एवं एस यू)

आर एवं एम मेकानिकल, इलेक्ट्रिकल विभाग में कार्यरत वरिष्ठ तकनीशियन, के राजय्या, महासचिव, अनुसूचित जाति संघ ने कहा.....

मैं अपने सभी साथी कर्मचारियों को तथा प्रबंधन को कंपनी के 45 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ। मुझे बड़ी खुशी है कि मैं मिधानि जैसी प्रगतिशील कंपनी का हिस्सा हूं। आशा करता हूँ मिधानि इसी तरह दिन दुगनी रात चौगनी तरक्की करे।

मैं, अनुसूचित जाति संघ का महासचिव हूं। मैं इस पद पर आठ वर्षो से महासचिव हूं। मैं अपने संघ के साथियों के प्रति आभारी हूँ कि उन्होंने मुझ पर भरोसा करके इस पद के लिए चुना है। मेरी पूरी कोशिश रहती है कि इस संघ के किसी कर्मचारी या अधिकारी के प्रति कोई अन्याय न हो। मैं हमेशा उनके साथ में खड़ा रहता हूँ। मेरे संघ के कर्मचारी एवं अधिकारीगण हमेशा कंपनी की वृद्धि के लिए अपने सामर्थ्य के अनुसार काम करते रहते हैं। इसी का परिणाम है कि कंपनी आज अच्छे स्तर पर है। इसका विस्तार भी हो रहा है। इस संघ की स्थापना 1984 में हुई थी। किसी कारणवश कर्मचारियों के अधिकारों को प्रबंधन द्वारा अनदेखा किए जाने पर प्रबंधन से बात करके कर्मचारियों की सहायता करने और उत्पादन में किसी प्रकार के व्यवधान उत्पन्न न होने देने के उद्देश्य से इस संघ की स्थापना की गई थी। लगभग 400 कर्मचारी इस संघ में पंजीकृत थे। मैं हमेशा कर्मचारियों के अधिकारों को न्याय दिलाने के लिए प्रबंधन से चर्चा कर बहुत ही कम समय में कर्मचारियों के पक्ष में अनुमोदन प्राप्त करता हूँ। शायद, इसीलिए मैं संघ के पद पर खाफी लंबे समय से काम कर पा रहा हूँ। यह संघ न केवल उद्यम के कर्मचारियों के कल्याण के लिए काम करता है बल्कि समाजिक कार्यों में भी अपना योगदान दे रहा है। इसी क्रम में इस संघ ने प्रबंधन के समक्ष प्रस्ताव रखा था कि अनियमित मजदूर के बच्चों के लिए सीएसआर के अंतर्गत उद्यम के स्कूल बीपीडीएवी स्कूल में बिना किसी फीस के एलकेजी से दसवीं कक्षा तक पढ़ने की सुविधा दी जाए। इस पर प्रबंधन ने अनुमोदन दिया। इस समय 7 बच्चे इस सुविधा का लाभ उठा रहे हैं। संकल्प के माध्यम से यह संघ प्रबंधन के प्रति अपना आभार व्यक्त करता है। मैं चाहता हूँ कि अगली पीढ़ी भी संघ के कार्यों में रूचि लें और कंपनी की प्रगति के लिए, कर्मचारियों की प्रगति के लिए समर्पणता के साथ काम करें।

जय मिधानि, जय हिंद।

आर एवं एम मेकानिकल विभाग में इंजीनियर ग्रेड-I के पद पर कार्यरत एस पांडु, सलाहकार, अन्य पिछड़ा वर्ग संघ ने कहा.....

प्रिय साथियो, आपको और आपके परिवार के सभी सदस्यों को तथा प्रबंधन के प्रत्येक सदस्य को कंपनी के 45 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में हार्दिक शुभकामनाएँ। मैं अपने आप को बड़ा खुलनसीब समझता हूँ कि मुझे राष्ट्रीय स्तर की कंपनी मिधानि में काम करने का मौका मिला। मैंने कंपनी में 1983 में आर्टिसन-ए के पद पर कार्यग्रहण किया था। इस समय मैं इंजीनियर ग्रेड-I हूँ। प्रबंधन ने मुझे कार्य में रहते हुए उच्च शिक्षा के लिए अनुमति दी। मैंने बी.कॉम, एलएलबी तक की पढ़ाई की। इस सहयोग के लिए मैं प्रबंधन के प्रति आभार व्यक्त करना चाहूंगा।

मैं, इस समय अन्य पिछड़ा वर्ग संघ के सलारकार के पद पर हूँ। इससे पहले सन् 2010 से 2013 तक महसचिव और 2016 से 2019 तक अध्यक्ष रहा हूं। मैंने हमेशा कोशिस की है कि अपने संघ के साथियों और कंपनी के सभी कर्मचारियों के साथ मिलजुल कर आगे बढ़े।

मिधानि में संघ की स्थापना सन् 1990 में हुई। तब से अब तक यह संघ न केवल संघ के सदस्यों के लिए बल्कि समाज के कमजोर वर्ग के लिए सामाजिक कार्य कर रहा है। बच्चों को मुफ्त में नोटबुक आदि लेखन सामग्री उपलब्ध कराया जा रहा है। ये लेखन सामग्री एपी स्टेट ट्रेडिंग कॉर्पोरेशन से कम दामों में खरीदी जाती हैं। कंपनी की कुल कर्मचारियों की संख्या में इस संघ इस संघ के कर्मचारी अधिक संख्या में हैं। इस समय 262 कर्मचारी संघ में शामिल हैं।

संघ की कर्मठता के चलते प्रबंधन ने आर्टिसन पद का निर्माण किया था। संघ के सदस्यों ने आग्रह पर प्रबंधन ने वर्ष 2018 में महात्मा ज्योति राव फुले की प्रतिमा भी कंपनी में स्थापित कराई। हम प्रबंधन को आश्वस्त करना चाहते हैं कि यह संघ कंपनी की उन्नति में अपने हमेशा योगतान देता रहेगा। मैं व्यक्तिगत रूप से संघ के सदस्यों और कंपनी के प्रबंधन के प्रति आभार व्यक्त करता हूँ।

मुझे विश्वास है कि देश की सामरिक जरूरतों को पूरा करने वाली यह महानतम कंपनी आनेवाले समय में हितधारकों की अपेक्षाओं पर खरी उतरेगी।

धन्यवाद।

जय मिधानि , जय हिंद।

चित्र-दीर्घा :

हिंदी मासोत्सव 2019 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को संकल्प समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ

एन वी एस पवन कुमार, वित्त विभाग

गायन - प्रथम

अरिजित बनर्जी, वित्त विभाग

गायन - द्वितीय

हरीश देवांगन, क्यूसीएल

शब्दावली - प्रथम

डॉ चंदन हलधर, आर एंड डी

शब्दावली – द्वितीय

राजकुमार साहू, आर&एम (मेक.)-फोर्ज

निबंध लेखन-हिंदी भाषा वर्ग - प्रथम

कपिल कुमार अग्रवाल, वित्त विभाग

पीपीटी-हिंदी भाषी वर्ग-तृतीय

जीएस हरिवर्धन, मेल्ट

पीपीटी-अन्य भाषी वर्ग-तृतीय

रमा मल्लिका, क्रय विभाग

निबंध लेखन-अन्य भाषी वर्ग - तृतीय

रवींद्र तक्षक एवं समूह

नाटक प्रतियोगिता-प्रथम

राजकुमार साहू, आर&एम (मेक.)-फोर्ज तथा
शुभम कुमार, प्रशिक्षु

वाक्-हिंदी भाषी वर्ग-तृतीय

डॉ चंदन हलधर, आर एंड डी तथा
सुरेश रेड्डी, एएमटीएल

वाक्-अन्य भाषी वर्ग- तृतीय

एन वी एस पनव कुमार एवं
समूह

नाटक प्रतियोगिता-तृतीय

निबंध लेखन
अन्य भाषी वर्ग-प्रथम
एन शिल्पा, मा.संसा. विभाग

गायन– तृतीय
सिंधु माधुरी,
वित्त विभाग

चित्र-दीर्घा :

हिंदी मासोत्सव 2019 के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को संकल्प समिति की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ

विजय कुमार चौधरी, मु.अमीरुद्दीन, हरिवर्धन,
मेल्ट शॉप

प्रश्नमंच – प्रथम

प्रवीम एस वारद, जी हरि प्रसाथ,
बार एंड वायर

प्रश्नमंच – द्वितीय

वेणु गोपाल स्वामी, एन शिल्पा, उदया श्री,
मा.संसा. विभाग

प्रश्नमंच – तृतीय

प्रतीक शर्मा, अरविंद कुमार, आनंद चारी,
विपणन विभाग

अंत्याक्षरी-प्रथम

एन वी एस पवन कुमार, पी वर्षा, मयूर मेशराम,
वित्त विभाग

अंत्याक्षरी-द्वितीय

एच एस शैलेंद्र, एम रमेश कुमार,
के कृष्ण प्रसाद, ई एम एस विभाग

अंत्याक्षरी-तृतीय

भगवान सिंह मीना,
आर एंड डी

शब्दावली – तृतीय
निबंध लेखन-हिंदी भाषा वर्ग – तृतीय

रवींद्र तक्षक,
इले.मेन्टेनन्स

वाक्-हिंदी भाषी वर्ग-प्रथम
पीपीटी-हिंदी भाषी वर्ग-प्रथम

विजय कुमार चौधरी,
मेल्ट

वाक्-हिंदी भाषी वर्ग-द्वितीय
पीपीटी-हिंदी भाषी वर्ग-द्वितीय
निबंध लेखन-हिंदी भाषा वर्ग - द्वितीय

एन स्रवंति, पी-1, इले.मेन्टेनन्स

निबंध लेखन-अन्य भाषी वर्ग-द्वितीय

उदय चंद्रिका, आर&एम (इले.)-एचआरएम

वाक्-अन्य भाषी वर्ग-प्रथम
पीपीटी-अन्य भाषी वर्ग-द्वितीय

डॉ प्रवीण ज्योति, एफएसी

वाक्-अन्य भाषी वर्ग-द्वितीय
पीपीटी-अन्य भाषी वर्ग-प्रथम

राजभाषा विभाग, गृ ह मंत्रालय द्वारा जारी वार्षिक कार्यक्रम के अनुसार राजभाषा के लक्ष्य

क्र.सं. S.No.	मदें Items	लक्ष्य Target	दायित्व Responsibility
1	**राजभाषा अधिनियम की धारा 3(3) के अंतर्गत प्रपत्र:** सामान्य आदेश (सभी प्रकार के कार्यालय,नियुक्ति, स्थानांतरण,तैनाती,कार्यमुक्ति,स्थायीकरण,क्रय आदि), कार्यालय ज्ञापन, निविदा सूचना, निविदा फार्म, अनुज्ञापत्र, अनुज्ञप्तिपत्र, प्रेस विज्ञप्ति, विज्ञापन, रिपोर्ट, कंपनी की वार्षिक रिपोर्ट,परिपत्र, समझौता, संविदा आदि अनिवार्यत: द्विभाषिक रूप में जारी किया जाए.	100%	हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी
2	सभी मानक प्रपत्र, मैनुअल, कोड, नियम, पत्रशीर्ष, कंपनी से संबंधित सभी प्रकार की प्रदर्शन सामग्री – बैनर, विज्ञापन सामग्री, ब्रोचर, डायरी, कैलेंडर, कार्यालय के भवनों के नाम, परिचय पत्र, पहचान पत्र, नाम पट्ट, एनवलप कवर, कार्यालय के वाहनों पर कंपनी का नाम, उत्पादों पर नाम आदि मदें द्विभाषिक रूप में होने चाहिए.	100%	संबंधित प्रभारी
2	हिंदी में प्राप्त पत्रों के उत्तर हिंदी में देने चाहिए	100%	हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी
3	‘क’ क्षेत्र में स्थित सी जी ओ, उपक्रम & बैंको के साथ हिंदी में पत्राचार: उत्तर प्रदेश, उत्तराखंड, बिहार, झारखंड, मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान, हरयाणा, हिमाचल प्रदेश, संघ शासित प्रदेश- राष्ट्रीय राजधानी दिल्ली, अंडमान & निकोबार द्विप	55%	हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी
4	‘ख’ क्षेत्र में स्थित सी जी ओ, उपक्रम & बैंको के साथ हिंदी में पत्राचार: महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, चंडीगढ़, दमन-दिऊ तथा दादर और नागर हवेली	55%	हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी
5	‘ग’ क्षेत्र में स्थित सी जी ओ, उपक्रम & बैंको के साथ हिंदी में पत्राचार: क्षेत्र ‘क’ और ‘ख’ में शामिल नहीं किए गए सभी राज्य और संघ शासित प्रदेश	55%	हस्ताक्षरकर्ता अधिकारी
6	हिंदी में फाइलों पर टिप्पणी और आंतरिक पत्रचार	30%	प्रस्तुतकर्ता और सभी हस्ताक्षरकर्ता प्राधिकारी
7	सभी प्रकार की प्रशिक्षण सामग्री द्विभाषिक रूप में	100%	आयोजनकर्ता प्रभारी
8	वेब साइट द्विभाषिक रूप में	100%	अई टी प्रभारी
9	हिंदी पुस्तकें और पत्र-पत्रिकाओं की खरीद	बजट का 50%	संबंधित प्रभारी
10	हिंदी भाषा, टंकण और आशुलिपिक प्रशिक्षण	100%	सभी विभागाध्यक्ष नामित कर्मचारियों को कार्यमुक्त करें
11	हिंदी में प्रवीणता और कार्यसाधक ज्ञान प्राप्त सभी कर्मचारियों के लिए हिंदी कार्यशालाओं का आयोजन. इन कार्यशालों का आयोजन इस तरह से किया जाएगा कि ऐसे प्रत्येक कर्मचारी को कम से कम से दो वर्ष में एक बार नामित किया जाएगा.	100%	

मिश्र धातु निगम लिमिटेड के स्वर्णिम भविष्य के निर्मातागण
इन्हीं के नेतृत्व में मिधानि ने अपने 45 वर्ष पूरे किए

डॉ आर वी तम्हनकर, अध्यक्ष
13.05.1974 – 31.07.1975
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
01.08.1975 - 15.09.1979

श्री पी के संडेल, प्रबंध निदेशक
15.09.1979 – 31.07.1981

डॉ एस के गुप्ता, प्रबंध निदेशक
22.01.1982 – 25.01.1984

श्री एस के सिन्हा, प्रबंध निदेशक
05.03.21984 – 18.04.1990
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
19.04.1990 – 31.03.1994

श्री आर के महापात्रा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
31.03.1994 – 31.07.1997

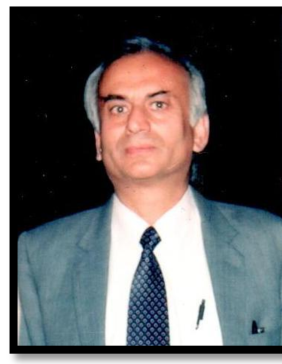

श्री ए के तनेजा
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
12.12.1997 – 26.03.2003

श्री देवासिस चौधरी
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
25.04.2003 – 30.06.2006

श्री एम नारायण राव
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
27.07.2006 – 31.08.2015

डॉ दिनेश कुमार लेखी
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक
01.09.2015

हम हर जगह हैं मौजूद, समुद्र की गहराई से अंतरिक्ष की ऊंचाई तक

MIDHANI
मिश्र धातु
निगम लिमिटेड

• रक्षा • अंतरिक्ष • ऊर्जा के लिए सामग्री